उगनाक दयादवाद

(उपन्यास)



लेखक

सुरेन्द्रझा 'सुमन'

उगनाक दयादवाद

(उपन्यास)

लेखक

श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'

संस्करण—१९८९ ई०
(अगस्त्योदय, भाद्री पूर्णिमा, सं० २०४६ वि०)

मूल्य

अजिल्द सामान्य संस्करण : दस टाका मात्र
सजिल्द पुस्तकालय संस्करण : चौदह टाका मात्र

मुद्रक-प्रकाशक

श्रीभूपेन्द्र झा

मैथिली-मन्दिर, मिथिला प्रेस, राजकुमार गंज, दरभंगा ।

'भूमिक भूमिका की'

व्यञ्जना-अभिव्यञ्जना काव्यक मुख्य तत्त्व कहल जाइछ। उक्ति-वैचित्र्य उद्‌भट-सुभाषितक सूत्र बुझल जाइछ। अनुकृति-अनुवृत्ति नाट्य-रचनाक स्रोत मानल जाइछ। परंच आख्यान-आख्यायिका, कथा-कादम्बरी, उपन्यास-नवलिका, गल्प-जल्प—जे अभिधान दिऔक—ओ तँ इतिवृत्त-घटना, चरित्र-व्यक्तित्व, आवेश-परिवेश, स्थायी-संचारी सभक समन्वयसँ गढ़ल जाइछ।

व्यक्ति यदि समाजसँ कटल रहय, समस्या यदि समाधानसँ हटल रहय, प्रकृति केवल विकृतिसँ भरल रहय अथवा कृति संस्कृति सँ छँटल रहय, तखन ने कथावस्तुक वितान तानल जा सकैछ, ने कथानकक कथ्य तथ्यसँ संपृक्त राखल जा सकैछ।

साहित्य जीवनक दर्पण अवश्य थिक। किन्तु मुहक झाँइ-छाँही बरड़-फुसरी देखबे लेल आइना सामने नहि आनल जाइछ।

सौन्दर्य-श्री ओ लावण्य-कान्ति निहारबोक हेतु संमुखीन कयल जाइछ। व्यक्ति वा समाजमे जँ कोनो दोष-दुर्गुण, उत्तेजना-उद्वेजना छैक तँ ओहो स्पष्ट होअओ, संगहि ओकर निराकरणो रहओ। संगहि यदि सद्गुण-सन्तोष छैक, त्याग उन्मेष छैक तँ ओकरो मन राखल जाय। सत्-असत् क विचार विकारक संचार लेल नहि, परिहारेक लेल प्रवर्तित कयल जाय।

वास्तविकताक भूमि उर्बरा रहितहुँ, यदि ओहिमे कल्पना-गगनक बिन्दुपात नहि हो तँ ओहिसँ किछु उपजा नहि लेल जा सकैछ। तहिना यदि कल्पनाक घनघोर वर्षण वास्तविकताकेँ दहबैत-भसियबैत रहि जाय तँ ओहिमे कोनहु बीज अंकुरितो नहि भए पबैछ। माटि-पानिक सन्तुलने, कल्पना-वास्तविकताक समुचित योजनेँ, खाद्य-आस्वाद्यक रस प्रस्तुत होइछ।

मिथिलाक भूमि उच्चावच कतबहु रहओ, जाति-वर्गक आड़ि-बान्ह कतबहु कोलाकोलीमे बाँट-बखड़ा करओ, परंच ओकर प्राकृतिक समतलताक, आन्तरिक समरसताक खोज भूमिक भूमिकाकेँ प्रशस्ति देबामे, क्षमता रखैछ—ई आस्था बनल रहओ। मिथिला-मैथिलीक साहित्यिक साधना ओकर स्वस्ति-वाचनमे लागल रहओ—यैह काम्य अछि। कथ्यक तथ्य एतबेमे सन्निहित अछि।

—लेखक

—

समर्पण

···जे मिथिलाकेँ 'लघु प्रतिमा भारतक ई' मानैत छथि;

···जे भारतीय संस्कृतिक मञ्जूषामे मिथिलाक योगदानकेँ मूल्यवान् जनैत-जनबैत आयल छथि;

···जे मिथिलामे जन्म ग्रहण कयनिहार मानव मात्रकेँ मैथिल बन्धु बुझैत छथि;

···जे मैथिलीकेँ 'रस-रसना सम मैथिली मिथिला-मानक पूर्ति'क धारणा रखैत छथि;

ओहि सहृदय सुहृद्-वर्गकेँ
सादर, सस्नेह, समर्पित करैत उल्लसित छी।

विनीत—'सुमन'

उगनाक दयादबाद...

··मध्यकालीन विद्यापतिक उगनासँ लए उनैसम शताब्दीक अंतिम सीमा धरि सभक नैहर-सासुर कुटुमैती-पहुनइमे संग पुरनिहार बनल रहलाह अछि ।

···ई-लोकनि तथाकथित उच्च वर्गक सदा संग पुरनिहार अंग बनल, रहल-टिकोरामे निरत, अविरत घरौआकाज सम्हारनिहार रहैत आयल छथि ।

···परंच जेना अनिवार्य पानिओकेँ केओ दाम दऽ कऽ किनैत नहि अछि—किनय चाहितो नहि अछि, तहिना हिनकहु केओ सेवाक मूल्य नहि देबय चाहैछ ।

···एखनुका बँधुआ-मजदूरक परिभाषा जँ ककरहु पर सामाजिक रूपेँ लागू देखब तँ यैह लोकनि शत-प्रतिशत सिद्ध होयता ।

··मोहन मिसर गद्गद स्वरेँ बाजि उठला—आब उगनाक दयादबादमे विद्यापति-शिवसिंहे नहि, विद्या ओ लखिमा सेहो अवतरित भऽ रहलि छथि ।

उगनाक दयादवाद

एक

मधुपुर गाममे, एम्हर आबि जेना किछु दिनसँ विष घोरा गेल हो ! युग-युगसँ शांत निस्तरंग सरोवरमे एकाएक जेना समुद्री ज्वार-भाँटा आबि गेल हो ! एक दिस गाम मध्य डीह-टोलमे बाबू-भैया जुटल छथि, जे एहि उफानकेँ कोना शान्त कयल जाय ? दोसर दिस उतरबारि टोलमे घोल मचल अछि, जे एना कोना अन्यायकेँ चुप-चाप सहल जाय; डाङ उपरसँ पड़ैत रहय और हम सब माथ झुका कऽ से सब कोना सहिते रही ? बाबू-भैया बुझि पड़ैछ, खर-खबासकेँ खढ़ोपातसँ निघिन्न बुझै छथि; तँ हमरो लोकनि देखा देबनि जे हम सब की छी ।

ई सत्य जे जेना पानि जीवनक हेतु अनिवार्य-अपरिहार्य तहिना मैथिल अभिजन-कुलजन, पंडित-पुरहित, घटक-पजियार, मामिलत्ती-तीर्थाटनी बिनु खवासेँ चलनिहार नहि—ससरनिहार नहि । परंच जेना अनिवार्य पानिओंकेँ केओ दाम दऽ कऽ किनैत नहि अछि—किनय चाहितो नहि अछि, तहिना खर-खवासोकेँ केओ सेवाक लेल उचित मूल्य नहि देबय चाहैत छथि । हिनक कर्म थिकनि सेवा करब, हमर धर्म थिक हुनक सेवाक सुख उठायब । हवा-बसातक

सेवा पयबा लेल की कोनो खर्च-बर्च लगैत छेक ? सदासँ हमरा लोकनि संग रहलहुँ, अंग बनल रहलहुँ; आब जे-केओ एहिमे भेद-भाव बढबै छथि, ओ ईश्वरीय नियमक उल्लंघन करैत छथि ।

मध्यकालीन मिथिलाक किछु संस्कार-प्रकार एखनहु कतोक संबोधन-प्रबोधनमे शेष भेटैछ । बाबू-भैया कहने एतय पाँजिपाटि-वाला ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ बुझल जाइत रहल छथि । पछिमा कहने भूमिहार-कर्णेतर कायस्थ बुझल जाइत रहला । बाबुसाहेब पदें महराज लोकनिक खानदान ओ आभिजात्य राजपूत जानल जाइत रहल छथि । पंडित शब्द ब्राह्मणमे रूढ रहल । मौलाना-मौलवी मुस्लिममे ओ साहेब अंग्रेज कोठीवाल लेल आ' पाछाँ हाकिम-हुक्काम लेल प्रचलित भेल । बाबू जर-जमीन्दारसँ आफिस-किरानी धरि चलि पड़ल ।

काज-धाजमे नौआ-बाभन विआह-दानमे प्रयोजनीय मानल गेल तँ छोटका लोक तथाकथित अछोप-हरिजनमे, जन-मजदूरमे प्रच-लित भेल । किन्तु खास कऽ खबास कहि जनिका संबोधित कयल जाइत रहल अछि ओहिमे मुख्यतः धानुक, केंओट, अमात, खतबे सैह सब बहुधा समाहित होइ छथि। एकर अतिरिक्त प्रयोजन पड़ने कुर्मी-कुम्हार नोनिया-मलाह वारी लोकनिसँ सेहो गाहे-ब-गाहे खबासीक काज लेल जाइत रहल, परंच से कतहु-कखनहु विरले, उक्त जाति जकाँ उच्छिष्टभोजी बनि कऽ नहि ।

परंच उच्छिष्टभोजी भऽ कऽ, सच्छूद्र कहा कऽ खास खबास वर्गक लोक, केओ मंडर कापरि कामति राय जे कहबथु मुदा हुनका खबासे कहबा-कहयबामे किछु खासियत बुझल गेल अछि । ई लोकनि तथाकथित उच्च वर्गक सदा संग पुरनिहार अंग बनल, सेवाकर्म टहल-टिकोरामे निरत, अविरत घरौआ काज सम्हारनिहार रहैत आयल छथि । हँ, कखनहु केओ कने सजग-सचेष्ट भेने भंडारी ओ गृहस्थ रूपें गृह प्रबन्ध ओ खेत-खरिहान देखनिहार सेहो होइत रहल छथि ।

मध्यकालीन विद्यापतिक-उगनासँ लए उनैसम शताब्दीक अंतिम बिकौआधरि सभक नैहर-सासुर कुटुमैती-पहुनइमे संग पुरनिहार अंग बनल रहलाह अछि। एखनुका बँधुआ-मजदूरक परिभाषा जँ ककरहुपर सामाजिक रूपेँ लागू देखब तँ यैह लोकनि शत-प्रतिशत सिद्ध होयता। खेत-पथार नहि, घरो-आँगन ककरहु पट्टिअहिमे, गुजर-बसर कर-बाक ब्योंतबाँत गिरहथक संगहि। हुनके खेतकेँ अपन बुझि ओहिमे आँटी पौनिहार, सेर-अढ़ैयापर कमैनी-कमठैनी कयनिहार, जन-बोनिहार रूपेँ खटनिहार, भार-उपहार पहुँचौनिहार यैह सब होइत आयल छथि।

गामक सामाजिक जीवनमे एहिसँ पहिने कोनो बिशेष नोक-झोंक नहि देखल गेल छल। एकाध बेर जन-बोनिहारक संग बोनि बढ़यबा लेल चखचुखो भेल छलैक तँ बीच-बीचमे बाहरोक नेता आबि कऽ जन-मजदूरक हालतिपर भाषणो कऽ गेल छला। बोनि बढ़यबाक जँ आन्दोलनो उठलै तँ घरक बहिया-मालिकक बीच किछु तेना मेलजोल छलैक जे बाहरी जन-बनिहारक कारणें जोत-कोड़-कमठैनी कोनो गृहस्थी कारबारमे किछु बाधा नहि पड़ि सकलैक। खबासेलोकनि घरक टहल-टिकोराक संग खेत-पथारोक काज सम्हारि देल। तेँ जन-परिजन माङ्पर फेर जोर नहि दऽ संचमंच काज धऽ लेलक। परिस्थिति शान्त भऽ गेल।

परंच एहि बेर रंग-बदरंग बुझि पड़ैछ। मूलेमे जेना घून लागि गेल। बुझि पड़ैछ जे शान्त निष्पन्द सरोवरमे ढेपपर ढेप चलाय ओकर स्थिर जलकेँ केओ जेना चंचल कऽ दैछ, तरंगपर तरंग बीचसँ किनार धरि जेना हिला-डोला जाइछ तेना गामक स्थिति डमाडोल भऽ गेल छैक! घटनापर घटना भने कंकड़े-झिटुकीक चोट होइक — गामक सामाजिक सरोवरकेँ तरंगित कऽ देने अछि।

आइसँ मास छबेक पहिने छीतन खबास, जे अपन जाति-पंचा-यतक छड़ीदार कहबैत छथि, हुनक विआहुत कबीला मलेरियामे पड़ि किछु दिन कुनाइन-साबूदाना खाइत-पिबैत अंत कऽ गेलि।

एक टा छोट भाइ तुलसी, जे स्कूलमे भर्ती भऽ गेल छलनि, तकरो देखबाक हिनका छुट्टी नहि । अपने दिन भरि घर-हवेली करथि, रातिमे घर फिरथि तँ केओ गप्पो कयनिहार नहि । भाइसँ एकाध बेर स्कूल-पढ़ाइक गप्प पुछि लेथि । आ' झखैत-खखनैत करौट लेथि ।

अंतमे दोसर सगहीकेँ लऽ कऽ घर बसौलनि । कने चैन भेला । घरवाली कने चेठनिगरि भेटलनि, घर सम्हारि लेलकनि, हवेलीक टहल-टिकोरा सेहो उठा लेलकनि ।

मुदा रधिया छलि कने चिक्कनि-चुनमुनि । नैहर ओकर नामी-गरामी गाममे छलैक । बाप बाबूसाहेबक खास मुहलगुआ खबास छल । पाछाँ ओ ओकरा ट्रेनिंग दऽ कऽ अपन ड्राइवरमे राखि लेल-थिन । यात्रामे जाथि तँ ड्राइवरी संग खबासी सेहो करैनि । ओकर आङनवाली बहुआसिन लोकनिक जर-जलखै बना दैक, साड़ी-आङीमे साबुन लगा दैक । अपनो हुनक पहिरन-ओढ़नसँ चिक्कनि जकाँ रहय । ई तकरहि बेटी, सेहो देखबा-सुनबामे आँखिपर चढ़वा योग । एकर विआहो नेनहिमे भेल छलैक, वर पिलपिलाह सन, देखबा-सुनबामे अनमुनाह । एकबेर ससुरवाससँ जे फिरलि से दोहरा कऽ गेलि नहि ।

तखन बाप छीतनकेँ देखि-सुनि मिलान कऽ पसिंद कयलक । बेटीकेँ एकरहि संग सगाइ कऽ देल । सगही माउगि भऽ कऽ ई चप्फरि भेलि छीतनक तन-मनकेँ जुड़ा गेलि ।

एही बीचक घटना थिकैक, जखन रधिया मइतमाइनसँ बिदा भऽ कऽ अपन टोल फिरैत छलि, निरसू बाबू, अपन कोठलिएसँ पानि दय जयबा ले' कहलथिन । रधिया कने घोघ कयने तेपाइपर लोटा-ग्लास राखि देलकनि । मालिक ने किछु कहलथिन ने सुनलथिन, सहसा हाथ पकड़ि लेलथिन ।

रधिया चोट्टहि हाथ झाड़ि कऽ किछु झनकैत बिदा भेलि ।

ओकर दोसरे दिन छीतन खबास मालिकपर ललकैत पहुँचला— आब के कोना टहल-टिकोरा करय आओत, पेट छैक तँ इज्जतिओ छैक। इज्जति बचतैक तँ पेट बोनिओ कऽकऽ भरि लेत। आब बाबू-भैया जखन ककरो इज्जति लेबापर तुलि गेल छथि तँ अपनो बेइजत होयता। हम चेता जाइ छी।

निरसू बाबू हकबका गेला, 'हम तँ हम तँ' करैत रहि गेला। के सुनैत अछि ? क्रोध चढ़लनि, एना छितनाकेँ बजबाक साहस ! मुदा बेसी बात नहि बढ़ाय चुप लगा गेला। हवेलीक लोक हो-हल्ला सुनि तावत् दोकच्चामे जमा भऽ गेलि ! ककरो मुह तम-तमायल, केओ लजायलि-कठायलि, केओ बात बुझि हँसी दबबैत, कनखी चलबैत।

सात दिन धरि ने खबासीमे छीतन आयल, ने रधिया टहल-टिकोरा करय हवेली गेलि।

दू

गाममे स्कूल छलैक। विद्यार्थीमे अधिकांश तथाकथित बड़का लोकक धिया-पूता पढ़ैत छलनि। अपवादमे अपन छोट भाइ तुलसीकेँ छीतन सेहो नाम लिखा देने छल। ओहो मालिकक बड़का बेटा नन्दकिशोरक संग स्कूल जाय, संगहि पढ़य-लिखय, खेलय-कूदय। परंच घरपर अयलाक बाद नन्दकिशोर जँ कुर्सी तख्तपर बैसय तँ तुलसी नीचाँ खिनहरि--पटियापर। केओ पाहुन-परक अबैक तँ तुलसीएकेँ बाल्टी भरि कऽ नहाबय पड़ैक, धोती खोचि दिअ पड़ैक

ओ दौड़-धूप करय पड़ैक। मन कने हिचकैक परंच जखन दूहू गोटय मैदानमे संग-संग खेलाय, स्कूलने बेंचपर संगहि बैसय-उठय, तखन मन फेर समतलपर आबि जाइक, ऊबर-खाबर भेल मिजाज चिकना जाइक।

एहि बीच स्कूलक फाइनल रिजल्टमे दूहू गोटे पास भेल। परंच तुलसीक स्थान ऊपर ओ नन्दकिशोरक नीचाँ। ओकरा सत्तरि प्रतिशत नंबर भेटलैक आ' हिनका ३७ प्रतिशत। परंच दूहूक घरमे पासक खुसी जे मनौल गेलैक ताहिमे सात-सत्तरिक अन्तर छलैक।

अपन भाउजिके तुलसी जखन पास होयबाक खबरि कहलकै तँ ओ बड़े उत्साहसँ पूरे दू-टाकाक लड्डू-बतासा महावीरजीके चढ़ाय अड़ोस-पड़ोसमे प्रसाद बँटलक। ओहि दिन बाड़ीसँ तिलकोर-पात तोड़ि तरि कऽ तुलसीके आवेश कयलक। छीतन एक टा चट्टी कीनि कऽ आनि देलकै। रेडीमेड कमीज सेहो कीनि देलकै।

ओम्हर निरसू बाबू बेटाक पासक खुशीमे सत्यनारायणक पूजा आयोजित कयने छथि। गाम भरि हकार अड़ोसी-पड़ोसी दोस्त-मित्र कें नौतल गेल छनि। नन्दकिशोर हुलसल-फुलसल अपने आबि संगी तुलसीके नोति गेल। तुलसी सेहो खुशी-खुशी आइ नवका कमीज-पहिरने नोतल-हकारल भऽकऽ गौंआ लोकनिक संग एक किनार लागि जाय बैसल।

पूजा भऽ गेलैक, सबके विनय कऽ कऽ खोऔल-पिऔल गेल। तुलसी प्रतीक्षामे बैसल रहल। एकबेर नन्दकिशोर आबि देखि गेलैक परंच भोज बेरमे एकरा केओ टोकलकैक नहि। ई कातमे दुबकल बैसल रहल।

सब गोटे जखन खा-पी कऽ, पान-सुपारी लऽ कऽ बिदा भऽ गेला, तखन रड़भोज शुरू भेल। केओ एकरो इसारा कयलकै। उठल तँ देखलक, ऍंठ-कूठ लेल घोल मचल अछि। पातक छीना-झपटी चलि रहल अछि। ओहि पाँतीमे एकरो बैसबाक केओ

स्थान देखा देलकै। तुलसी थोड़ेक काल ठकमकाइत रहल। पाछाँ एम्हर-ओम्हर देखि कऽ ओहि ठामसँ चोट्टहि उठिकऽ चलि देलक।

टोल पर फिरल तँ राति आधासँ ऊपर बीति गेल छलैक। सब गामपर निन्न-निःशब्द। इहो अपन ओछौन पर गेल। सीरम मे राखल लोटा उठाय पानि गटगट पीबि पड़ि रहल। निन्न कखन भेलैक से नहि कहि, मुदा प्रात बड़ी देर सँ, भाउजिक कतेक उठौला पर आँखि खोललक।

... ...

किछु दिनक बाद एक गोट छोटछीन घटना सेहो भावनाकेँ खट-खटा देलक। छीतनबाबूक परिवारमे एम्हर आबि कऽ किछु और इजाफा भेल। स्त्री, दू टा नेना एक टा ननकिरबी, एक टा भातिज तँ छलथिने। छोटकी विधवा सारि चन्द्रकला देओरसँ लड़ि-झगड़ि अपन जेठ बहिनिक ओतय पहुँचि गेली। हुनक दुर्दशा सुनि द्रवित भए बहिनोय आश्वासन दैत आश्रय देलथिन। हुनका हेतु कोठिघरा, जाहिमे खालीकोठी ढनढनाइत घर अजबारने छल, खालीकय देलथिन। ओहो बहुत किछु आश्रमक काजमे हाथ बटाय बहिनिक भार हलुका देल। बहिनोयक सुख-सुविधा पहुँचयबामे विशेष जतन राखि अपनाकेँ उपयोगी-अनिवार्य सिद्ध करय लगली।

घरक झाड़-बोहार, ठाँओ-पीढ़ी, नीप-पोत एहि सब काजमे चर-फरि भेलि जहिना ओ बहिनिक पछुलगुआ छली तहिना ओछाओनक झार-बोहार, जलखइ-पनपिआइक इंतिजाम ओ पान-सुपारीसँ डिब्बी-सराइ सजैवाक लूरिमुहेँ ओ बहिन्वेक मुहलगुआ सेहो बनि गेली। ओझाकेँ की चहिअनि, से जेना हुनका बुझले रहनि। किछुए दिनमे ओ नोकर-चाकर सबकेँ अढ़यवामे, खेत-पथारक रोपनि-कमठैनीमे बोनि नपवामे ओ सीधा-संवलक हिसाब रखवामे असल गिरथाइनिक स्थान बना लेलनि।

परंच चन्द्रकलाक सबसँ बेसी नजरि रधियापर रहैछ । रोब-दाबक संग, ईर्ष्याक जेना तरंग ओकरा देखितहिँ हिनका मनमे उठि जाइन। ओहो तहिना हिनका ताना दऽ बैसनि--सुनै छी, अहाँक देओर तँ बड़ सद्द लोक छथि, तखनहु हुनकासँ झगड़ ! हमर महतमाइन सुद्ध लोक, से देखबनि ··· एहिसँ आगाँ ओ किछु बाजलि तँ नहि, मुदा ई कटि कऽ रहि गेली।

एक दिन ओ बहिन्वैक खाट लग तेपाइपर लोटा-गिलास भरि कऽ रखैत, मुसकिआइत पुछलथिन--सुनै छी जे ओझाकेँ सारिक हाथेँ नहि, रधिया खबासिनिक हाथेँ पानि पिउबामे बेसी सोआद अबै छनि।

निरसूबाबू कने स्तब्ध होइत कहलथिन--के कहलक अछि ? स्वाद तँ आब बुझि रहल छिऐ, जखन अहाँक हाथसँ से सब भेटऽ लागल अछि। मुदा से कते दिन, कहिआ धरि, तकरे शंका अछि।

'की हम एतबे दिनमे भारी लागऽ लगलिऐन जे कहिआ धरिक दिन गनऽ लागल छथि' ई कहि ओ मुसकिआइत बिजली जकाँ नजरि छिटकाय चलि देलनि। निरसूबाबू बड़ी काल धरि ओछौनपर पड़ल सारिक कथाक अर्थ लगबैत रहला।

एक दिन रधिआकेँ उचित-विहित सिदहा दैत जखन चन्द्रकला नाप-जोखमे झझुआन तौल कऽ रहल छली तँ दूहूमे बझि गेल। हुनका जँ घरक मालिक-मलिकाइनक संबंधक जोर छलनि तँ एकरो अपन समाङ-बुत्ताक, वयस ओ काज वितकि। तँ ताना दऽ बैसलनि जे, जकरा अपन घरोमे रहबाक जोर नहि रहलै, दोसरा घरमे की बुत्ता देखाओति ?

दूहूमे झोंटाझोंटीक नौअति देखि, डाँटि-डूटि कऽ कहुना झगड़ा टरल।

ओकर बाद पाँच दिन धरि खबास-खबासिनी आयब-जायब फेर बंद कऽ देने छल।

तीन

मिडिल कयलाक बाद नन्दकिशोरकें हाइस्कूलमे नाम लिख-यबाक छनि। निरसूबाबूक विचार जे मधुबनीमे बौआ डेरा लऽ कऽ पढ़थि, संगमे तुलसी सेहो रहनि, टहल-टिकोरा करैत रहतनि आ' अपने पढ़िती रहत। छीतन खबासोक मन छलै जे भाइ पढ़निहार अछि, संग लागि पढ़ि जायत।

परंच तुलसीकें से मंजूर नहि भेलैक। पढ़बा-लिखबाक मन तँ छलै, मुदा खबासी करैत नहि। मनक ठेस ओकर अहमकें ठोकर लगा कऽ बढ़ा देने छलै। ओहि दिन ओ निश्चय कयलक जे —

'मान सहित मरिबो भलो' जे कहल गेल छै से ठीके। एहन जीवन कोन काजक जे डेग-डेग पर अपमानक ठोकर खाइत रहय? एहन पढ़बे लिखबेसँ की जे समाज मे सम्मान नहि दिआ सकय? जाहि नन्दकिशोरकें हम अर्थ बुझा दैत छिऐन, हिसाब जोड़ब सिखा दैत छिऐन, परीक्षामे कने मदति पहुँचाय, ठेलि-ठालि कऽ पास करा दैत छिऐन तकर खवासी करैत हम कोन मुहें स्कूलमे पढ़ि-लिखि सकब? कोना माथ उठा कऽ हम संगी सभक बीच चलि सकब? नहि नहि, एहिसँ नीक जे हम स्कूल-कालेज नहि करब। अरे! स्कूल गेनहि केओ पंडित-ज्ञानी तँ नहि भऽ जाइछ।

धन्नू ठाकुरक बेटा तँ पाँच वर्ष मधुबनी ओगरने छला, कहाँ किछु भेलनि? एन्ट्रेन्समे दू बेर फेल कऽ कऽ घर बैसि गेला। आब महिसिक पीठे पर पाठ पढ़ै छथि। आ माखन लालदासक धिया-पुता घरे पर रहि कऽ मोहन पंडितसँ पढ़ि-लिखि कऽ आइ राजमे मुन्शीगिरी करै छथि, सभ हुनका इज्जति करै छैनि। गाम

अबै छथि तँ यैह सब मिसर ठाकुर अपन गाछी-बिरछी परतौ-पराँतक मिसिल बनैवा ले' हुनका ओतऽ धरनिआ देवा लेल पहुँचैत रहै छथि।

हम पढ़ब अबस्से मुदा खबासी करैत नहि। भूख प्यास वरु सहब, मुदा ऐंठ-कूठ उठायब नहि। जीअब तँ तहिना भऽ कऽ। 'मान विहूना पसू होइ' से पसु भऽ कऽ नहि। ई हमर निश्चय अछि।

छीतन अपन भाइक निश्चयकेँ डिगा नहि सकल। सोचलक केहन बुद्धि छै एकर! पढ़ि लिखि लैत, तखन ई सब सोचैत। घाट पार कऽ लैत तखन नाओकेँ भने ठेलि-ठालि कात लगबैत। जाड़ धरि तँ फाटलो सीड़कसँ काज चलबैत, गर्मी अयने भने ओकरा फेकि दैत। किछु पढ़ि-लिखि गेने बुद्धि थोड़ेक अबैत छैक!

से बुद्धि नहिए एलैक। तुलसी गामहि रहि गेल। किछु दिनक बादे दछिनबारि टोलमे, जाहिमे तथाकथित पिछड़ावर्गक लोक बेसी संख्यामे बसै छला, यादव-कुर्मी-कोइरी लोकनि खेत-पथार रखनिहार छला--अपन धीयापुताकेँ पढ़ेबाक जरूरति बुझि पड़लनि तँ एकटा खानगी चटिसार खोलि कऽ तुलसीकेँ पढ़वै कहलथिन। इहो किछु धिया-पुताकेँ बैसा कऽ खड़ी-भट्ठा धरा देल, वर्णमालाक पोथी आनि, दोनाइ-बिटगरहाँ रटा, हनुमानचलिसा धरि चला चोखा गेल।

आब नेनहि सबसँ हनुमान,-चालीसाक पाठ सुनि, 'भय प्रगट कृपाला दीनदयाला'क प्राती ओ 'रामचन्द्र कृपालु भजमन' कः संध्वा आरती सुनि टोलक बूढ़ा-बूढ़ी मग्न होइत रहै छथि। ओ तुलसीकेँ गुरुजी कहि बजवै छथि, पावनि-तिहारमे नोति आदरसँ खोअवैत-पिअवैत छथि। तुलसीक अपमानाहत हृदय केँ सन्तोष जकाँ एहि टोलक बातावरण मे बुझाइत छैक।

दिन बिसैत गेल। पहिने दूह उखराहा, तीन घंटा भिनसर ओ ३ घंटा साँझमे, चटिसार चलैत छल। परंच जहिया टोलबैयाक प्रयासेँ डिप्टी इन्सपेक्टर स्कूलक मोलाहिजा कऽ छात्रसंख्या देखि प्राइमरी स्कूलकेँ मंजूरी दऽ देलनि, एके उखरा स्कूल चलऽ लागल। एगारहसँ चारि धरि चटिया ढठियाओल जाय लागल।

डीह टोलक मोहन मिसर एक दिन एहि रस्तेँ जाइत छला। स्कूलमे तुलसीकेँ पढ़ौने छलथिन। आब घरे पर रहै छथि। पढ़वाक व्यसन छनि, पुस्तक संग्रह छनि। सामयिक पत्र-पत्रिका डाकसँ मङबैंत रहैत छथि।

तुलसी हुनका प्रणाम कऽ स्कूल देखबाक आग्रह कयलकनि। ओहि दिन तँ अगुताइमे छला, तेँ दोसर दिन अयबाक बचन देलथिन।

....

जहिना ओ कहलथिन, एक दिन पहुँचिओ गेलथिन। स्कूल देखि, नेना सबकेँ किछु पूछि-ताछि प्रसन्नता प्रकट करैत कहलथिन— 'तुलसी! स्कूलक बाद तँ समय बचैत होयतह, साँझमे दु-एक घंटा हमर पुस्तकालयमे समय दऽ सकह तँ हमरा बड़ प्रसन्नता होइत। ओकरा व्यवस्थित कऽ पवितहुँ।' तुलसीक पढ़वाक भूख छलैके, तकर खोराको जुटि जयतैक। ओ गामक किछु सेवो भऽ सकतैक। ई तुरंत स्वीकारि लेल ओ दोसरे दिन, रबिमे स्कूल बंद रहबाक कारणेँ, ओ ओतय पहुँचल।

पंडितजी अपन पोथी-पतरा, कागज-पत्तर दलानक अङनइमे चौकी पर पसारि, रौद लगयबाक उपक्रममे छला। तुलसीकेँ अबैत देखि 'आबह-आबह' कहि विशेष आत्मीयता देखवैत वजला-'भने आबि गेलह। ई असरेस नक्षत्रक रौद थिकैक—एहिमे पोथी सुखा रखने दिबाड़ नहि लगै छै। मुदा पानि-बुन्नीक दिन थिकै, बड़ तर्कता राखऽ पड़ैछ।' पंडितजीक गप्पकेँ ध्यानसँ सुनि तुलसी हुनक संग पूरय लागल। पोथीकेँ झारि-झारि सुखबय लागल।

पंडितजी पहिने सब पोथीके झरबौलनि-पोछबौलनि । एकटा सूची तैआर करबौललि । मासिक-साप्ताहिक जे पत्र अबैत छलनि तकर फाइल लगबौलनि । पोथी माङि कऽ जे लऽ जाइन कदाचिते क्यौ आपस करैन, तेँ ओकरो व्यवस्था लेल एकटा रजिस्टर सेहो तुलसी तैआर कऽ देलकनि । एहिसँ पुस्तक पढ़निहारकेँ सुविधा भेटतनि आ' पुस्तक पचौनिहारकेँ मौका नहि भऽ सकतनि ।

पंडितजीकेँ जहिना व्यवस्थासँ संतोष भेल, तहिना तुलसीकेँ पढ़वाक सामग्री भेटलासँ अलभ्य लाभ भेटलैक । शास्त्रीय पुस्तक तँ तेना भऽ कऽ नहि पढ़ि सकय, परंच नीतिश्लोकक अर्थ बुझय, कोष उनटाय शब्द-संग्रह करय । भाषाक जते पोथी भेटलैक, से सब पढ़ैत गेल । पुरनका पत्र-पत्रिकाक फाइल घरपर लऽ जाय ओहो पढ़ि कऽ समयपर सुनझा देल करनि ।

क्रमश: पंडितजीसँ तुलसौ प्रोत्साहन पाबि हिन्दी-विशारदक परीक्षा देलक, उत्तीर्णतो प्राप्त कयलक ।

एक समय पण्डितजीक पुस्तकालयक वार्षिकोत्सवमे मैथिली कविगोष्ठीक आयोजन छल । कवि-साहित्यिक लोकनि जे जुटला से सब मातृभाषा मैथिलीक प्रचार पर जोर देलनि । ओहिमे मैथिली साहित्य परिषद दरभंगाक किछु सदस्यो छला जे मैथिली परिषदक केन्द्रक स्थापनाक एतय प्रस्ताव रखलनि । पंडितजी स्वीकारि लेल ।

तुलसी दिशारद कयनहि छल, मैंथिली मध्यमा सेहो कऽ लेलक ।

ओ तकर दोसरे वर्ष उत्तमा (मैथिली साहित्यरत्न) क परीक्षा सेहो दऽ देलक, उत्तीर्णों भेल । पंडितजीसँ तिरहुता लिखवाक अभ्यास कऽ लेने छल, उत्तर मिथिलाक्षरेमे लिखने ओकर उत्तमताक हेतु एकटा विशेष प्रमाणपत्र सेहो प्राप्त भेलैक ।

एही बीच गामक सटले बनौली गामक जमीन्दार लोकनि एकटा नवे हाइस्कूल खोललनि । अपन पुरुषाक नामो उजागर

करबाक छलनि, परिवारमे जे ग्रेजुएशन कऽ नेने रहथिन तनिका काजोमे लगयबाक छलनि ओ कानमे पड़ैत अयलनि जे इहो आब एकटा धंधाक रूप धारण कयने जाइछ, बहुत ठाम एहिसँ प्रोप्राइटरकेँ लाभो देखल गेल जाइ छैक। सेहो सुखानुभव प्राप्त करवाक छलनि।

स्कूल चलि पड़ल, मंजूरियो भेटि गेलैक, मकान बनबाक लेल किछु सरकारी अनुदानो भेटलैक। एही बीच सरकारसँ मैथिलीक पाठ्यक्रममे स्वीकृति सेहो भेटलैक। स्कूलमे मैथिलीक शिक्षक सेहो चाही, ताधरि मैथिली ग्रेजुएट एकाधे बहराय लागल छल। पण्डित मोहन मिश्रक एकटा विद्यार्थी स्कूलक प्रबन्ध समितिमे छलथिन। हिनक प्रोत्साहनेँ तुलसी कमीटीमे दर्खास्त कयलक, मैथिलीरत्न छलाहे, ओहि संगे हिन्दी विशारद सेहो। संगहि पिछड़ा वर्गक गोटेक केओ रहबेक चाही, ऊपरसँ पंडितजीक सिफारिश, तुलसीकेँ जगह भेटि गेलैक।

मेहनतिसँ पढ़बय, ढ़ंगसँ पढ़बय। छात्र सब ट्यूशनमे जुटय लगलैक। मेहनतिया छले, पहिने गामसँ पैदले जाय-आबय। किछु दिनक बाद एकटा सेकंड हेंड साइकिलकेँ ठीक-ठाक कराय ओहिसँ जाय-आबय लागल।

भाय-भाउजि तुलसीक श्रम ओ व्यस्तता देखि मुग्ध रहैछ। एहन भाइ-देओर पयवा लेल अपन भाग्यकेँ धन्य मानैछ। और अपनहु ओकर हाथ बटयवाक प्रयासमे सोचैत छल।

हवेली जायब-आयब रधिया छोड़िए देने अछि। छीतन कने खेत-पथार देखि-सुनि दै छनि। घरक काज जे हुलसि कऽ चन्द्रकला, रधिया पर रोब जमबैत उठौलनि से आब पिछड़ि कऽ करय पड़ैत छनि। बहिनिक काज भार तँ बहुत किछु सम्हारि दैत छलथिन, परंच बहिन्वैक संग हंसी-ठट्ठा करैत चमकि-चुमकि, कखनो बहिनिक विषादभार सेहो बढ़ा दैत छथि।

चारि

एम्हर निरसूबाबू अपन दूहू नेनाकें मधुबनी पठाय माथ हँसोथि रहल छथि । पाँच-छओ वर्षक भीतर हुनका पढ़यबामे जते खर्च पडलनि से खेतक उपजासँ नहि पुरा सकला । ओहि लेल ऋण-पैंचक आँचमे तपय पड़लनि । खेत भरना देबय पड़लनि । पुनः ओकरा सधयबाक उपाय नहि देखि, सूदिक बाढ़िमे भसिअयबाक संभावना बूझि, कबाला कय देबे कबूल करय पड़लनि ।

ओम्हर नन्दकिशोर हाइस्कूलक तत्कालीन फोर्थ क्लासमे जे भर्त्ती भेल छला से बीचमे गुड़कैत-लुढ़कैत कहुना फस्ट क्लास एन्ट्रेन्स धरि तँ पहुँचि गेला परंच तीन फुक्के चानी होयबाक बदला टलहा भऽ कऽ घर फिरि अयला । गार्जियनकें ने फंड जुटनि आ' ने थोड़ेकसँ हिनका शहरमे टिकबाक बाट सुझनि । ओतय बसिओ कऽ थियेटर-सिनेमा नहि देखता, पिकनिक पर नहि जयता, दोस्त-मित्रकें खोआ-पिआ नहि सकता तँ शहर सेबताह किएक ?

गाममे आबि कऽ फुटबॉल टीम जुटबैत रहला, मैच मचलापर अड़ोस-पड़ोसक खेल मैदानमे रेफरीक सीटी बजवऽ लगला । कहिओ जँ पहिलुक संगीक नातें तुलसीसँ भेंट होनि तँ गार्जियनक कंजूसीक ओजहसँ पढ़ब छुटि जयबाक गप्प कहि छुट्टी लेथि ।

नन्दकिशोर किछु दिन एहिना बौआइत-ढ़हनाइत रहला । एक दिन स्कूलक एक संगी, जे पहिने कोनो मारि-पीटक अपराधमे स्कूलसँ आनुशासनिक कारणें बाहर कऽ देल गेल छल, पैजामा-कुर्त्तामे, क्लीन शेव्ड दाढ़ी-मोछ मुड़ौने स्टेशनक प्लेटफार्मपर घुमैत भेटि गेलनि । हाथ पकड़ि कऽ हिनका बैसाय कहलकनि—

'हम तँ कामरेड बनि गेल छी। महंथजीक जमीन्दारीमे जे आन्दोलन जमल छलैक ताहिमे हम खूब जोर लगौने छलहुँ। रैयती मामिलामे किछु दिन जेलो काटि अयलहुँ। की कहिओ दोस्त ! ओतहु हमरा सब मस्तिएमे छलहुँ। जेलरो डेराइते छल, खान-पान खूब चलैक, बीड़ी-सिगरेट सेहो बाहरसँ पहुँचि जाइक। बिदा काल कपड़ा-लत्ता बिदाइयो भेटि गेल।

'जेलसँ बहरयलहुँ तँ महंथ पिस्तमपिस्ता भेल ! आब तँ हमरा सबकेँ कतहु देखै छथि तँ आह्लादि कऽ बैसबौ छथि, सामाजिक काज लेल किछु चन्दो थम्हा दैत छथि। जेल हमरा सभक लेल खेल भऽ गेल अछि। जतऽ कतहु कोनो टंटघंट होइछ, लोक आन्दोलन चलयबा लेल बजबौत रहैछ—नेताजी कहि कऽ हमर नाम चलैछ।

'तोरा हम तकिते छलहुँ। चल आ तोहूँ, हमरा सभक संग रहने ने कतहु टिकट लगतौ ने चाह-पान करबामे कोनो कसरि रहतौ। बनियाँ-बेकालसँ चंदा ओसूलिहेँ, किछु खैहेँ-पिबिहेँ किछु गामो पठबिहेँ। पाटीसँ किछु पोथी दिआ देबौ, तकरो बेचि-बिकिन कऽ अपन खर्च-बर्च चलबिहेँ।'

संगीक बढ़ल-चढ़ल बातोसँ, ओकर पहिरन-आढ़नक सीटसाटसँ, फरींहाँ गप्पोसँ ई बेसी प्रभावित भेल। ओकरा संग दलित मजदूर ओ किसानक आफिसक चक्कर लगयबामे आइकाल्हि नन्दकिशोरक वेशी काल कटैत छैक।

बीचमे जखन तुलसीसँ भेंट होइक तँ नन्दकिशोर ओकरो संग लगयबाक प्रयासमे बहुत किछु कहैक। तुलसी से सब सुनि तँ लिअय, परंच उत्तरमे मौन लगा जाय।

'मौनं स्वीकारलक्षणम्' केर अनुमान लगबैत नन्दकिशोरक कनवासिंग यदा-कदा चलिते रहैछ। आइ ने काल्हि असरि भेनहि, ओकरा तकर विश्वास छलैक।

पाँच

स्वराज्य आन्दोलनक पहिल जागरणमे देशक जनता आँखि मिड़ैत उठल तँ ओकर पहिल नजरि विदेशी शासकक अन्याय दिस पड़लैक। ओकरा नीक जकाँ मान भेलैक जे हमर दुःख-दुर्गतिक कारण विदेशी शासने अछि, तकरा हटायब हमर प्रधान कर्तव्य थिक । तखन असहयोग-सत्याग्रह-विदेशी वस्त्र वहिष्कार आदि परिष्कार पौलक।

आन्दोलनक घीच-तीरमे जखन ओ एम्हर-ओम्हर नजरि फेरलक तखन बुझि पड़लैक जे जमीन्दारी सेहो हमर फेफराकेँ खखोरि रहल अछि। तखन किसान-जमीन्दारक संघर्ष जोर पकड़लकैक।

पुनः आगाँ देखबा-सुनबाक चाँकि भेलैक, तखन सामाजिक उच्चावच भेद सेहो खटकलैक । द्विज-अन्त्यजक अन्तराल विकराल बुझि पड़लैक। फेर अछूतोद्धारक प्रचारमे लोकसेवी जुटला।

पाछाँ समताक जखन चर्चा जोर पकड़लक तखन अगिला-पिछड़ा वर्गक नारा चललैक। वर्ग भेद मेटयबाक हेतु यत्र-तत्र जोर पकड़लकैक ।

मधुपुरमे सत्याग्रह-असहयोगक चर्चा तँ चलल परंच ओकर अर्चामे लोक तते तत्पर नहि देखल गेल । जमीन्दारक गाम नहि रहने किसान-आन्दोलनक चहल-पहल सेहो चर्चे धरि सीमित रहल । अछोपक संख्या कम्मे छल, तेँ तकरो हेतु हरिजन आन्दोलनपर लोक टीके-टिप्पनी धरि करैत रहि गेल। परंच जखन अगिला-पछिला वर्गक संघर्षक आन्दोलन चलल तखन मधुपुरो चंचल भऽ उठल। महतो-बहियामे जे भेद-भाव छलक—रोब-दाब ओ दवाब विच्छेद छलैक

से आँखिमे खटकलैक । मालिकक खबासक प्रति व्यवहार मुक्त-भोगिएके नहि, अनकहु अनसोहाँत लगलैक ।

निरसूझा बाबू कहबथु आ छीतन खबास छितना कहि संबोधित होथु—से आब चलनिहार नहि। काज लै छथि तँ उचित बोनि देथु। वरद जकाँ जोतने रहता, आ घास-पात जकाँ दू मुट्ठी अन्न छीटि देता, से चलनिहार नहि। समय-जमाना बदलि गेल छै। आब से सब नहि चलतनि।

जे हाल निरसूबाबू ओ छीतन खबासक बीच देखल गेल से आनो बाबू-भैयाक बहिया संग रंगत अनैत रहल । पुरुष-वर्ग आब जखन पहुनैती-कुटुमैतीमे जाइ छथि तखन हुनका संग खवास नहि रहैत छनि। भार-दोर पठयबाक होइत छनि तँ आब मलाह-कहारके गोह-राबय पड़ैत छनि ।

स्त्रीगणके और कठिन। कमला-जीबछ नहयबाक होइत छनि वा कुशेश्वर-कपिलेश्वर जयबाक होइत छनि तँ मोटा उठयबा लेल खबास नहि संग दैत छनि । संग लऽ गेनिहार, संबंधी-सरोकारिए क्यौ माथपर मोटा उठबैत छथि वा हुनका अपने झोड़ा-झपटा लटकाय लऽ जाय पड़ैत छनि । अधिकांश बहुआसिनिके वर्तन-भाजन अपने माजै पड़ैत छनि। कते गोहरयलापर, सीधा-पनपियाइ अहगर कऽ देलापर, पनिभरनी पानि टा भरि जाइ छनि ।

कलिकालक महिमा-गान बूढ़ि-पुरनियाँ लोकक मुहसँ अधिक काल सुनल जाइत अछि । एतबे दिनमे कलियुग कोना एना जवान भऽ गेलैक तकर बखान करैत 'हे दैया-हे मैया'क संबोधन अपनामे बेसी चलबैत रहै छथि ।

मधुपुर कोनो पैघ गाम नहि तँ छोटो नहि, विशेष चौखुट बसल अछि। बीचक डीह टोलमे भलमानुस छथि, पाँजि-पाटिक चर्च-वर्चमे मगन रहनिहार, पान-सुपारी संग सतरंज-चौपड़िमे रमनिहार और

खर-खवासक सेवा बलपर अमीरीक सीढ़ी चढ़निहार । पछवारि टोलमे बेसी हुनक भगिनमाने, विभिन्न मूल-गोत्रक छथि जे नोत-हकारमे संग पुरनिहार, गवाही-सादीमे अंग रहनिहार छथि । स्वयं जीरो रहनहु जँ फेर डीहक कोनो अंकमे योग दऽ दै छथि तँ दसगुन मूल्य बढ़ा दै छथि ।

पंडित मोहन मिश्रक ओहि टोलमे विचारेँ-व्यवहारेँ धाख जमल छनि । डीह टोलमे जँ ककरहु काज-तिहार होइत छैक तँ हुनका नोत-पता भेटितहि छनि । बाहरसँ केओ अतिथि-अभ्यागत अयला तँ हुनक दलानपर गामक क्लब-कम्युनिटी हाल जकाँ एकबेर अवश्य भऽऔताह । दू-चारि घर कायस्थ सेहो छथि जे अधिक बाहरे नोकरीपर रहै छथि । परंच कोनो नव चर्च-आन्दोलन एहि गाममे एही द्वार-टोलसँ पहुँचैत छैक । पच्छिममे नदीघाट पार कऽ पहिने एम्हरहि दऽ कऽ सड़क गाममे सीमा पार करैछ ।

दछिनबारी टोलमे किछु घर यादव-कुर्मी, कमार-कुम्हार ओ कोइरीक मिज्झर बास अछि । खेती-पथारीमे, गाय-महिसिमे ओ दोकान-दौड़ीमे लागल रहि, जे पढ़बा-लिखबा दिस जड़जकाँ रहितहुँ, गामक अर्थव्यवस्थाक जड़ि बनल छथि । ओही टोलमे पहिलेपहिल नेना-भुटकाक पढ़यबा लेल तुलसो उत्साहित भेल छल । आबहु ओम्हर ओकर धाख लोक रखैछ ।

उतरबारि टोल एकछेहा खबास लोकनिक अछि । खबस-टोली सेहो ओकरा कहल जाइ छैक । पुबारि-टोल अछूतटोली थिक । जोलहा-धुनिया जोलही कपड़ा बुनैछ । दू-घरे डोम मेघडम्बर-डाला-सूप-चङेरा-चङेरी-कोनिया-सुपती बनबैछ । चमार मुइल मालकेँ खलैत अछि, चमड़ा व्यापारीकेँ माल पहुँचबैछ । केओ-केओ एकरा शिल्पी टोल सेहो कहैछ । किछु घर दुसाध-मुसहरक अछि, जकरा जन-मजदूरमे लऽ जयबा ले' गृहस्थ चढ़ाखरी करैत अहल-भोरे लोक पहुँचैछ ।

एही वर्ग-मिश्रित गाममे आइ वर्ग-संघर्षक बिगुल फुकबा लेल—केओ कहैछ जे ककरहु बजौलापर, केओ बजैछ जे अपनहि फुरने, किछु समाजवादी दलित संघक स्थानीय नेता लोकनि पहुँचल छथि। सभाक आयोजन पंडित मोहन मिश्रक दलानक आगाँक भगवती-थानक मैदानमे भेल अछि । एक कातमे मचान बनौल गेल छैक । लाउडस्पीकरक भोपा सेहो लागल अछि। सामनेमे लोक सभ जुटल छथि । ताहिमे धिया-पुता सैह बेसी अछि । कने हटि कऽ किछु संभ्रान्त लोक छिट-फुट कात-करोटमे क्यौ ठाढ़े, क्यौ बैसले, तमाशा देखि रहल छथि ।

सभाक अध्यक्षता लेल किछु नवयुवक पंडित मोहन मिश्रकेँ अरियाति कऽ लऽ आनलनि । ओ मंचपर जाय बैसलाह । एक टा स्वागत उद्‌बोधन गीत भेल। दलित संघक झंडा फहरौल गेल। इन-किलाबी नारेबाजी भेल। तखन वक्ता लोकनि भाषण शुरू कयलनि।

मंचक कात-करोटमे जे दू-चारि गोटे आयोजक छथि से बीच-बीचमे जखन थपड़ी बजबै छथि, हुनक अनुकरणमे सामने बैसल धीया-पुता थपड़ी बजबैत चलैछ । जकर दुर्दशापर वक्ता प्रकाश दै छथि, आ' जकर लक्ष्य कऽ अन्याय-अत्याचारक वर्णन होइछ ताहि सभमे कोनो असरि नहि लक्षित होइछ ।

जमीन्दारक अत्याचार, पूजीपतिक शोषण, लाल क्रान्ति, मार्क्स-लेनिन-स्टालिन, किसान-मजदूर संगठन, वर्ग-संघर्षसँ समता आदि कोनो विषय छूटल नहि। जे सब प्रगतिक आवश्यक व्याख्या छलैक तकरा बड़े जोस-खरोससँ नेता लोकनि रखलनि ।

वक्ता-श्रोता सब स्थानीये छला, मुदा भाषण खरी बोलीमे, चारू दिस मुह घुमाय, जेम्हरे लोक नहि छलै तेम्हरे सुनाय देल। स्त्रीगण नहि छलि तैओ बहनो और भाइयो कहि संबोधित कयल गेल ।

सभा समाप्त करबासँ पहिने अध्यक्ष तुलसीसँ आग्रह कयलथिन जे गामक दिससँ आगत नेता लोकनिकेँ धन्यवाद करथि । तुलसी

अपन निवेदनमे वक्ता लोकनिकेँ धन्यवाद दैत कहल जे जाहि जन - समाजकेँ उत्थान करऽ आयल छथि, नीक होइत जे ओकरा अपन भाषामे बुझबितथि तँ ओहो लोकनि हिनक भावकेँ नीक जकाँ बुझितथिन आ' इहो सब बात बुझा सकितथिन। संगहि वर्ग-संघर्षक बात कहै छथि, हमरा जनैत गामक जनता छोट-पैघ जे कहबथु सभ एके वर्गक छथि, गरीबे छथि। गाममे एक-आध गोटेकेँ छोड़ि, ततबो खेत-पथार रखनिहार छथि जे वर्षान्नो नहि जुटै छनि। पूजीपतिओ तेहने सब छथि जे वर्षान्तिमे ऋणे-पैंच सधबैत रहै छथि। एहि ठामक लेल तँ लोककेँ संघर्षक पाठसँ बेसी मेल-मिलापक जरूरति छैक। खेतीक संग व्यवसाय चाही, रोजी-रोटीक उपाय चाही। स्वास्थ्य-शिक्षाक प्रचार चाही। मामिला-मोकदमा गोला-गोली मेटयबाक प्रेरणा चाहीं। तेँ ई लोकनि गाममे जँ मेल-मिलानक जरूरतिपर जोर देथि तँ बेसी उपकार हेतैक।

तुलसीक बिकछायल बात जखन अपन भाषामे लोक सुनलनि तँ कात-किनारमे बैसल जते लोक छला से थपड़ी बजा कऽ समर्थन कयलकनि। एहिबेर सामनेक बच्चा सब चुप्पे रहल। अन्तमे सभापति पंडितजी दूर्वाक्षतक मंत्र पढ़ि, ओकर अर्थ बुझाय, लोक जीवनक आदर्श देखौलथिन। सभामे एक नवे भावावेश प्रभावी भेल।

आगत वक्ता लोकनि एहिसँ कते प्रभावित भेला से नहि कहि, परंच ओ सब पंडित जीक भोजन-जलपानक आग्रह हेतु क्षमा मङैत साइकिल उठा चटपट चलि देलनि।

छओ

रधियाक सम्पर्क निरसूबाबूक हबेलीसँ दिन-दिन कम भेल जाइ छैक। चन्द्रकला भानस-भातक संग आब वर्तन-भाजन सेहो माजि लै छथि। घर-आङनक नोप-पोत सेहो अपनहि हाथेँ करऽ पड़ैत छनि। रधिया दूनू साँझ पानि भरि कऽ राखि दैत छनि, कखनो कुटिया-पिसिया टा कऽ दैत छनि आ' नीप-पोत लेल गोबर-माटि जुटा दैत छनि।

परंच ओहि लेल ओकरा जतवा भेटैत छैक ततबासँ घरक काज नहि चलैक। परिवार बढ़लैक। दू टा ननकिरबा आब चेठनगर भेलैक, ननकिरबी जे सबसँ जेठि छलैक सेहो आब चेतनि भेलैक।

भाइ-भाउजिक इच्छा छलै जे ननकिरबाकेँ कोनो बाबू-भैयाक ओतय गाय-महिसिक चरबाहिमे लगा दिऐक जाहिसँ ओ ओतहि पोसा जाय। ननकिरबी सेहो कोनो घरमे टहल-टिकोड़ा कऽ कऽ अपन पेट चला लिअय। परंच तुलसी से नहि चलऽ देलकै। ओ भातिज-भतीजीकेँ प्राइमरी स्कूलमे नाम लिखा देलकै।

स्कूलसँ जे पचीस टाका तुलसीकेँ भेटैत छैक से ओ भाइकेँ दऽ जाइत अछि। अपन खर्च ले' कहुना दू-एक ट्यूशन कऽ दस-टाका कमा लैत अछि, ताहीसँ निमहि जाइछ।

छीतन ओ रधिया दूहू प्राणी व्योंतिया लोक। वेतनक टाका अमानते रखने जाइछ। अपन गुजर-बसर लेल छीतन जँ कतहु बोनि-बट्टा कऽ लैत अछि तँ रधिया कुटिया-पिसिया करैत, बोनिमे जखन उड़ीद-मूङ भेटैत छैक तँ पापर-तिलौड़ी बना लैछ। बाड़ी-झाड़ीमे सजमनि-कदीमा लगौने अछि तँ तकरो बेचि-बिकिनि कऽ काज चला लैछ।

रवि वा आनो छुट्टीक दिन जखन तुलसीकेँ गामपर रहबाक मौका भेटैछ तँ भातिज-भतीजीकेँ पढ़बैत-गुनबैत भाउजिकेँ सेहो कहैत रहैछ जे अहाँ कने अक्षर सीखि लितहुँ तँ थोड़बो दिनमे नेना-भुटकाकेँ पढ़ा दितिऐक। ओ हँसि कऽ जबाब दैत छैक --'बूढ़ सूगा-मैना कतहु पोस मानलकै अछि? कतबहु रटयबैक, ओकरा मुहसँ टेंटें सैह बहरयतैक। आब हम की पढ़ब-लिखब? हमर छोटकी बहिनिकेँ पढ़बिऐक तँ ओ तेहन संस्कारी अछि जे ओ थोड़बो दिनमे 'गुरु गूड़ तँ चेला चीनी'क कहबी सिद्ध कऽ देत। अहाँकेँ जँ चेलो चाही तँ कही, हम ओकरा मङा दी। हमरा आब की चटिया बनायब खड़ी धरायब?'

बात बीचमे कटैत तुलसी बाजय--'नहि नहि, अहाँकेँ खड़ी पकड़बेक देरी अछि, लगले अहाँ कलमो चलबऽ लागब। ऐ भौजी, अहाँक संस्कार दोसर के पाओत? अहाँ जँ चाही तँ थोड़बे दिनमे गुरुअइ सेहो करय लागब।'

रधिया हँसैत कहलक--'तँ दिन ताकि दिअ। हम भट्ठा धरब।'

'दिन तकले-ताकल अछि, आइएसँ सुरू भऽ जाय।' तुलसी बाजल।

'ओना हम अपना मने नेना सभक किताबकेँ देखैत--'उनटबैत, तस्वीरसँ अच्छरक मिलान करैत ट-टा कऽ पढ़ि लैछी। मुदा ओ पढ़नाइ कोन?'

तुलसी आश्चर्य भरल खुशीसँ कहलक--'कने पढ़ि कऽ सुनाइयो दिअ।'

रधिया लगले चित्रबोध उठयने आयलि आ फटाफट पढ़िकऽ सुनवय लागलि।

'भौजी! बस-बस बुझि गेलहुँ। हम मेघ दिस उपर तकै छलहुँ, एम्हर खेत अपनहि तरेतर नहर भर पनियाओयल। आब अहीं पढ़बियौ नेना-भुटकाकेँ।'

'और अहाँ पढ़ाउ-बुढ़वा-बुढ़ियाके"।

'अहाँके बुढ़िया के कहत ?

'जखन छोटकीके देखबैक, तखन बड़की कते झूसि बुझि पड़ैछ, से देखि लेब।'

'अहाँ सदिखन छोटि बहिनिक बड़ाइ करैत रहै छी। अरे! कमला-बलान कतबो उछलओ-कूदओ, कोसी-गंडकी कोना बनत ? यमुना कतबहु तरंगित होअओ मुदा गंगाक सामने ओकर की कीमति ?'

'गंगाक तट पर भारद्वाज मुनि जे बसथु परंच रासविहारी कृष्णक लेल यमुनेक तटपर ने बाँसुरी छजतैक।'

'रास रचौनिहार कृष्ण ने राधाके तकैत फिरताह, वंशी टेरैत रहताह ? जे गोपाल कृष्ण छथि तनिका तँ गोकुलेक गलीमे गाय-बाछीक चरबाहि लिखल छनि।'

'गाय-बाछी चरबैत-चरबैत ओ अपने वंशी टेरय लगता, गोकुल गलीमे घुमिते-घुमिते ओ बृन्दाबन-बरसाने टहल्य लगता। कने एक बेर कृष्ण अपन आँखिए राधाके देखि तँ लेथि।'

'बेस देखल जयतै। अहूँक विज्ञापनक जाँच भऽ जयतै।'

'देखल की जयतै ? देखि अबिऔ, जाँचल की जयते, जाँचले छै। हमरा बेसी नहि किछु कहय पड़त देखितहिँ देरी ने कृष्णके कदम्बक तरुतले धीरे धीरे मुरली बजाब छुटि जयतनि आ' उदवेगल"...

'अरे! ई सब गीत-प्रीत अहाँ कोना कखन सिखि लेलिए ?'

'अहीं जे जखन तखन गुनगुनाइत रहै छी। से हमरा कानमे नहि पड़ैत रहैए की ? की हम कान मुनने रहै छी ? गुरुजी पाठ पढ़बथि आ चेली जे घोंखि नहि सुनबय से कोना चलतैक ?

'अच्छा, अच्छा। तखन अपन विज्ञापनी प्रदर्शन कहिया देखयबाक मौका देबैक ?'

'विज्ञापनी प्रदर्शन नहि, सत्यापनी दर्शन कहियौ ? मुदा दर्शन तँ शुभ लग्न मुहूर्त्तमे फल दैछै, से बुझि लियौ ।'

'हँ हँ, से अहीं ताकि दिअ ।'

'अहाँक जहिया छुट्टी दिन रहत सैह दिन । मुदा एकदिना रविक छुट्टीसँ काज नहि चलत । दर्शनक बाद पूजनमे कए दिन लागि जायत । तेँ अपन जमा छुट्टी सेहो किछु जोड़ि लेब । हमरा तँ डर अछि प्रदर्शनी देखबामे अहाँ अपन जमा सब छुट्टी ने गमा ली ।'

तुलसीकेँ हँसी लागि गेलनि । देओरक हँसीमे भाउजि सेहो संग पूरय लगली ।

तावत छीतन् आबि गेला । ओ दूहूकेँ हँसैत देखि पुछलनि—कथीक एते हँशी थिकै ?

घरवाली बाजलि—हँसी की रहतैक ? बौआकेँ आब जल्दी विआहि दिऔन । नहि तँ हिनक हँसी-मजाक एहिना बढ़ैत जयतनि ।

सब संगहि ठठा कऽ हँसि पड़ल ।

सात

स्कूलसँ आबि तुलसी अपन भाउजिकेँ देखैत अछि जे एकटा चिट्ठी हाथमे नेने किछु सोचि रहल छथि । किछु पुछबासँ पहिने हाथमे चिट्ठी दैत कहलक जे—'तुलसी बौआ ! हमरा नैहर जल्दी पहुँचा दिअ । हमर बहिनि सवियाकेँ जतऽ ततऽ बिआहि देबाक बात चलि रहल छैक । बाबू जाहि मालिकक ड्राइवर छथिन ओकर जोर छैक जे अपन एक खबासक बेटा संग ओकर बिआह

करा दिऐक। माय-बाबूकेँ ओ पसिन्द नहि। हमरा तँ ओकर नामेसँ झड़की अछि। ने रूप, ने गुन। एकटा बिओहतलि माउगि ओकरा छोड़िकऽ दोसरासँ सगाइ कऽ लेने छैक। उमेरो तीससँ कम नहि हेतै। हमर बहिनि पनरह-सोड़हक, गोरि-नारि, लुरिगरि आ' गितगाइनि। पढ़लो-लिखलो अछि। कतेक ने गीतक पोथी रखने अछि। नामो ने तेना मोन अछि, मिथिला गीतसंग्रह, भजनावली, विद्यापति चन्ना झा आ ककर ककर ने गीत अभ्यासने अछि। एकबेर मालिकक बेटीक बिआहमे जे ओ गीत गौलक से सुनि कऽ पाहुन लोकनि पुछि वैसलथिन जे ई गितगाइनि सौराठ-मङरीनीक बुझि पड़ै छथि। ठहाका मचि गेल जे ई ड्राइवर खबासक बेटी थिकथिन।'...

रधियाक प्रवाह बंद भेनिहार नहि। तुलसी हुंकारी भरैत जेना टोक देथि।

'हूँ की? कत्ते कहिऔन! एक वेर बाहरसँ बहुतो हाकिम-हुक्काम आयल छलथिन। ओहिठाम सिविया-बुनिया, रंग-टीप, अइपन सीकी, सभ जमा कयल छलै। एकर बुनल सीकीक प्रसंसे नहि भेलैक, इनामो भेटलैक। एहन हमर बहिनि ओ ओहन अलेल-बलेल गोनरा! ई कोना हेतै? हमरा संग कालिह चलू, पहुँचा दिअ, अहूँ हमर बातक परिच्छा लऽ लेब। हम तँ ओइ मोतीक मालाकेँ वानरक गरामे नहि जाय देवै, किन्नहु ने। ओइ हीराकेँ जइ सोनामे गढ़ल जैबाक चाही से हमरा ध्यान मे अछि। अहाँ तहिमे बाधा नहि करब।'

एक सुरमे भाउजि बजिते गेलैक। तुलसीकेँ उत्तर देबाक साधन्से नहि मेलैक। दु दिनक बाद रबि पड़ैत छलै। ओकर बाद मोहर्रम क दुदिना छुट्टी छलैक। ततबा अवधि हेतु भाउजिकेँ कहुना मना लेलक।

दू-दिनमे रधिया अपन ओ देओरक कपड़ा-लत्ता सजा-धजा कऽ झोड़ामे रहि रहि कऽ सेंतैत रहल। बुझि पड़ैक जेना कोनो

बड़का उत्सवमे जा रहल हो ! नैहर नहिं, कोनो काज-तिहारमे कुटुमारय जा रहल हो ।

भाउजिक उत्साहमे तुलमी कोनो बाधा नहि कयलक । मनमे उत्सुकतो छलैक जे अतिशयोक्तिक मूलमे स्वभावोक्तिक आधार किछु ने किछु रहवेक चाही । वर्णनमे आत्मीयतेक करामात छैक अथवा किछु रंग-ढ़ंग ओ रूप-गुनोक अँटावेश छैक ? वेस, एहि वहाने सेहो बुझा जायत ।

देओर-भाउजि यथासमय पहुँचि गेल । माय-बापक बिचार जे कने मालिकक बात लऽकऽ डगमग करैत छलैक ताहिमे दृढता अयलैक । साफ जबाब दऽ देलकनि जे ई समंध किन्तहु नहि भऽ सकतैक । मालिक छथि, हुनक हुकुम बजबैत अयलहुँएँ, बजबैत रहब । मुदा ई हमर सामाजिक बात, परिवारक कथा थिक— जतऽ जुगुतगर हयत हम ततहि बेटीकेँ देब । फसरी लगा कऽ वेटी-वध हमरा सँ नहि सधत । संसार बड़कीटा छै, जतऽ गुजर-बसर हैत, हम घर बसा लेब मुदा बेटीक सुख-सोहागकेँ उजारब नहि । परी सनक वेटीकेँ खोरनाठ सन लोकक आगाँ फेकब नहि ।

घर भरिक दृढता पर तुलसीकेँ सन्तोषे नहि, गर्व भेलैक । ओम्हर मालिक कटि कऽ रहि गेला जे हमर बातकेँ कोनो मोजर नहि—. कोना कऽ हम खबासीसँ एकरा ट्रेनिंग दिया कऽ ड्राइबर बनाओल, बिस्टी पहिरनिहारकेँ धोती-कुर्त्ता, पैजामा-कमीजमे सजाओल, दर-दरमाहा बढ़ा कऽ प्यादासँ फर्जी बनाओल, तकर ई शेखी !

ओम्हर नोकर मनेमन कहय—हम कोना कऽ मालिककेँ सेबल ! आन क्यो ड्राइवर अबैत तँ सय-सैकड़ दरमाहा तलब करैत, तैओ खबासी-खलासी दूहू काज नहि करैत । हम तँ मोटरो चला दैत छिअनि, गाड़िओ धो-धा कऽ रोज चमकबैत छिऐन, खबासी सेहो

कऽ देत छिऐन। तकर खेआल नहि, बेटीकेँ गोनरा मड़र सन हरहट्टा सँ बिआहि देबाक बात कहै छथि!...नहि किन्नहु ने। काज छोड़ि देब, गामोसँ चलि देब, मुदा अपन सन्तानकेँ दुर्गतिमे नहि जाय देब।

तुलसी जे दू दिन आग्रहपर ओतय अटकि गेल, से ओकर मनक मोताबिके भेलैक। एहि दुइए दिनमे सावीक जे चित्र-चरित्र ओकरा हृदय-पटपर अंकित भेलैक, ओ चित्र कोनो वाटर कलरक नहि छलैक। प्रत्युत जेना पाथर पर क्यो प्रतिमा छेनीसँ गढ़ि दैक तहिना ओ मूर्त्ति हृदयपटल पर खचित भऽ गेलैक।

चंपइ रंग, मध्यम कद, सौंटल देह, आमक फाँक सन पैघ आँखि, भोंह कमान जकाँ बाँक, जे सब रूप-वैभव काव्यमे देव विहारी-मतिरामक दोहा-कवित्त मे विशारद दवाकाल ओ पढ़ने छल से जेना साक्षात् देखबामे अयलैक। मैथिली भुषण परीक्षामे जे रस-गीत विद्यापति ओ गोविन्दासक रचनामे ओकरा कल्पित भेलैक आइ से ओकरा मनमे साकार भऽ एलैक।

एतेक दिन ओ भाउजिकेँ सौन्दर्यक पुष्ट उदाहरण बुझैत छल, ओकर उतार पर छोटकी वहीन हेतैक से मनमे अन्दाजंत छल। आइ ओकर बेअंदाज चढ़ाव परक रूप-वंभव देखि ओ विस्मित भऽ उठल।

पहिलबेर जखन एकटा थारीमे चूड़ा-दही नेने साबी तुलसौक आगाँ जलखै देबय आयलि, ई एकटक निहारैत रहि गेल। कनेक धखा कऽ चुप भऽ गेल। ओ एतबे पुछि सकल अहाँक नाम सावित्री थिक? भौजी बरोबरि अहाँक चर्चा करैत रहैत छथि।

'हमरा लोक 'साबी' कहैत अछि। अहाँ भौजीक देओर थिकि-अनि मास्टर साहेब?

फेर लगले ओ ग्लासमे पानि पहुँचा कऽ बहीन लग चलि आयलि। कहलक–बहिनि ! तोही जाह जलखै करा दहुन। हमरा लाज लगइए।

मुससकिआइत रधिया देओरके जलखइ करबय पहुँचलि आ पूछि बैसलि–'साबीके देखलथिन ? की हम बना-सना कऽ चढ़ा-बढ़ा कऽ कहैत छलिऐन ?'

'नहि नहि, जे कहैत रही ताहिसँ अधिके–बहुते अधिक। सयमे एक कहलहुँ, हमरा बुझि पड़ल हजारमे एक। हमरा तँ कोनो हबेलियहुमे एहन रूपराशि देखबामे नहि आयल।'

'तेँ कहै छलहुँ, एहन रतन केँ कोना वानर-मर्कटक गराँमे लगा दी।'

'तखन ?'

'मुदा सोनो तँ हमरा अपनहि घरमे छथि। तेँ सोनामे मणि मढ़ा जाय, तकरे ब्योंते तँ अयलहुँ अछि !'

'पित्तरिकेँ सोना मानि नेने की ओ सोना बनि जेतैक।'

'सोना बनै नइ छै। खानसँ बनले बहराइ छैक। हँ, कने सोनारक जरूरति पड़ै छै जे ओ मणि मोतीक नगकेँ मढ़ि सकय।'

'अहाँ सँ बातमे के जीतत ? हम हारि माननहि छी।'

'अहाँ हारियो कऽ जितिए जाइछी'–कहि कऽ भौजी मुसकिया पड़लि।

तुलसी चाटि-पोछि कऽ जलपान समाप्त कयलक। भौजी कहलथिन–'सासुरमे लोक कने ऐंठ नेराइए कऽ उठै छैक।'

सासुरक नाम सुनि कने सकपका कऽ तुलसी भौजी दिस तकैत रहल। ओ हिनक संकोचकेँ हटबैत बाजलि–'भाइक सासुर तँ सासुरे कहल जाइछै ने ?'

ओम्हर साबीक मनक बात के कहत ? ओ तँ अधिक काल एकटा समवयस्का सखीक संग फुदुर-फुदुर बतियाइत रहलि। कखनहुँ कनखीसँ सखीकेँ अपन वहिनिक देओरकेँ देखा कय किछु कहैत-सुनैत देखलि गेलि ।

दू दिनक बाद सबेरे स्कूल करबाक हेतु तुलसी विदा भऽ गेल ।

ओकर एक सप्ताहक बाद रधियाकेँ बाप पहुँचा गेलथिन । जतेक काल ओ छला तुलसीसँ गप-सप करैत रहला । जयबा काल अपन जमाय सँ गप कयलाक बादे हुलसल-फुलसल बिदा भेला ।

आठ

भारतक आध्यात्मिक साधक जहिना अनेकतामे एकता देखबाक प्रयासी रहला तहिना सामाजिक संगठनक व्यवस्थापक लोकनि एकतामे अनेकता देखबाक अभ्यासी बनला ।

एक दिस 'सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति'क समन्वय-सूत्र पढ़ल गेल तँ दोसर दिस 'परिच्छेदो हि पाण्डित्यम्' कहि स्तर-स्तरकेँ बिकछयबाक विश्लेषण भाष्य गढ़ल गेल ।

एहि ठाम जते वर्ण, तते रंग भेद । जते जाति तते पाँति । जते व्यवसाय तते निकाय ।

पहिने चारि वर्ण पाछाँ छत्तीस सवर्ण । पहिने चारि आश्रम, आइ अनेकानेक श्रम संगठन । जहिना लाल-पिअर-नील तीनिए मूल तिरंगासँ पंचरंगा सतरंगा नवरंगा फेंटि फाँटि कऽ तीख-गाढ़ हलका-

फीका करैत आल-गुलाबी-कमलपत्री करैत एको रंगके रंग-विरंग नाम-रूप बदलैत बढ़ल तहिना गोत्र-प्रवर मूल-ग्राम-डेरा देश-कोश ओ व्यावसायिक फेरासँ जाति-वर्गक अपन व्यवहार-परम्परा बढ़ल-गढ़ल जाइत रहलैक। व्यक्ति सामाजिकताक घेरामे बन्हाइत रहल।

ब्राह्मण लोकनिमे पहिने गौड-द्राविड, पुन: गौडहुमे एक कनौ-जिया तेरह चूल्हि फुटैत गेल। एक मैथिलहुमे सोति योग भलमानुस जयवार। कायस्थमे तिरहुतिया-पछिमा, यादवमे गहनौत-कृष्णौत, राजपूतमे चौहान-राठौर, वैश्यमे बनियाँ अगरवाल रोइनिबार सबठाँ छेद-विच्छेद। तहिना शूद्र समाजहुमे अनेक भेद-विभेद चलैत रहल। किन्तु हिनका लोकनिक सामाजिकतामे किछु विशेष बन्धन-निवन्धन तँ चलैत रहल मुदा जतय आन समाजमे गोलागोली होइत गेल से एतय नहि भेल। हिनका लोकनिमे मानिजन (मान्यजन) होइत रहला जे सामाजिक ओझराहटिके सोझरबैत रहला। हिनका सभक अंदरमे परगन्ना हलका गाम बँटैत रहल, जे पंच मनेजर छड़ीदार अनेक रूपें संगठनक जाल बुनल जाइत रहल। तकर बहुत किछु कसल रूप एखनो खास-खास जातिमे, विशेषत: उगनाक दयाद-वाद खवास कहौनिहार वर्गमे देखना जाइछ।

आइ ओही क्रममे मधुपुरमे पंचायती भोज बैसल अछि। पंच सरपंच लोकनि जुटल छथि, हलकाक अनेको मानिजनो आयल छथि जे दस गामक जे कोनो सामाजिक मामिला हुनका लोकनिक सामने राखल जायत ताहिपर फैसला देता। अधिक मामिला विवाह-सगाइक वा जे किछु हुनका आगाँ अबै छनि, समाजक रीति व्यवस्था जे सनातनसँ चलि अबै छनि, ओहिमे जँ कोनो व्यतिक्रम देखल जाइछ ताहि सबके ठीक रखबाक हेतु ओ सब फैसला दैत जाइ छथि। दंडमे भारी हल्लुकक अनुसार परगना-हलका गामक हिसाबें बीस-दस-पाँच वा दू मन भातक भोज देबाक दंड सुनाओल जाइछ। ओही सब भोजक अवसरपर फेर दोसर सामाजिक समस्याक समाधान पंच लोकनि करैत जाइ छथि।

एहू पंचायतमे इलाका भरिक बिभिन्न ओझराहटिकेँ सोझरयबा लेल विचार भऽ रहल अछि। एहिमे रधियाक नैहरसँ बाप-पित्ती भाइ-बन्धु ओ गामक औरो लोक आयल छथि। छीतन सेहो बजौल गेल छथि।

भोरसँ पंच लोकनि विचारमे लागल छथि, सभक बयान गबाही-सादीक वाद अपनामे बैसि वाद-विबाद पूर्वक तखन फैसला सुनौता। अगिला भोज-भातक निश्चय दंडक अनुसारेँ करैत जाइत जयता।

रधियाक बापपर सेहो अभियोग आनल गेल गोनर मरड़क दिस सँ, मालिकक पठौल जे लोकनि आयल छथि तनिक कहब भेल जे पहिलुक करारकेँ तोड़ि आब ड्राइवर अपन छोटकी बेटीकेँ दोसर ठाम विआहऽ चाहैत छथि। हिनक जबाब छलनि जे करार तँ नहि कोनो भेल छल, बहुत दिन पहिने जखन कनटिरबी कनीटा छल तखने गोनरक बाप बात कऽ गेल रहथि। तावत् विआहक कानूनो नहि बनल छलै, आब तँ चौदहसाला रोक लागि गेलै। तखन हमरा लोकनि घर-वर देखि कऽ दोसर ठीक कयल। अपन जेठकी बेटी जतऽ ससुरबास करए ततहि ओकर देओरसँ समंध पक्का कयल अछि।

पंच विचारि-सिचारि कऽ एहिपर फैसला देलनि जे पहिलुक बातसँ जेँ नव कानून बनि गेलापर ई बात बदललनि तेँ दोषी रहि-तहुँ ई बरी कयल जाइत छथि। परंच समंध करबाक पहिने हिनका जाति-भाइमे एहि मंडलक लेल दू मन भतखइ भोजक दंड लग-तनि। तकर बादे ई अपन बेटोकेँ विआहि सकै छथि।

दंड भेटलोपर रामभरोसकेँ अपन बेटीक भविष्य फरिछयबासँ संतोष छलनि। मुदा गोनरकेँ, ओहूसँ बेसी। ओकर मालिककेँ फैसलापर मन टुटल रहलैक। मन जुटलै तँ रधियाकेँ, जकरा अपन हीरा सन बहिनकेँ सोन सन देओरक संग मढ़बाक मनोरथ पुरयबाक अवसर भेटलैक।

परंच जखन तुलसीकें एहि फैसलाक खबरि भेटलैक तँ ओ अड़ि गेल जे हमरा ई किन्नहु कबूल नहि। दंड-जुरमाना देलापर विआह-संबंध हमरा मंजूर नहि।

'ई कोन अपराध ? कथीक दंड ? बाप बेटीकें विआहऽ चाहय, परिवार बसाबऽ चाहय, ताहिमे सामाजिक अडंगा कोन आधारपर ? देखै छी, आन-आन ऊँच बुझल जाइत समाजमे कते सिद्धान्त जुटैत-टुटैत अछि। वेदीपरसँ वर घुरैत अछि--घुराओल जाइत अछि। से तँ शिरोधार्य, मुदा कहिआ-कतऽ बात चलल, तकर बंधन कोन ? बंधनकें तोड़बा लेल मन-दू मन भात रन्हबाक तुक कोन ?

'नहि, हम एहन अन्यायकें नहि मानैत छी। समाजक पंचकें हम अनादर नहि करैत छिअनि परंच हुनक पंचैतीकें हम मान्यता नहि दऽ सकबनि। कुमारे बरु रहब, मुदा ई दंड-मारि केओ सहओ, हम सेहो नहि सहब।'

बात ठमकि गेल। रधिया बहुत खोंझैली, कनली-खिजली, छीतन सेहो नाराजगी देखौलनि। मुदा तुलसी अपन निश्चयपर अड़ले रहल।

परिवारक वातावरण जहिना गर्मायल छल तहिना, प्रकृतिअहुमे गर्मी आबि रहल छल। वैशाखक लुत्ती सन रौद, क्रमहि जेठ जेना चढ़ैत गेल तहिना बढ़ैत रहल। लोक अकास दिस तकैत मेघक बाट तकैत रहैछ, परंच तबधल आकाशकें ज़ेना पिआसे मेटा गेल हो ! चर-चाँचर सुखायल माटिक दरारिसँ मुँह जैना चिआरने हो। तहिना आकोसक छाती दिनमे रौदें जरैत छल तँ रातिमे चान-तारा गत्र-गत्रमे फोंका उठबैत छल ! अन्ततः आषाढ़ो उतरल। दु-एक टा टिक्कड़ खने कने छाया दऽ जाय मुदा बुन्नपात कृपणक बचन जकाँ छने बिला जाय।

नओ

आइ पछबा कने सिहकल अछि। लोक डाकक वचन पढ़य लागल, 'साओनक पछबा भादोक पुरिबा आसिन बहय इसान। कातिक कंता सिकियो न डोलय कहाँक रखबह धान।।' से धान रखबाक थान भेटीक वा नहि, पछबा धरतीक नहान करबापर तुलि गेल अछि।

मेघ देखिते-देखिते क्षितिजक ओर-छोर धरि आकाशकेँ झाँपि देलक। पुनर्वसु जेना बुन्दपातो नहि कयने छल, तकरो पुरयबाक भार जेना पुष्य उठाने ने हो - 'पुक्ख न राखय रुक्ख' ओ कहबी चरितार्थ करबापर तुलल अछि। शनि कऽ जे बरिसब सुरू कयलक से सतारि लाधि देलक। लोक अकछा गेल, मुदा मेघ तोड़पर तोड़ उझलैत रहि गेल।

खेत पनिआयल, खत्ता-खुत्ती भरि गेल, डबरा उमड़ि आयल, पोखरि-झाँखरि भरिकऽ रास्ता धरिकेँ एकामय कऽ देलक।

हो-हल्ला मचि गेल। गाममे डिगडिगिया पड़ि रहल छैक, धार बान्हकेँ छड़पय चाहैछ। लोकसब कोदारि-छिट्टा नेने बान्हकेँ ठीक-ठाक करबामे जुटल अछि।

मुदा प्रकृतिसँ मनुक्ख कते लड़त ? आखिर मेघक सह पाबि नदी उनटि पड़ल। ठाम-ठाम बान्हकेँ तोड़ैत धार गाम दिस धावमान भेल। आकाशक मेघ कने थम्हल तँ धरतीक नदी-नाला उमड़ि पड़ल।

आब लोक नदी-बान्हसँ हटि घर-आङन बचयबापर लागल अछि। एम्हर-ओम्हर जतऽ ततऽ पानिक सोहकेँ ढेप-चेपसँ घरक आसठिकेँ ठीक-ठाक करबामे व्यस्त अछि।

मुदा पानिक बहाव बढ़िते गेल। पछवारि टोलसँ पानि ठेलैत उत्तरबारि टोलकेँ दहवैत पुबारि टोलकेँ उपटबैत एकामय कऽ गेल। डीहटोल कने बचल अछि। ओतहि सामनेक पोखरिक भीड़ पर लोक आबि-आबि अपन प्राण बचयबा लेल शरण नेने अछि।

चारू दिस गल्ल-गुल्ल मचल अछि। कतहु नेना चिचिआ रहल अछि। कतहु स्त्रीगण इनर देवताकेँ गोहारि करै छथि। बूढ़सब सियाराम-सियाराम रटि रहल छथि। जोआन-जहान किंकर्त्तव्य-बिमूढ़ भेल ठकमकायल छथि।

देखिते-देखिते पोखरिक पछवरिया घाटक किछु अंशकेँ छोड़ि चारू दिस थहाथही अछि, क्यौ बैसल क्यो ठाढ़ छथि। क्यो खाट आनि, केओ टाट तानि, केऔ चौकी बान्हि आ' केओ कोरो-बातीमे डोरी-रस्सी लगा कऽ तीतल-भीजल नूआ-फट्टा पसारि कऽ टिकबाक थान बना लेने छथि। जे माल-बथान बला छथि से भिडाक लग कोनो गाछ लगा कऽ माल बान्हि देने अछि। खस्सी-बकड़ी सेहो एम्हर-ओम्हर बान्हल छेकल मेमिया रहल अछि।

सीधा संवल कतऽसँ, पानिओ पीवाक कठिनता छैक। प्रलय भेल अछि।

डीह टोलक लोक उचाँटपर रहने बचल अछि। पछवारि टोल अधिकांशमे पनिआयल, परंच उपटल नहि। दछिनवारि टोलमे घर-घर पानि तँ ढुकल छैक मुदा चौकी-खाट पर लोक निबहि रहल छथि।

परंच खास कऽ उतरवरिया खबसटोली, जे नीचाँ ढ़लान पर अछि, उपटि कऽ पोखरिक मोहारपर बसि गेल अछि। पूबारिभरक हरिजनटोलीक लोक पूब दिस आबि टिकल अछि।

घाटक पछवारि-उतरवारि कोन पर छौतनक परिवार अछि। रधिया आँचर बान्हने लग-पासक धोया-पुताकेँ मुट्ठीखाँर चूड़ा-मूढ़ी बाँटि रहल अछि। बेर-कुबेर लेल घरमे जोगाओल एखन काज दऽ रहल छैक। नेना-भुटकाक भीड़ लागल छैक।

तुलसी दछिनवारि टोलक किछु यादव-कुर्मी युवककेँ सङोरि चूड़ा-गूड़ पहुँचा रहल अछि। मोहन मिसरक ओहिठामसँ बाल्टी-तमघैल आयल अछि, ओहिमे लगक डीह टोलसँ पानि भरि-भरिकऽ लोककेँ पानिक प्यास मेटाओल जा रहल छैक। डीह टोलक बासीमे किछु स्फूर्तिगर एहनो छथि जे अपन टहल-टिकोड़ा कयनिहार खबासक सुधि लेबा लेल बेर-सबेर पहुँचि गेल छथि।

कोनो उत्सव मेलाक दृश्य जकाँ विपत्ति-वेलाक इहो दृश्य ककरो ककरो लेल कौतूहलवर्धको भऽ रहल छैक।

पाँच दिन बिति गेलैक। गाममे ने केओ राजनेता अयला, ने जन-नेता। ने रिलीफ बँटल, ने दवाइ-दारुक कोनो इंतिजाम भेल।

एहि बीच तुलसी किछु व्यक्तिकेँ सङोरि कऽ सबकेँ किछु ने किछु मदति पहुँचा रहल छथि। सबसँ पहिने पोखरिक उचाँस पर जल-कल गरौलनि। घुमि-फिरि गृहस्थ लोकनिसँ चाउर-दालि जुटा कऽ खिचड़ी तैयार कराय आहार देलनि। बीचमे सर्दी-बोखार ओ झार-दस्तक लेल एकटा होमियोपैथकेँ बजा दवाइ बँटवा देलनि।

लोकक आवश्यकता देखैत तुलसीकेँ होनि जे ई तँ ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़ने भऽ रहल अछि तेँ किछु एकर उपाय चाही। ओ दु-तीन गोट युवकके संग लय, कहुना नाओक इंतिजाम लगाय मधुवनी पहुँचला। एस० डी० ओ० केँ भेट कयलनि। लोकक दिन-दशा कहैत असहायक सहायताक अनुरोध कयलथिन।

फंडक कमी देखबितहुँ ओ रिलीफ पहुँचयबाक आश्वासन देल-थिन। तत्काल एकटा नाओ, पाँच बोड़ा आँटा ओ दालि-चाउर, एक

बोड़ा चूड़ा ओ गूड़ एहि सभकें लऽ एकटा किरानी बाबूक संग लगा देलथिन। बादमे घर धरिक पुनर्वास लेल रिलीफक जोगाड़ धरयबाक आश्वासन दऽ कऽ बिदा कयलथिन।

दोसर दिनसँ लोककें विशेष राहति भेटऽ लगलैक। तुलसीक व्यस्तता बढ़ैत गेलैक। स्त्रीगणक सुख-दुखक पुछारिमे रधिया भौजीक सहयोग सेहो भेटलैक। ओहि संग किछु औरो टोलवैआ सखी-सहेलीकें ओ सहेजि लेलनि। सेवाक नव उत्साह जेना हुनका सभक मुर्झाइत जीवनकें लहलहा देने हो।

दस

सप्ताहक बाद पानि घटि गेलैक, रास्ता खुजि गेलैक। पोखरि परक पड़ाव अधिकांशमे उठि कऽ जखन घर फिरैत गेल तखन सदर सँ रिलीफ बँटबा लेल डिप्टी साहेब अयला, हुनका संग किछु मोलाजिमो आयल। ओसभ डीहटोल पर कैम्प कयलनि। बाबू-भैया लोकनि संग-समाजकें रिलीफ दियैबा लेल जुटि गेला। सबसँ आगाँ अपन दू-चारि संगीक संग नन्दकिशोर बड़े उत्साहसँ रिलीफ बँटयबामे योगदान दऽ रहल छथि।

लिस्ट बनल, सबसँ अधिक पुनर्वासक रकम डीहटोलकें भेटलैक। जनिक देबाल वर्ष-वर्षसँ ढहले छल, कोनो खाम्ह-बड़ेरी टूटल पड़ल छल, से सब बाढ़िक माथे चढ़ल आ तकरा हेतु अहगर कऽ सहायता देओल गेल। पछबारि टोलमे किछु चिन्हरगर-मुहगर लोककें अनाजक संग नगदी बाँट-बखड़ा भेलैक। केवल पंडित मोहन मिश्र रिलीफ नहि स्वीकार कयलनि।

थोड़-बहुत नगद-ओ जिनिस दछिनबारि टोलहुमे बाँटल गेल। नन्दकिशोर घुमि-घामि कऽ डिपटी साहेबकें नन्दी साहुक दोकानमे

नोकरसानीक विवरण देलथिन। भजन यादवक बथानमे माल-मवेसीक लेल घास-भूसाक उपाय धरा देलथिन। दुनियालाल महतोक बहरघरा जे दू सालसँ जे खसल छलैक तकर मरम्मतिक व्योंत लगा देलथिन।। किछु आनो-आन अँखिगर-पनिगर लोकमे नगद जिनिस देबाक गओं धरा देलथिन। आइ ओ अपन नेता-गिरिक चमत्कार देखा रहल छला।

पुबारि टोलक हरिजनक नामसँ किछु बोड़ा गहूम-चाउर अपना दलान पर रखबा देलनि। आ' पोखरि जतऽ लोक बाढ़िमे टिकल छल तकरा चारू कात चौरस भरबा लेल, घाट-बाट बनयबा लेल श्रमयोजनामे किछु फंड मंजूर कराओल। आ' से अपना लोकनिक कमीटी बनाय तकर जिम्मा काज लेबाक व्यवस्था कयल। एहिसँ काजो चलत ओ हरिजनकेँ रोजी-रोटी लगतैक। गाममे लोककेँ नामलेबा मात्र मदति भने भेटौक मुदा एहिसँ नन्दकिशोरकेँ नेता-गिरी एहि बाढ़िक रिलीफमे जगजियार अवश्य भऽ अयलनि।

तुलसी एहिमे बेसी ननुनच नहि कयलक। मदति जकरा भेटौक, ककरो गामेक लोककेँ भेटलैक। दोसर एहिसँ कते दिन काज चल-तैक? काज तँ से चाही जे स्थायी हो, लोककेँ आत्मनिर्भर बना सकय? बेसी रिलीफ दिस झुकनिहार व्यक्तिके तँ देखल अछि जे ओ उद्योग-धंधा सँ आँखि मोड़ने कोनो बाढ़ि-रौदी-भूकंप आदि अकाल दुर्घटनेक प्रतीक्षामे रहैत अछि।

परंच एकर चोट अवश्य रहलैक जे धनुकटोली सबसँ बेसी बाढ़िक चपेटमे छल तकरा लेल तेहन किछु नहि भेलैक। घर सब टटघरे छलै, तेँ खसतैक की? माल-जालमे खस्सी-बकड़ी मात्र रहैक, तकरा लेल घास-भुस्सा की भेटितैक? हरिजन नहि छल, तेँ ओकरा खैरातो कोना भेटतै? हँ, पोखरि जे खुनयतै, ओकर भीड़ जे भरयतै—चौरस होयतै, घाट जे पक्का कयल जेतै--ताहिमे काज भेटि सकै छै—बोनि-बट्टा लागि सकै छै।

डिपटी साहेब बाढ़िग्रस्त गाम सबमे पेप जलक व्यवस्था हेतु जे रपट देलनि ताहिमे मधुपुरकें पाँच गोट हैंड पाइप भेटलैक । एक टा नन्दकिशोरक दलानपर गड़लैक, दोसर मोहन पंडितक सामनेक देवीथानपर । एक टा दछिनवारि टोलक प्राइमरी स्कूलपर, चारिम हरिजन टोलीक लेल पोखरिसँ सटले पूब । पाँचम कतऽ गड़य ताहिमे कमीटी प्रस्ताब कयलक जे पोखरिपर गाड़ल जाय, जतय लोक बेर-कुबेरमे—बाढ़ि-पानिमे—आबि रहैत अछि ।

एहि बेर तुलसी तनि गेल जे धनुकटोलीक लोककें डीह वा पछ-वारि टोल पानि भरय जाय पड़ै छै, से उतरवारि टोलमे अवश्य गड़य । जँ पोखरिपर जरूरी बुझी, छैको से, तँ डीह टोलमे नन्दकिशोर बाबूक ओहिठाम तँ पक्का इनार छैके, तें ओ एहीठाम गाड़ल जाइक ।

दू-चारि बेर नन्दकिशोर ऐं-ऊँ तँ कयलनि मुदा लोक सभक रुखि देखि चुप लगा गेला । संगहि तुलसीक ई रुखि हुनका बड़ कटु बुझयलनि, ओ कटि कऽ रहि गेला ।

पोखरिओक भीड़पर तुलसीक जोरें एक टा कल गाड़ल गेल । तुलसी एकरा अपन प्रस्तावक कोनो जीत नहि बुझलनि मुदा नन्द-किशोरकें एहिमे अपन हारि बुझा पड़लनि—नेतागिरीक चढ़तीमे जेना हुनका गिरान-भटकान सुझा पड़लनि ।

एगारह

बाढ़िमे सीदित गाम-समाजक लोक कोना समय कटैत रहल, से कहवा-सुनवा योग्य नहि । नीचाँ समुद्र उछलैत, उपर मेघ बरिसैत, बीचमे झाँट-बसात थरथरबैत ।

भीजल देह, तीतल कपड़ा, माथ झपबालेल ने छात-छज्जा ।

खयबा लेल भात-रोटीक समाधान नहि, पिउबा लेल इनार-पोखरि एकटार भेने पानिओक सन्धान नहि।

दूर-दराज गाम, नदी-बान्ह टूटल, सड़क डूबल। के राहत पहुँचाबय अबैछ? के पैकेट पठबैछ?

नेना भूख-प्यासेँ चिचिआ रहल अछि, रोगी दुःख-पीडेँ घिघिआ रहल अछि, बूढ-बुढ़ानुस हपसिआ रहल छथि, जवान-सेयान घबरा रहल छथि!

तैओ लोक जिविते रहल, कनितो-कनितो हँसिते-बजिते रहल। पानिसँ नकदम होइतहुँ, पानिक बढ़वा-घटवाक खेल देखिते रहल।

डाक-तारक संचार नहि, एजेन्ट-हॉकरक आवर्याते नहि। तेँ अखवारो पहुँचयवाक प्रकार नहि। तथापि कोना ने कोना खवरि उड़ि-उड़ि कऽ लोककेँ लगिते रहैक। कतऽ कते लोक बहि गेल अछि, गाछपर लटकि कऽ माल-जाल कतऽ पात खाइत बचि गेल अछि, सन्दूक भसिआइत कोना ककरा परि लागि गेलैक, चौकी-खाटपर सूतल-बैसल नेना कोना दहैत-भसियाइत कतहु कात लागि बचि गेल अछि। ताहि सभक खबरि लोककेँ चमत्कृत कऽ रहल अछि। छतपर दस दिन धरि भूखेँ-प्यासेँ परिवार कोना दिन-राति काटि लेलक से सब सुनि-सुनि कऽ लोक अपन दुःख सह्य कऽ लेलक।

कतऽ परिवारक परिवार बहि गेलैक, टोलकटोल धाराक प्रवाहमे बहि गेल। कतऽ, कतेक गामक नक्शा मेटा गेल - तेहन-तेहन विपत्ति गाथा लोक सुनलक जे अपन विपत्ति हलुका गेलैक।

किन्तु जकर समाङ कतहु बाहर गेल छलैक; कुटुम्ब-परिवार जँ आन कोनो गाममे रहैत छलैक, तकर हाल-समाचार बुझवाक उत्कंठा, व्यग्रता ओ चिन्ता सभक माथकेँ चकरौने छल।

जखनहि पानि घटलैक, रास्ता कने-मने खुजलैक, अपन लोकक खोज-पुछारि सब करय लागल। घरक आगि मिझयलेपर अड़ोस-पड़ोसक लोक सुधि लऽ पबैछ।

रधियाकेँ अपन नैहरक हाल चाल बुझवा लेल छटपटी लागल छैक। बाप अपन मालिकसँ झगड़ कयने छैक। बेटीक बिआह लेल उताहुल माथपर की बितैत हेतैक? सबिया कोना होयत? ओ जखन सुनने होयत जे हमर देओर कोना पंचक बात नकारि देलनि, तखन ओ की कोना झमान भेल असमानसँ खसल होयत? से सब सोचि-सोचि कऽ घर भरि लोक गलि गेल होयत।

जखने रस्ता कने चालू होयवाक गप बुझवामे अयलै, आन गामक लोक एतय अपन सर-सरोकारीक पुछारीमे पहुँचि रहल अछि से जनतब भेलैक, तँ इहो अपन घरबलाकेँ खोचारऽ लागलि — केहन अहाँ छी, कने अपन सासुर सँ तँ भऽ अबितहुँ? सुनैछी जे कमला बलान द्वहू हमरा गाममे कोहराम मचा देने अछि, कने खोज-पुछारी तँ कऽ अबितिऐक? बौआकेँ कहितिऐन, ओ तँ छड़पि कऽ जैतथि, मुदा से तँ ओ पंचैतीक बादसँ ओम्हरका नामो चर्चे ने करै छथि। आदि आदि।

छीतन देहपर चादरि लेलक, छड़ी उठौलक, छाताक बन्हन ठीक कयलक। उठि बिदा भेल।

हकासले-पियासले सासुर पहुँचलापर छीतन देखै छथि, 'ने ओ नगरी ने ओ ठाम' घर ढहल पड़ल अछि, केओ कतहु नहि! बहर-घरामे एकटा जौड़खट्टापर एगोटे बैसल तमाकू चुना रहल अछि। पुछलापर ओकरेसँ पता लगलैक—'बाढ़िमे घर तँ ढहि गेलै छलैक। कने पानि निघटलापर जखन ड्राइबरखबास घर ठाढ़ करय लागल, तखन मालिकक पठौल दू गोट लट्ठधारी पहलबान रोकि देलकैक। ओकर कहब छलै जे, जखन ओ मालिक सँ बागी भऽ गेल। हुनक कहबामे नहि रहल ओ नोकरी धरि छोड़ि देलक, तखन घरो छोड़ि देओ। जतय मन अबै, जा' बसओ। एहि ठाम एकटा आँटा-मिल ठाढ़ हेतैक, तकर सूरसार भऽ रहल छैक।

सुनैछी जे एहिपर ओ एकटा बंगाली बाबू, जे रिटायर भऽ कऽ मधेपुर छोड़ि कलकत्ता घर आपस जाइत छला, तिनकेसँ ठीकठाक

कऽ हुनके ड्राइवरी करय ओतहि चलि देल। परिवारो सभ संग गेल छैन। हमरा एतवा बात बुझल अछि।'

छीतन धुरिअयले पैरें चोटहि गाँम फिरल। रधिया ई गप्प सुनि पेटकान लाधि देलक। तुलसी कते कहि-सुनि बोध-प्रबोध दैत कहलक जे 'हम पता लगाय, ओतय जायब। कोनो चिन्ता करबाक काज नहि। हमरा बुझल अछि जे बंगाली बाबू बड़ नीक लोक छथि, खूब सम्पन्नो छथि। परिवारमे हुनका एकटा विधवा बेटी मात्र छन्हि। नोकर-चाकरके समाङ जकाँ रखैत छथिन। कलकत्तामे हुनका मकान छन्हि। कतऽ कोन महल्लामे छनि से हुनक नजदीकी दोस्त-मीत बाबू साहेब लोकनिसँ पता लगबय हम कालिह-परसू मधेपुरसँ भऽ अबैत छी। तखन फेर कलकत्ता जायब।'

रधियाकें कने सन्तोष भेलैक। स्वयं तुलसी सेहो कम चिन्तित नहि छल। ओकर मन सेहो ओकर पता लगयवा लेल व्यग्र जकाँ। से भेने भाउजिक चिन्ता दूर हेतैक, संगहि कोनो मधुर मूर्तिक झाँकी सेहो मेटि सकतैक। जँ कान रधियाक तृप्त हयतैक तँ आँखि तुलसीओक जुड़यतैक।

फलतः परसू नहि प्राते, तुलसी साइकिल उठाय मधेपुर चलि देलक। मुदा ओ साँझे फिरिओ आयल। बंगाली बाबूक प्रसंगे एतबो पता चललैक जे ओ कलकत्ता छथि, एमहर्स्ट स्ट्रीटमे, किन्तु घरक नंबर पता नहि चललैक। कहल गेलैक जे हुनक एक दोस्त समाङ पटना अस्पतालमे छथि। हुनकेसँ ठीक पता लागत। जतबो पता भेटलैक, डायरीमे नोट कैलक। से कंठोमे, हृदय-पटोमे अंकित भेलैक। ओहि संग एक बालाक छबि सेहो झलकि अयलैक।

कहिआ, कोना, से बुझिकय ओतय जायब। तकर आयोजन सोचैत-चिन्तैत ओ आधासँ ऊपर राति आँखिमे काटि देल। आँखि कखन लगलैक से तँ नहि बुझलक, परंच जखन से खुजलैक तँ दिन-कर बाँस भरि ऊपर आबि गेल छला।

बारह

नोटिस इलाका भरिमे बाँटल जा रहल अछि, स्थान-स्थानमे पोस्टर सटा रहल अछि जे मधेपुरमे मैथिल महासभा होयत। बड़े-बड़े मैथिल नेता पंडित वकील कबि-साहित्यिक सब सम्मिलित होयता। महाराज दरभंगा, जे मिथिलेस कहबै छथि, ओकर आजीवन सभापति छथि, से सदल-बल औता। मिथिलाक उन्नति कोना हो, मैथिली भाषा-साहित्य-लिपि ओ संस्कृतिक विकास कोना हो, ओकर संगीत कलाक प्रचार कोना हो, सामाजिक उत्थान कोना हो, ताहि सभपर विद्वान् अधिवक्ता समाजनेता लोकनि विचार व्यक्त करता। एहि अवसरपर कविसम्मेलन, विद्वत्सम्मेलन, गायकसम्मेलन आदि सेहो आयोजित होयत।

नोटिस पढ़ि तुलसीकेँ मन उत्साहित भऽ उठलैक। किन्तु जखन ओ आगाँक अंशमे पढ़लक जे मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थक समाज मात्रकेँ सम्मिलित होयबा लेल आह्वान कयल गेल छैक तखन ओकर मन कनेक उदास भऽ अयलैक। ओ सोचलक, जखन मिथिला-मैथिलीक उत्थानक उद्देश्य राखल गेल अछि ओ मैथिलक महासभा कहल गेल अछि तखन तँ मिथिलामे रहनिहार, मैथिली-भाषी समस्त समाजकेँ एहिमे सम्मिलित होयबाक आह्वान चाहैत छल।

अथापि ओ मनमे निश्चय कयलक जे सभा कोनहु होइक, ओहिमे दर्शक रूपेँ तँ अवश्य सम्मिलित भऽ सकैत छी। सभाक उद्देश्य यदि व्यापक अछि तखन तँ एहि विषयपर अधिकारी लोकनि सँ विचार-विनमय सेहो कऽ सकैत छी। एहि सब विषयमे कने स्वागत-समितिसँ पहिने बुझि-सुझि ली।

सभासँ एक सप्ताह पहिने ओ स्वागताध्यक्षसँ भेंट करय पहुँचल। नाम-गाम पुछला उत्तर ओ बैसबाक इसारा कयलथिन। अपने ओ तख्तपोसपर मसलङ्पर ओङठल बैसल छला। इसारा नीचामे राखल पटिया दिस कयलथिन। कने अनसोंहात अवश्य लगलैक, परंच बाबूसाहेबक ओतय किछु एही प्रकारक व्यवहार अपन समाजहुक लोकसँ देखने छल तेँ एकरो कने सम्मानजनके बुझि बैसि गेल आ महासभाक अधिवेशनपर प्रसन्नता व्यक्त करैत जिज्ञासा कयलक जे सभामे हमरहु लोकनि सम्मिलित होबय चाहैत छी। जखन मिथिला-मैथिलीक उत्थानक हेतु संस्था उद्देश्य रखैछ तखन ओहिमे आस्था रखनिहार हमरहु लोकनिकेँ की भाग लेब संभव होयत ?

प्रश्न सुनि स्वागताध्यक्ष बाबूसाहेब कनेक काल गुम्म पड़ि गेला। कहलथिन–'बात अहाँक बेजाय नहि, परंच एहि विषयपर स्वागतमंत्रीसँ गप्प करू गय।' ई कहि ओ एक व्यक्तिकेँ संग लगाय देल, जे हुनका लगेक एक मकान दिस लऽ जाय स्वागतमंत्री सँ भेँट कराय देलनि। ओ काजमे व्यस्त छला, दू गोटे जे निमन्त्रण कार्ड पर नाम लिखैत छलथिन तनिका किछु नाम निर्देश कऽ रहल छथि। दोसर दिस किछु गोटेकेँ सभामंडपक तैयारीक दिशानिर्देश सेहो दऽ रहल छथि। किछु गोटे ठाढ़ेठाढ़ खान-पानक व्यवस्थाक लेल विचार पुछि रहल छलथिन। ओही व्यस्ततामे हिनका देखि कहलथिन–की थिक ?

तुलसी ठाढ़ेठाढ़ कहय लगलनि–'हम आयल छलहुँ जे महासभा एतय भऽ रहल अछि, ओहिमे हमरो लोकनिक योग्य सेबा जे होअय से हमरो आदेश करी। मिथिलामे हमरो लोकनि रहै छी, मैथिली सँ हमरो सभकेँ प्रेम अछि। तखन एहि पवित्र उद्देश्यमे हमरो सभकेँ योगदान करब कर्त्तव्य बुझि पड़ैछ। और नहि किछु तँ स्वयंसेवकोंमे रखबाक आदेश करी।'

'हँ हँ, से तँ हमरो सभ चाहैत छी। अहाँ कतय रहै छी, नाम की अछि, की करैत छी ?'

'मधुपुर घर अछि। हमरा लोक तुलसी मंडल कहैछ ? हाइ स्कूलमे मैथिली पढ़ा रहल छी ?'

किछु गंभीर भऽ कऽ कहलथिन-'अहाँक विचार उत्तम अछि। परंच ई सभा जातीय थिकै, एहिमे मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ सैह सम्मिलित होइ छथि। मैथिली साहित्यपरिषदक सेहो आयोजन होइ छै—ओहिमे अहाँ अवश्य आबी।'

तुलसी प्रणाम कहि चोट्टहि विदा भेल। सभा देखबाक एकटा योग-सूत्र भेटि गेने, मनमे कने सन्तोष भेलैक।

अधिवेशन दिन किछु संगी-साथीकेँ नेने तुलसी सभा मैदानमे पहुँचि कऽ देखलक, एकटा जेना नगरे बसल हो। विशाल सभा-मंडप, तंबू-कनात घेरल सभापतिक ओ हुनक स्टाफक आबास। प्रमुख अधिकारीक लेल रावटी ओ अतिथि लोकनिक आवासक हेतु मैदानक कातमे स्थित स्कूल भवन। फाटकसँ सभामंच धरि मेह-राव-घेराव ओ झाड़फनूस। जगह-जगह लाइट ओ लाउडस्पीकरक भोंपू लागल। वैजधारी स्वयंसेवकक धारी एम्हरसँ ओम्हर करैत।

तुलसी कुर्त्ता-चादरि ओ पागधारी नन्दकिशोरहुँके अपन गिरोह संग घुमैत देखलक। मुख्य फाटकपर नियुक्त स्वयंसेवक पहिने प्रवेश रोकि, पुनः पछिला फाटकसँ दर्शकक लेल नियत स्थान दिस इसारा कयलक जेम्हर बहुतो लोक उत्सुकतासँ विशेषतः महाराजकेँ देखबा लेल जमा छल। इहो ओतहि जाय ठाढ़ भऽ गेल। देखलक, पागक समुद्र लहरा रहल अछि।

सदल-बल मिथिलेश अयला। मंचपर आसीन होइतहिँ जय-कारक घोल मचल। वैदिक लोकनि वेद मन्त्रोच्चारण करय लगला। पण्डित लोकनि श्लोक पढ़ि-पढ़ि आशीर्वचन सुनबय लगला। फेर स्वागत-गीत भेल, अभिनन्दन गोटेक दर्जन पढ़ल गेल – स्वागत-समितिसँ, पंडित शाखा सभासँ, स्थानीय संस्था सभसँ, किछु समाज-

गत, किछु व्यक्तिगत, किछु कास्केटमे, किछु फ्रेम भरल, किछु सादा-सादी, एकाध हाथसँ लिखल तिरहुता अक्षरहुमे अभिनन्दनपत्र अर्पित भेल ।

स्वागताध्यक्ष छपल भाषण पढ़ब शुरू कयलनि, बीचमे हुनका कने रुकैत-हकमैत देखि, स्वागतमन्त्री हुनक भाषण सभापतिक आज्ञासँ पढ़ि सुनाओल । महामन्त्रीक प्रतिवेदन छपल छल, परंच अधिकांश हुनक भाषण मौखिके भेल । तदुत्तर सभापतिक संकेतेँ राजपण्डित उठला । ओ लाउड स्पीकरकेँ हटाय देलनि तथा अपन मेघ-गंभीर ध्वनिमे समाजकेँ सभाजित करैत स्वागत-समितिकेँ अध्यक्ष ओ महासभाक सदस्य दिससँ धन्यवाद दैत, मिथिला देशक पूर्व गौरवकेँ स्मरण करबैत मिथिला-मैथिलीक उन्नतिक लेल युवक लोकनिक आह्वान कयलनि । हुनक ओजस्वी भाषणक बीच-बीचमे थपरीपर थपरी बजैत रहल । हुनक भाषण सभाक शिथिल कार्य-क्रमकेँ जेना द्रुतगति दऽ देने हो ! आब अध्यक्षीय भाषण होयत, सचिव घोषणा कयलनि ।

एही बीच दर्शक-दीर्घासँ एक स्वर सुनि पड़ल–'श्रीमान् लोकनि ! सभाक आयोजनसँ, अपने लोकनिक दर्शनसँ हम सभ जनता कृतार्थ छी । संगहि निवेदन करय चाहै छी, जखन महासभा मिथिला-मैथिलीक उन्नति चाहैछ, समग्र मिथिलावासीक उत्थानक उद्देश्य रखैछ, तखन ई अपन सदस्यता किएक जाति विशेषे धरि सीमित रखने अछि ?'

'बैसि जाउ, बैसि जाउ' सभा एके बेर एक स्वरसँ चीत्कार कय उठल । स्वयंसेवक सब वक्ताक दिस दौड़ि पड़ल । सचिव महोदय माइकसँ सबकेँ शान्त करैत कहलनि–-'सभाक कार्यक्रम चलय दिऔक । सभाक बाद वक्ता महोदयसँ आग्रह जे हमरासँ गप कय लेथि, हुनक समाधान भऽ जयतनि । हम हुनका आह्वान करैत छिऐन जे काल्हुक साहित्य-परिषदमे ओ सम्मिलित होथु । ओ तँ सभक लेल एही हेतुएँ खुजल अछि ।'

तुलसी चुप छलाह। स्वयंसेवकके चुप करबाक प्रयोजन नहि पड़लनि। ओ सभाक बाद मन्त्रीसँ गप होयबाक आश्वासनकेँ अपन मन्तव्यक पूर्णते बुझलनि।

अध्यक्षक भाषणक बाद, धन्यवाद ज्ञापन भेल। सभाक मुख्य अधिवेशनक प्रथम पर्व समाप्त भेल।

सभाक समाप्त भेलाक बाद किछु काल बेस चहल-पहल रहल। अध्यक्षकेँ कैम्प धरि पहुँचयबामे कार्यकारिणी ओ स्वागतसमितिक सदस्य व्यस्त देखल गेला। पाछाँ क्रमहि भीड़ हटल, लोक सब अपनामे कतहु चलैत-फिरैत, कतहु ठाढ़े, कतहु आसन जमाय गप करैत छल।

तुलसी एम्हर-ओम्हर से सब देखैत आगाँ बढ़ल तँ देखैछ जे मंडपक बाहर एक ठाम किछु गोटे ठाढ़ गप-सप कऽ रहल छथि। ओतहि पंडित मोहन मिसरकेँ सेहो ठाढ़ भेल देखि ई प्रणाम कयल। ओ लपकिकेँ तुलसीकेँ नेने जाहि व्यक्तिकेँ प्रणाम करय कहलथिन ओ मुख्य वक्ता राजपंडितजी छला। ओतहि महासभाक सचिव महोदय सेहो उपस्थित। तुलसी झुकि कऽ तीनूकेँ प्रणाम कयल। मोहन मिसर परिचय देलथिन—'हमर गौआँ तुलसी मंडल थिका, मैथिलीक भक्त छथि, हाइस्कूलमे सेहो पढ़ा रहल छथि। अपने सभक दर्शन करबाक उत्कंठा छलनि, हमहि संग नेने अयलिऐन। अपने काल्हि हिनका आहूतो कयलिऐन अछि, ई दोहो-कबित्त लिखै छथि, से अपने सभक आदेशसँ सुनयबो करता।'

दूहू गोटे ध्यानसँ देखैत कहलथिन– 'यैह ने सभामे किछु जिज्ञासा रखने छला? हँ हँ, हिनक कहबाक उद्देश्य बहुत नीक। परंच अवसर तकर नहि छलैक, तेँ बादमे गप्प करऽ कहलिऐन। औ बाबू! मिथिला-मैथिलीक उन्नति हमहुँ चाहैछी। मुदा एकर रूप जातीय छैक। जे अपनाकेँ सदासँ मैथिल कहैत अयला—मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ– जे हरिसिंहदेवीक पाँजि-पाटिसँ बन्हल छथि– तनिके ई संगठन थिक। तखन हमरालोकनि मिथिलामे

बसनिहार सभ जाति-बन्धुक उन्नति चाहैछी, सब बिकसित होयत, तखन ने मिथिलाक विकास सिद्ध होयतैक ? तें महासभाक उद्देश्य सभक हितकारी राखल गेल छैक, हमरा सभक बिचार संकुचित नहि अछि ।'

'से तँ भेलैक, परंच तखन तँ मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण-कायस्थ सभा सैह नाम उचित होयतैक। मैथिल महासभा कहने तँ मिथिलावासी मात्रक ई महासभा बुझि पड़ैछ । उद्देश्य जँ तेहने छैक तँ की क्षति जे आनो वर्गके एहिमे सदस्य रूपें समेटि लेल जाय । हमर तँ सैह निवेदन छल ।'

पंडितजी गपके समेटैत कहलथिन– 'औ मंडलजी, अहाँक बिचार बड़ दिव्य । मुदा ई तँ एके बेर नहि सधि सकैछ । एक देशक वासी रहनहु, एक भाषाभाषी रहनहुँ, जाति-जातिक अपन समस्या होइछ ? आचार स्वभावेसँ अपन रीति पद्धति भिन्न भिन्न रहैछ । यदि एहिना सभ जाति अपना-अपनी सभा संगठित कऽ अपन-अपन सामाजिक समस्या के सोझराय मिथिला-मैथिलीके अङेजैत चलय तँ एकदिन औतैक जे, अहाँक जेना विचार अछि, मिथिलाक महाजातीय संस्था खण्ड-खण्डके अखण्ड रूपमे समेटि लिअय । सेहो संभव होयतैक । अहाँ सभ युवक छी, अपन अपन संगठनमे लागि जाउ, तखन फेर अनायासे सामूहिक समाज संगठित भऽ जयतैक । हँ, काल्हि कविगोष्ठीमे अबैतछी कि ने ? कोनो अपन रचना अवश्य नेने आउ ।'

गपके वेसी नहि बढ़ाय तुलसी सबके प्रणाम कहि विदा भेल ।

पंडितजी विद्वत्सम्मेलनक लेल गप्प हेतु मोहन मिसरके रोकि लेलनि। तुलसीक गेला पर कहलथिन– 'हौ पंडित, मंडल बोद्धा बुझि पड़ैछ । नन्दकिशोर जे आबि कऽ कहने छल, मंडल किछु गोटाक संग लय सभामे हुरदुङ मचबय चाहैछ, से बात नहि ।'

तेरह

तुलसी दोसरो दिन सभा देखबा लेल रुकि गेल। परंच काल्हि जेना अजनबी भऽ कऽ छल, से आइ चिन्हरगर भऽ कऽ दूर-लगसँ कार्यवाही देखबाक अवसर भेटलैक।

९ बजेसँ विद्वत्परिषद राखल गेल छल। किछु पंडित, किछु धार्मिक विचारक लोक थोड़ संख्यामे जुटला। तुलसीकेँ आशा छलैक जे विद्वान लोकनि समाजक संस्कार हेतु शास्त्र-विचार सुनौता, अथवा पाण्डित्यक चमत्कार देखौता। किन्तु विद्वत्परिषदमे केवल पर्वनिर्णयपर विचार होइत रहल। एकादशी पूर्वविद्धा वा परविद्धा? जितियाक पारणक मुहूर्तक दण्ड--पल की ? वृहस्पतिक वक्रगतिएँ अतिचारक मान्यता किएक ने? एहिना ज्योतिष विचारक द्वैधक संग, एहू प्रकारक कर्मकाण्डीय जिज्ञासा चललैक जे जखन अक्षत कहल गेल अछि तखन चाउर तँ क्षत भऽ कऽ बनैछ, तँ धानेक किएक ने अक्षतमे प्रयोग हो? धर्मशास्त्रक विचार प्रसंग इहो चर्चा चलल, मासिक अशौच लगनिहार जे तेरहा करऽ लागल छथि तनिक स्पृष्ट जल द्विज कोना ग्रहण करथि? आदि-आदि वादपर प्रतिवाद चलल परंच विवादक अंत नहि भेल। राजपंडित सभकेँ बुझाय-सुझाय निवृत्त कयलनि।

तखन परिषदक आयोजकत्वमे कविगोष्ठी चलल। पहिने स्थानीय कविलोकनिकेँ कविता पढ़य कहल गेलनि। षड्जसँ निषाद धरिक सुरमे बान्हि केओ गीत गौलनि, केओ कवित्त-दोहा-छन्द दोहरौलनि, केओ मुक्तवृत्त पढ़ि सुनौलनि। तखन सधल-सफल कवि लोकनिक सरस कविता प्रवाह सेहो चलल, सभा जमि गेल छल। वाह-वाही थपरी बीच-बीचमे सभामंडप गनगनाइत रहल।

एही बीच 'तुलसी मंडल'क नाम सेहो आहूत भेलनि। ओहो अपन कविता सस्वर पढ़लनि,---रातिए जागि कऽ लिखने छला। कविता अन्योक्तिमय छल, बड़क गाछ सँ कहल गेल छलैक जे छाया देनहि अहाँक नाम बड़ अछि। बटक आश्रय जें भेटैत छैक तैं बाट-बटोही कहि परिचित होइछ। बड़रोहिक शाखासँ अहाँक मूल्य अछि। से जँ अपन छाया थोड़बे दूर धरि समेटि राखी तँ अहाँ निष्फल, नीरस, निरर्थक मानल जायब आदि।

अन्तमे परिषद-मंत्री कबिगणकें धन्यवाद दैत परिषदक स्नातक रूपमे नामोल्लेखपूर्वक तुलसीकें प्रोत्साहित कयलनि। महासभाक मन्त्रीजी मंडलजीकें रजत पदक देबाक घोषणा कयलनि।

गायक सम्मेलनक बाद विद्यापति संगीतसँ प्रातःकालीन गोष्ठी समाप्त भेल।

तुलसीक यावतो मनोग्लानि धोआ गेलैक। ओहीठाम दोसर दिस स्वयंसेवक रूपमे काज करैत नन्दकिशोरक हृदयमे जेना कादो घोरा गेलैक।

दोसर दिनक खुला अधिवेशन जेना गुलगुला गेल होइक। अध्यक्ष मिथिलेश कार्यबिशेषें दरभंगा चल गेला, हुनका संग जेना सभाक रौनके उठि जाइक। अध्यक्षता स्वागताध्यक्षे कयलनि। विषय निर्धारिणी द्वारा निर्धारित प्रस्ताव सभ समर्थित अनुमोदित होइत रहल। वक्ता लोकनि अनेक छला, परंच एकटा श्रोता-मुख्यक अनुपस्थितिसँ सभक सरस्वती जेना उदास भेलि पड़लि होथि। जेना-तेना समदाउनिसँ सभा समाप्त भेल।

आजुक शिथिल कार्यवाहीसँ तुलसीकें भान भऽ गेलैक जे महासभाक महत्ता कतऽ अछि, कथी लऽकऽ अछि। एकर सत्ता अतीतमे जते जड़ि बन्हने रहौक, वर्तमान शाखा जते चतरल-पसरल बुझि पड़ौक, परंच भविष्यक भव्यता चिन्ताजनके छैक।

हँ महासभाक मन्त्रीक ओ प्रमुख सदस्य पंडितजीक ओ बात कानमे ध्वनित-प्रतिध्वनित होइत रहलैक जे जँ प्रत्येक जाति-वर्ग अपन-अपन सामाजिक उत्थान हेतु संगठित भऽ जाय तँ समग्र जन समाज सामूहिक रूपेँ स्वतः महाजातिक रूपमे परिणत भऽ सकैछ। यदि मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण-कायस्थ जकाँ मैथिल राजपूत, मैथिल यादव, मैथिल कुर्मी, मैथिल धानुक, मैथिल पासवान एहि रूपेँ सभ वर्ग संघटित भऽ जाय तँ एक मैथिल महासंघक रूप स्वतः विकसित भऽ सकैछ। सीढ़ी दर-सीढ़ी चढ़ि कऽ मंजिल धरि पहुँच जा सकैछ। एहि लेल मैथिल महासभाकेँ गोहारिक प्रयोजन नहि।

से सोचि तुलसीकेँ जेना संगठनक एक गोट रूप मनमे रेखांकित भऽ अयलैक। ओ किछु उत्साहिते भऽ कऽ किछु प्रेरणे लऽ कऽ सभासँ फिरल।

चौदह

महासभासँ फिरलाक बाद समाज-संगठन करबाक योजना तुलसीक माथसँ घुरिया रहल छलैक। सबसँ पहिने अपन टोलहिमे से करबाक निश्चय कयलक। दस घर धानुक, पाँच घर केओट ओ सात अमातक घर छलैक। पहिने नाम की राखल जाय? सोलकन्हसमाज? नहि, सोल्हकन नहि ठीक। टहलू संघ? से ताहूमे हीनभावना झलकिते छैक। तखन खबास-समाज? खबासमे गुलामीक गंध छैक! तखन? गृहश्रमिक-संघ। हँ यैह ठीक रहतैक।

तखन उद्देश्य की सभ राखल जाय? गृहश्रमिक लोकनिक सामाजिक उत्थान। ताहि हेतु पहिने आर्थिक सुधारक हेतु मजदूरी

बढ़बाक चाही। घर-घरसँ सेर भरिक हिसाबें जे सीधामे कोरा अन्न भेटै छैक ताहिमे धान नहि, जँ चाउर खाइत जाइ छथि तँ सैह देल करथु। ऐंठ खायब मानसिक ओ स्वास्थ्य समस्याक दृष्टिएँ वर्जित हो। तें फराक अन्न नापि दैत जाथु। काज कयनिहारकें परिवारो छैक ताहि हेतु खेतक उपजामे की तँ अन्न नपबथु, नहि तँ ताहि लेल खेते बाछि कऽ राखि देथु।

परंच आर्थिक माङ जनिकासँ कयल जायत तनिको तँ मंजूर होइन ? ओ दैयो सकथि तखन ने ? माङक चर्चेपर डीह-टोलमे हल्ला उठि गेल । पछबारी टोलक लोक तँ अपनो हाथें काज कऽ लै छथि मुदा डीह टोलक भलमानुसकें तँ टहलू बिना काज नहि चलैत छनि।

परंच आर्थिक स्थिति तेहन नहि जे ओ एकरा पूरा कऽ सकथि, तें एहि ठाम हुनको सभक सहमति चाही। से सहमति कोना हो, एहि लेल पाँच गोटे माङ राखय गेला। उत्तर भेटलनि, से आइ की भेल छैक जे ई नव व्यवहार चलय ? अदौसँ हमरा लोकनि जे जेना करैत अयलहुँ, जतबा दैत अयलहुँ ततबो सधब कठिन अछि। जे सभ उपजाबाड़ी होइछ से सब ओकरे सबकें सुनझा दी तँ अपना सभकें कोना काज चलत ?

समझौता नहि भऽ सकल, तखन एम्हरोसँ काज बन्द कऽ देल गेल, ओम्हरोसँ सीधा बंद भऽ गेल। गोटेक सप्ताह धरि दूहू दिस तनातनी। नतीजा भेल जे गृहस्थ लोकनिक स्त्रीगण बर्तन-भाजन चौका-पीढ़ी अपने करैत अकछा गेली आ' टहलटिकोरा कऽ कऽ गाय-महीस चरा कऽ जे नेना-भुटका पोसाइत छल से पहिल चोट पड़लैक तँ एम्हरो झुकाव आयल।

दूहू दिस कने ठेहिआयल तँ बिचविचावसँ बीचक रास्ता बहर-यलैक। ऐंठकूठक बदला सीधा नपाय लगलैक। टका-टुकुर दर-माहाक बदला, जकरा जेहन सधलैक पाँचसँ दस कट्ठा धरि खेत जोत-कोड़मे खवासकें भेटलैक। भार नहि उठाबय तँ नहि उठाबओ,

चङ रा-मोटा तँ पहुँचा सकैछ। कोड़ा अन्न जँ देथि तँ ड्योढ़ा तौलि देथि। एहि तरहें समझौता भेल। गृहथानि लोकनिकें राहत भेटलनि, एम्हर नेना-भुटकाकें बोधवाक किछु गओं सेहो भेटलैक।

एहि आन्दोलनसँ तुलसीक सर्वप्रियतामे कने कमी अवश्य अयलैक जे ई पढ़ि-लिखि गेल तँ बखेड़िया भऽ उठल अछि। गामक फसादीमे एक दिस एकर नाम लोक लिअऽ लगलैक। तकरा बदनामीमे सबसँ बेसी आवेसी देखल गेला नन्दकिशोर, जे ठीक रास्ता पर अनबा लेल अपन संगी-साथीकें बहकाबऽ लगला। ओम्हर दोसर दिस सुधारक रूपमे ई प्रशस्ति सेहो पौलक, अपन समाजक तँ सहजहि, आनोआन टोलक लोक एकरा मान्यता देमऽ लगलैक।

तुलसीकें एहिसँ सन्तोष नहि। ओ बुझैछ जे एहि सबसँ किछु विशेष भेनिहार नहि। मनुष्य ज्ञानसँ मनुष्य बनैछ। ज्ञानक जरिया थिक शिक्षा। शिक्षाक आधार अछि पहिने अक्षरज्ञान। तें तँ सबसँ पहिने ताहीपर ध्यान देवाक थिक।

तावत् स्कूलसे गर्मीक छुट्टी सेहो भऽ गेलैक। ओ सोचलक, एहि छुट्टीकें किएक ने एहि लेल उपयोग कयल जाय? ओ एकटा एकचारी दलानपर भट्ठा-खड़ी, स्लेट-पेन्सिल, कापी-कलम ओ प्रारंभिक वर्णपरिचय जुटा कऽ पढ़ायब शुरू कयलक। किछु गोटेकें हकारि अनलक, उत्साहसँ पढ़ाइक काज आरंभ भेल। दू-चारि दिन लोक, विशेषतः किशोर युवक जुटबो कयल। परंच बादमे संख्या पतराय लागल।

बयसाहु भट्ठा आब की धरथु? स्त्रीगणकें पढ़बा-लिखबासँ मतलबे की? नेना भुटका जे अबैत छल से तँ लोकक गाय-महीस चरा कऽ पोसाइत छल ओ छोड़य कोना? हँ, किछु गुल्ली-डंडा खेलनिहार, तास भजनिहार मनुष्यकें अवश्य पकड़ल जा सकल।

सबसँ कठिनता ई बुझा पड़लैक जे श्रमिकवर्गकें अपन रोजी-रोटी लेल दिन भरि खटय पड़ैत छैक से दिनमे पढ़ि लिखि कोना

सकैछ ? ओ अपनहु स्कूल खुजला पर दिनमे समय कोना दऽ सकत ? रात्रि-पाठशाला जँ चलंत रहय तँ किछु अवश्य काज चलि सकत। तेँ तत्काल सैह रहओ। परंच से सब तँ होइछ देखा-देखी, सामाजिक व्यबहारसँ। ताहि लेल तँ गाम-गाममे एहि तरहक व्यवस्था चाही। तेँ जातीय संगठन जे चलैत आयल अछि, सामाजिक पर-पंचैती लेल जे लोक सभ मान्य छथि, तनिक सहयोग लेल जाय।

तावत परगन्ना भरिक पर-पंचैती लगे गाममे होयवाक सूचना भेटलैक। ओहि सम्बन्धमे जातीय भोज देल जा रहल छलैक तकर नोत तुलसीओकेँ भेटलैक। छीतन छड़ीदार छला, ओ गाम भरिकेँ हकारि देलनि। हुनके संग इहो जायत आ' एहि सम्बन्धमे पंच लोकनिसँ वार्तालाप करत।

पन्द्रह

छीतन दुहू भाइ पंचायतमे तमुरिया गेल छथि। रधिया सोचि रहल अछि—एही पंचैतीसँ तँ सबियाक बिआहमे रोक पड़ि गेलैक। पंच सभ केहन अविचारी रहै छथि जे नीको समंधमे-कुटमैताक लोकमे कुटमैतीपर पावंदी लगा दै छथि—भोज करू, जातिभाइकेँ खोआउ-पिआउ। दू मोन-चारि मोन चाउर रान्हू। जातिभाइकेँ भात खुऐनहि बात बनय, ई कोनो बात भेलै ? तुलसीबौआ सेहो तेहन जिद्दी जे ओहन सुन्नरि कनेआ तकरा लेँ जँ दूचारि मोन चाउरो लागि जाय तँ की छलै ? ओते नइ जुटितै से बात नहि, हमरो लग तँ किछु जमा छैके ताहिसँ दू मोन के कहय, दस-बीस मोन जखन चाही तखने लऽ सकै छी। सोन सन कनेञा ओ रतन सन वर, केहन जोड़ी जुड़इतैक ! जो रे पंच ! तोरा सबके जँ नीक नहि सोहाइ छौ तँ अपनो नीक नहि होयतौ !

बौआ, सेहो तेहने ? लोक बुधियार कहै छनि, मुदा बुद्धिसँ जिद्द बेसी छनि। जिद्द खाय अपने बुद्धि खाय अनका। से अनका नहि बिगड़लै, अपने बिगाड़ि लेलनि। ओहन बुधिआरि लुरिगरि ओ देखबो-सुनबामे तेहने। अपना जातिभाइमे कहाँ भेटतैन एहन कनेञा ? टोल पंचायतमे के कहओ, कने इलाका भरिमे घुमि आबथु, परगन्ना भरि छानि आबथु, एहन कनेञा कत भेटतनि ?

मनेमन खौंझायलि, यैह सब सोचैत रधिया बड़ीकाल बहरिया मोख धेने ठाढ़ि अछि, गुनि-धुनिमे पड़ल अछि। तावत् बाहरसँ 'छीतन कामति छथि ? एगो चिट्ठी छनि'—ई कहि डाकपिउन एकटा लिफाफ रधियाक आगाँ फेकि गेल। रधिया लिफाफ देखि अख्या-सलक तँ बाजि उठलि—ई तँ साबीक अचछर थिक। केहन सीटि कऽ लिखने अछि !

लगले लिफाफ खोलि च-चू कऽ चिट्ठी पड़लक—

'बहिनिकेँ सादर प्रणाम।

बहुत दिनपर चिट्ठी दऽ रहल छी। एहि बीच बाबू बड़ झंझटिमे पड़ल छला। मालिक जमीन्दारसँ कोनो बातपर अरारि भऽ गेलनि। ओ तते बिगड़ल जे नोकरीसँ हटा की दितऽथि, ई अपनहि नोकरी छोड़ि देलनि। ताहिपर जे दस कट्ठा जोतमे जमीन छलै तकरापर हर चला देल, ५ कट्ठा घर लगक बाड़ी तकरो उजाड़ि देल। बेसी रोक-टोक करितथि तँ मालिकक पट्ठा सब डंडा भाँजऽ लगैत। पहिने तँ बाबू रोषमे अयला जे कोट-कचहरी देखा दियनि, परंच मायक बहुत किछु कहलासँ बखेड़ा नहि बढ़ाय दोसर उपायमे लागि गेला।

मधेपुरक एक बंगाली डाक्टरसँ पहिनेसँ चिन्हा-परिचय, किछु दिन हुनक ड्राइवरी सेहो कयने छलथिन। भेंट कयलापर ओ कहल-थिन—'हमरा ड्राइवरक काजे छल, पहिला ड्राइवर छुट्टी लऽ कऽ जे गेल से गेले रहल। कतहु पटनामे काज धऽ लेलक। हम तँ आब

रिटायर छी, देश जयबेक अछि, डाइरेक्ट कलकत्ता जायब। ट्रको पर सामान जायत। संगहि चलू, परिवारोके ल लियौन, हमरा दोतल्ला बाड़ी अछि, नीचाँ रहैत जायब। हमरा परिवारोमे एकटा कन्ये। अहाँ सब परिवारे जकाँ रहव।'

बाबू ओतयसँ आबि ककरो ने किछु बेसी कहलथिन-सुनलथिन, एक दिन सबके नेने तमोरिया स्टेशन लय अनलनि। आ' डाक्टर अपन कन्याक संग एक डब्बामे आ' संगहि सर्वेन्ट सीटपर हम सब बिदा भेलहुँ। दू दिनक बाद बाबूओ ट्रकक संगहि कार नेने कलकत्ता पहुँचि गेला। नीचाँक फ्लाटमे हमसब रहै छी। बेस पैघ, खूब फैलसँ रहै जाइ छी।

डाक्टर साहेबक बेटी छथि अपर्णा देवी। से हमरा बड़ मानै छथि। बालविधवा छथि, बड़ निष्ठाबाली, पूजा-पाठ मे लागलि। कालीमन्दिर-दक्षिणेश्वर जाइत रहै छथि। रामकृष्ण-मिशन महिलाश्रमक काजमे हाथ बँटबै छथि। कखनो हमरो संग लऽ लै छथि। हमरासँ दस बारह वर्षक जेठि मुदा सखी जकाँ रखै छथि। हम हुनकासँ बङला सीखि रहल छी, खूब मन लगैए। टुनटुनमा बौआ खूब खुशीसँ अछि, ओकरो स्कूलमे डाक्टर साहेब नाम लिखा देलथिन। अहाँ सभक पुछारि करैत रहैछ।

अखबारमे पढ़लिऐ जे अपना सभक ओहिठाम बड़ बाढ़ि अयलैक अछि से मन लागल अछि, कोना सब गोटे छी? मायके चिन्ता रहै छेक। एकबेर कलकत्ता अबैत जाउ। बाबू छोटका पाहुनक चर्चा करैत रहै छथिन। हुनको संग नेने अयबनि।

हम चिट्ठी पहिने लिखितहुँ परंच अपर्णा देवीके ज्वर लागि गेल छलनि हुनके सेवाबाड़ीमे ब्यस्त भऽ गेलहुँ। आब नीके भेली तखन लिखय बैसल छी।

कलकत्तामे अपना दिसक बहुतो लोक रहै छथि, हुनका सबसँ बाबूके गप भेलनि, बाढ़िक बात सुनि कऽ चिन्तामे सब गोटे पड़ल

छी। तुरंत अपने नहि आबि सकी तँ मास्टरे साहेबकें पठा दियौन, देखि-सुनि जयता, अहूँ सभकें चिन्ता होयत। चिट्ठीक जबाब तुरंत लिखब। पता-ठेकानाक कार्ड संग दऽ रहल छी, ताही पतापर। माय-बाबूक आशीष जानब।

अहाँक बहिनि—साबी।'

रधिया चिट्ठी फेर दोहरा कऽ पढ़लक, मने ने अधाइत छैक। फेर पढ़य चाहलक। साबी केहन बुधियारि अछि, केहन फरिछा कऽ सब बात लिखि देलक, जे सब बुझबाक होइत से सब चिट्ठीमे अछि।

आब तँ पता-ठेकान सेहो भेटि गेल छै। मन तँ होइए जे उड़ि कऽ चलि जैतहुँ मुदा ... कने अपनो भऽ अबितथि, नहि तँ बौए चलि जाथु। साबी कते पढ़ि-लिखि लेलक। पढ़ुआ बौआ कने अपने आँखिसँ देखि लितथि, तखन ने किछु ... ...

यैह सब सोचैत रधिया, रोटी पकबय गेलि। आइ नेना-भुटकाकें अहगर कऽ दूध भेटलै - चीनिओं बेसिए पड़लै। आन दिन मङनहु जते नहि भेटै छलै ततेक भेटि गेलैक। खुसी-खुसी सभ खयलक, आइ की थिकै से कने अचंभित भेल, सूतय जाइत गेल।

रधियाकें आन दिन चिन्तासँ जल्दी निन्न नहि अबैत छलै तँ आइ आनन्देसँ निन्द अयवामे देरी भेलैक।

सोड़ह

तमुरिया पंचायत बैसल अछि। इलाका भरिक पंच लोकनि आयल छथि। सरदार, मुन्सी, मानिजन, छड़ीदार जातिक जे जते अधिकारी छथि सभ जमल छथि। गाम-गामसँ अभियोगी—अभियुक्त ओ हुनक पक्षधर जे छथि सेहो सभ जुटल छथि। बेसी अभियोग विआह-सगाइक तोड़-जोड़क अछि। किछुपर पंचैतीक अनुसार व्यवहार नहि रखबाक आरोप अछि, तँ किनकहु पर पंचाइतक पेशीमे नहि अयबाक कारण हुनका पर आनुशासनिक कार्रवाई पर विचार चलि रहल अछि। ककरो परगन्ना भरि भोज देबय पड़तनि, ककरो पंचाइत भरिक, ककरो कमला-बलानसँ भुतही-बलान धरिक जाति-भाईकेँ भात दिअय पड़तनि।

एहि सब पंचैती-फैसलाक बाद साँझमे जाति-भोज होयत। लोक सब जुटि गेल अछि—बिझोमे कने देरी छैक। उपयुक्त अवसरकेँ देखि, समस्त समाजकेँ जुटल देखि, तुलसी हाथ जोड़ि कऽ पंच बीच निवेदन रखलनि—

"पंच लोकनि! जाति भाइ लोकनि! हमरा किछु निवेदन करबाक अछि। परम्परासँ हमरा लोकनि एक सामाजिकतामे रहलहुँ, सरदार लोकनि हमरा लोकनिक समस्याकेँ सोझरबैत अयला, समाजकेँ टुटय नहि देलनि, ताहि हेतु हम सभ हिनका लोकनिक कृतज्ञ छी।

"परंच आइ समय बदलि गेल छैक, शादी-विवाहेटा समाजक समस्या नहि रहलै। हमरासबकेँ एहू पर बिचार करबाक थिक जे हमरा लोकनिक जे बदहालति अछि, गरीबीमे युग-युगसँ पिसाइत आयल छी, आनक सेवा करैत पुस्त-पुस्तैनीसँ खटैत, बाबू-बबुआनक

पाछाँ लागि हुनक टहल-टिकोरा बेगारिए करैत अयलहुँ परंच हमरा सब अधिकाँशमे उपेक्षिते रहलहुँ। ने अपन भूमि अछि, घर-द्वारि धरि नहि, अनके पट्टीमे असामी बनल रहलहुँ। अपना कहबा लेल सम्पत्ति नहि। हमरा लोकनिकेँ शिक्षा नहि, अक्षरज्ञान नहि। देश स्वतंत्र भऽ गेलैक, हमसब बँधुआ मजदूरे बनल छी। सब समाजक लोक देशक बदलल परिस्थितिमे बदलि गेल परंच हम सब पढ़ि-लिखि सकलहुँ नहि तेँ डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, कलक्टर, मजिस्टर के कत' भऽ सकितहुँ? हरिजनों सब नेता भऽ गेला, एम० एल० ए०, एम० पी० बनि गेला। हमरा सबमे से के कते छथि? ताहू सब पर बिचार करैत जाइ, एहि लेल रास्ता देखबैत जाइ।"

क्यो पंचमेसँ टिपलनि—अरे! अहाँ तँ भाषणे दिअऽ लगलहुँ। हम सभ जातिक पंच थिकहुँ। जातीय विषये पर ने विचार कऽ सकै छी।

तावत दोसर दिससँ केओ बाजि उठल—'भने कहै छथि। सब तँ जातिएक नीक-वेजायक कथा कहै छथि। एहिपर अवश्य विचार कयल जाय।'

ताबते भोजघरासँ दू व्यक्ति पंचसँ कल जोड़ि भोज-सामग्री निरेखय हेतु निवेदन कयलथिन। ओहिमेसँ पाँच गोटे देखि सुनि बिझो करैबाक आदेश कयलथिन।

पंचेमेसँ घोषणा भेल—'आब पंघति लागत, ई सब बिचार ओकरा बाद सुनल जायत।'

हुर्र मचि गेल। जनिका अपन लोटा छलनि से हाथ उठौलनि, जनिका नहि छल तनिका लेल माटिक बड़कीक इंतिजाम कयल गेल छल। सड़क कनें झाड़ि-झुरि देल खेल छल। दूर धरि दूहू कात पाँत लागि गेल। यातायात ओहि दऽकऽ नहि होइक ताहि हेतु दुनु भाग किछु लोक बुलैत रहल।

लगले कठौती-कठौती भात, बाल्टी-बाल्टी दालि, ओ पराँत भरल तरकारी, अचार नोन-मर्चाई परसल गेल। घीक छींटा सेहो

पात पर पड़ल। पंच सरदार पहिने कौर उठौलनि। सब चाटि-पोछि कऽ खाइत गेला। पहिनेसँ हिदायत छलै जे ऐंठ नहि छोड़ल जाय। पुनि गूआ खंड बिलहल गेल।

भोजक बाद बहुतो गोटे ढेकरैत बिदा भेला। दूरक लोक अपन निजी सरोकारीक ओतय विश्रामक खोजमे छला।

किछु युवक अवश्य रहि गेला, तुलसीकेँ आग्रह कयलथिन जे अहाँ अपन बात कहि चलू। तुलसी कहलनि, हमरा तँ सब समाज भाइसँ से-सब कहबाक छल। मुदा ओ सब बहुतो तँ चल गेला। परंच हर्ज नहि, कार्य कयनिहार सब नहि होइछै, जे लोकनि छी से ई निश्चय करू जे एहि सब समस्याक समाधान कोना होयबाक चाही। हमर तँ विचार अछि जे सभक जड़ि छंक संगठन। तेँ गामगामसँ किछु गोटे नाम लिखाउ जे के सब जाति संगठनक हेतु लागऽ चाहैछी।

बहुतो गोटे नाम-गाम लिखौलनि, एहि लेल अपन तन-मनसँ लगबाक निश्चय सुनौलनि। तुलसी सभक नाम-पता डायरी पर नोट करैत गेला आ एहि हेतु पुनः अगिला सप्ताह रवि दिन कार्य-कर्त्ताक संगठन सभा होयबाक निश्चय सुनौलनि।

... ...

नियत दिनपर कार्यकर्त्ता सब जुटि गेला। गृह-श्रमिक संघ संगठित भेल। अध्यक्ष नवानीक मंडलजी भेला, मंत्री घोघरडीहाक कामति मनोनीत भेला, संगठन-मंत्री तुलसी मंडल राखल गेला। ३१ गामसँ एक एक गोटे कार्यकारिणीमे राखल गेला। सप्ताहमे प्रत्येक रवि कऽ बैसक होयब निर्धारित भेल। एहि बीच संगठन-मंत्री गाम-गाम जाय तथाकथित खबास लोकनिक खास-खास समस्यासँ परिचित भए स्थानीय संगठन सुदृढ़ करता।

तुलसीकेँ एहि काजसँ छुट्टी नहि। स्कूलसँ पहिने संगठन काज लेल दू सप्ताहक छुट्टी लेलनि। किछु सदस्यकेँ संग लय संगठन काजमे जुटि गेला। घर-आङन, कुटुम्ब-परिवारक कथुक खोज नहि, संपूर्ण ध्यान ओही दिस केन्द्रित भऽ गेल छलनि। दू दिन पर, कहियो तीन दिनपर थाकि-थुकि रातिमे घरपर आबथि। भोजन करथि सूति रहथि। फेर भोर होइत नहा-सुना ककरो संग कय घूमय चलि जाथि।

रधिया कखनो गप करत सेहो मौका नहि भेटैछ। छीतनक मन सेहो तुलसीक एहि व्यस्ततासँ निरस्त रहैछ।

सत्रह

तुलसी एम्हर सभा-सोसाइटीमे लागल रहल। ओम्हर रधिया बाप-मायकेँ कलकत्ता जाय देखि आबथु ताहि लेल बजैत रहलि। छीतनकेँ कलकत्ता यात्रा दुरूह बुझि पड़ैक। मधुबनी-दरभंगा तँ ओ जयबे नहि करय, हठात् कलकत्ता महानगरी कोना पहुँचि सकय! तेँ जखनहि ओ मधेपुरसँ तुलसीकेँ अबैत देखलक, बाजि उठल—भने बाबू बनल मिटिंग फिटिंग करैत रहह, एम्हर भाउजि बैचैन छथुन तकर कोनो खोज-पुछारि नहि। हमरासँ कलकत्ता-दिल्ली जायब पार नहि लागत। तोँ तँ से-सब कऽ सकैत छह!

तुलसीक माथपर जे संगठनक भूत चढ़ल छलै, हठात् उतरि गेलैक। अकासमे उड़ैत मन सहसा धरती पर उतरि अयलैक। सोचलक, ठीके घरमे उपास आ परगन्ना नोतय जा रहल छी। नहि नहि, पहिने भौजीक चिन्ता मेटओ, तखन समाजक सुख-दुख देखल

जायत। लगले भाउजिसँ कहलक—हम कालिह कलकत्ता जा रहल छी।

रधिया हुलसि कऽ उठल, किछु सनेसो पठयबाक चाही। आँटा-गूड़ घरेमे छलैक, तेलो रहैक, परंच ओते दूर एते दिन पर तेलही पकवान कोना पठौल जाय? छीतन उठला, दछिनवारी टोलक महिसानसँ घी उठा अनलनि। चूल्हि पर छनमन होमय लागल। भरि चङेरा टिकड़ी, पिड़किया, निमकी छना गेल। हँसैत तुलसी भाउजिसँ कहल—भौजी! एकरा लऽ जयबा लेल तँ सीक-पटइक इंतिजाम सेहो करऽ पड़त। भरिया हम भार टङबा लेल छीहे।

—'नहि नहि, ई तँ झोड़मे अँटि जायत। मास्टर साहेबकेँ भरिया बनबाक डर नहि होइक चाही। हम तँ हुनका ककरो मास्टरी करबा लेल चुनने छी। मुदा बुझि लिअ, चटिया एहेन नहि जाहि पर चाट चलाबी, ओ तँ फूलक छड़ी जकाँ तनुक अछि; कने आँखि-भोंह तनल देखनहि झहरि जायत। से देखब, कोनो एहन काज नहि करब जाहिसँ क्यो भड़कि जाय'...

तुलसी मुसकिमाइत अपन कपड़ा-लत्ता साफ करय घाटपर चलि देल।

दोसर दिन सबेरे तुलसी अपन बैग ओ सनेसक झोड़ा लऽकऽ तमोरिया स्टेशन बिदा भेल। छीतन झोड़ा भरिगर देखि कऽ अपना हाथमे लऽ कऽ स्टेशन धरि पहुँचा अयलैक।

गाड़ी फुजबासँ पहिनहि बहुतो लोक झंडा-बैनर नेने प्लेटफार्म पर जमा भऽ गेल छल। पता चलल जे ई सभ कल्याणी कांग्रेसमे मिथिला राज्यक माङ उपस्थित करबा लेल जयता। मिथिला कांग्रेसक नेता जानकी बाबू जे पटनासँ मोकामा होइत सदल-बल जयबा लेल छथि तनिके अनुगमनमे ई सभ जेर बन्हने जा रहल छथि। कमहि किछु लोक हुनका लोकनिकेँ बिदा करय सेहो जमा भेल छथि। गाड़ी आयल, मिथिला कांग्रेस जिन्दाबाद, जय

मिथिला, जय मैथिली, मिथिला प्रान्त लऽ कऽ रहबै—ल' क' रहबै' आदि आदि नाराक बीच ट्रेन खुजि गेल।

तुलसी विस्फारित नेत्रें दृश्य देखैत रहल। मनमे एक नवीन स्फूर्तिक अनुभव भेलै। पुनः विशेष गोटे लोक सकरीमे, दरभंगामे, पुनः समस्तीपुर बरौनीमे सेहो गोटा-गोटी लोक बैज ओ झंडा नेने, नारा लगबैत चढ़ैत गेल। यात्री सबकें अचम्हा लगै जे ई की भऽ रहल छै—मिथिला राज्य, मिथिला प्रान्त, ई की सुनबामे आबि रहल अछि।

मोकामामे बड़ी लाइनक गाड़ी पर जखन लोक चढ़य गेल, फेर घोर मचलैक—'जय मिथिला, जय मैथिली, जय जानकी बाबू—जय मिथिलाकेसरी।' जानकी बाबू जाहि डब्बामे चढ़ल छला अधिकांश बैंजधारी अगल-बगलक डब्बामे जाय बैसल। अपन-अपन बैनर डब्बाक दूहू दिस लटका दैत गेला।

एहिसँ पहिने तुलसी मिथिलाराज्यक चर्चा नहि सुनने छल। विहारकेसरी श्रीकृष्णसिंहक नामसँ जुड़ल अखबारमे पढ़ैत आयल, कोनो सभा-सोसाइटीमे जतय ओ उद्घाटन करय जाथि सुनैत आयल। आइ मिथिलाकेसरी नव अभिधान सुनबामे अयलै। मनमे नव उत्साह भरि अयलैक। यात्री सभ बैजधारीकें देखि पुछि दैक जे—ई की भऽ रहल छै? मिथिला राज्य कतऽसँ कतऽ धरि छै! अहाँ मैथिल ब्राह्मण-कायस्थ थिकहुँ की? सुनै छी जे किछु झा-मिसर ओ लाल-दास सेहो एकरा पाछाँ छथि।

—'हम तँ मंडल थिकहुँ, ने ब्राह्मण ने कायस्थ। हमर नेता तँ सिंह थिका—जानकीनन्दन सिंह।'

एहि पर तरह-तरहक टीका-टिप्पनी सुनबामे अयलैक—

—'सिंह थिका तँ राज-पूत होयता अथवा भुइहार? सेहो कोना भऽ सकै छथि? श्रीबाबू तँ भुइँहारे छथि, अनुग्रह बाबू राजपूते?

—'नहि औ ! जानकी बाबू तँ सोति छथि, महाराजक दयादे। मिथिलेश ने कहवै छथि, हुनका ने चाहिऐन्ह मिथिलाक राज्य। ई तँ एकटा मुखौटा छथि—मुखौठा।'

—'अरे ! से बात नहि थिकै, हम ने कहै छिअह असल गप। हमरा जानल अछि सीरीबाबू एहि बेर जानकीबाबूकेँ टरका देलकनि, मिनिस्टरीमे किछु नहि बनौलकनि। तकरे आगि लेस देलकनि, तखन बनल मिथिला कांग्रेस, माङ भेल मिथिला राज्य।'

—'हँ हँ, तकरे थिकै ई रीस-टीस, फेर कने कतौ टुकड़ी देखा देतनि, कोनो संस्थाक चेयर पर बैसा देतनि। देखि लिहऽ, कत जायत मिथिला कांग्रेस, कतऽ बिला जायत मिथिला राज्यक माङ से देखि लिहह।'

—'नइ हौ, जानकी बाबू मर्द अछि मर्द। हम हुनका संग रहल छी, कांग्रेसोमे, सुभाष बाबूक फोरवार्ड ब्लाकोमे। जतऽ बाबूसाहेब रहल से सिंह जकाँ। उचिते कहैछै ओकरा मिथिलाकेसरी, से ओ सिंहे जकाँ रहैछ।'

—'नहि हौ, तों की कहबह ? हमरा बुझल अछि, एहिबेर बिहारकेसरी तेहन ने दमनचक्र चलौतनि जे तोहर केसरी मुसरी भऽ जयथुन।'

—'बेस, तोहूँ देखि लिहह—इहाँ कुम्हर बतिया कोउ नाही।'

एहि तरहक गप्प-सप्प रेलमे चलैत रहलैक। मैथिलीमे, हिन्दीमे भोजपुरीमे, मगहीमे फैंटफाँट मिझरायल बोलीमे एम्हर ओम्हर टीका-टिप्पणी चलिते रहलैक।

तुलसी कान पाथि कऽ गप्प सुनैत रहल। भला 'आइ बाहरक ट्रेनहुमे मिथिलाक चर्चा भऽ रहल अछि ! ततबोसँ सुख बुझयलैक।

गाड़ी चलैत रहल, लोक गप्प-सप्पमे राति कटैत केओ औंघाइत छल, केओ सूति रहल छल, किछु जागलो छल। गाड़ी आसनसोलक प्लेटफार्म पर जखनहि ठाढ़ भेलेक –एकाएक हो-हल्ला मचि गेल ! पुलिस डब्बामे पैसि गेल। बैनर उतारऽ लागल, झंडा नोचऽ लागल ओ बैजधारी लोकनिकेँ पकड़य लागल। फेर गर्द पड़लैक—'इनक्लाव जिन्दावाद —जिन्दाबाद। मिथिला कांग्रेस जिन्दाबाद, मिथिला राज्य लऽ कऽ रहबै। मिथिलाकेसरी जय हो, मिथिला-मैथिली जय हो।'

लोक जागि पड़ल, चारू दिस धर-पकड़। जानकी बाबू गिरफ्तार भेला, हुनका संग पचासो व्यक्ति गिरफ्तमे लऽ लेल गेला।

ओकर बाद जेलक फाटक खुजल, ट्रेनसँ सब गोटे ओहिमे ढुकौल गेला। नारा लगबैत लोक अपनहि जेलमे ठेलमठेल मचबय लागल।

फेर तँ कहय नहि पड़त जे पहिलेपहिल मंडल देखलनि जे हमरा झोड़ामे सँ लऽ लऽ कऽ बड़े प्रेम सँ सब टिकड़ौ-निमकी सधा रहल छथि। अधिकांश द्विजजातीये छला, आइ शूद्रान्न सबकेँ हविष्यान्न लागि रहल छनि।

तावत् गिरफ्तारीक दोसर दिन अखबारमे मोट-मोट हेडिंगमे समाचार लोक पढ़लक। मिथिलामे एक नवीन स्फुरण अयलैक। ओम्हर कलकत्ताक उत्साही मिथिलासेवक लोक अरियाति अनबाक हेतु झुंड बान्हि कऽ ओतय पहुँचि जाइत गेला।

ओम्हर कल्याणी कांग्रेसक अधिवेशन समाप्त भेलै, एम्हर जेलक फाटकसँ सबकेँ मुक्त कऽ देबाक आदेश जारी भऽ गेल छल।

अठारह

कलकत्ताक गिरीश पार्क मे आइ जनसभा आयोजित अछि। ओकर महत्त्व कलकत्ता प्रवासी मैथिल जनताक लेल सर्वाधिक अछि जे युग-युगसँ संचित पृथक् मिथिला राज्यक स्थापनाक मार्ग प्रशस्त करबा हेतु जेल-यात्री लोकनिक अभिनन्दन कयल जायत।

कलकत्ताक महल्ला-महल्ला ओ गली-गलीसँ मैथिल लोकनि जुटय लगला। सभ जातिक, सभ वर्गक, आफिसर पदाधिकारीसँ कुली मजूरा धरिक सभ प्रकारक व्यक्तिमे अभूतपूर्व उल्लास अछि। वंगाली लोकनिमे आमार वांगला, सोनार वांग्लाक जे धुनि छन-छन कानमे पड़ैत अयलनि, तकर स्पृहा-सेहंता, अपन 'माखनसँ मृदु मंजुल माटि जतय पुनि पानिक स्वाद सुधा सन' कविजीक मिथिला-महिमाक राग सभक हृदय-तंत्रीमे झंकृत भऽ रहल अछि। 'स्वर्गादपि गरीयसी' जन्मभूमिक प्रति आदर देखयवाक हेतु आइ मिथिला-राज्यक सपना देखनिहार अपन प्रियबन्धुक अभिनन्दनमे सभक हृदय उल्लसित अछि।

मिथिलासंघक नेता लोकनि व्यवस्थामे व्यस्त छथि। कर्मठ कार्यकर्त्ता लोकनि बिशाल जनसमुदायकेँ मैदानमे अँटावेश करबाक हेतु व्यग्र छथि। मंचक एक दिस महिला समाजक जमघट अछि। दोसर दिस मिथिलामे जे वंगवन्धु रहि चुकल छथि अथवा जनिका मैथिल संस्कृतिसँ अनुराग छनि ओ-लोकनि आमन्त्रित भेल छथि, हुनका बैसाओल जा रहल अछि। सामने अपार भीड़ अछि। पाछाँ कने जगह खुजल अछि, जेम्हरसँ मिथिलाकेसरी सदल-बल मंचपर औता।

माइक पर वारंवार 'शान्ति-शान्ति, बैसैत जाउ, नेता लोकनि पहुँचि रहल छथि' सभा-संचालक घोषित करैत छथि। क्रमशः सभ अबैत गेलाह, मंचपर बैसाओल गेलाह। सभा चंचल भऽ उठल। 'जय जय भैरवि'क गानक बाद, अध्यक्ष मुख्य वक्ता मिथिला-केसरीसँ सभाकेँ सम्बोधित करबाक आग्रह कयलनि। ओ मिथिलाक स्वतन्त्र प्रादेशिक आवश्यकता पर जोर दैत, एहि भागक विकास लेल विहार सरकारक आलोचना करैत, मिथिलावासीक आर्थिक स्थितिक जे सजीव चित्र उपस्थित कयलनि से सभक हृदयक आइनामे प्रतिबिम्बित भऽ उठल। पुनः एकरा हेतु पृथक् राज्यक स्थापनासँ मिथिला कोना बंगाल-महाराष्ट्र जकाँ, पंजाब-गुजरात जकाँ आर्थिक-सांस्कृतिक सभ दृष्टिएँ पुनः अपन गौरवपूर्ण स्थान पावि सकय, ताहि हेतु प्रत्येक मिथिलावासीक—भने ओ कोनो जाति-वर्गक होथि—सहयोग देबाक लेल, मिथिला आन्दोलनमे सह-भागी बनबा लेल, आह्वान कयलनि। हुनक ओजस्वी भाषणसँ सभामे एक नवीन उद्दीपना आबि गेल। चारू दिससँ थपड़ी, जय-ध्वनि ओ नाराबाजी गुंजित भऽ उठल।

आब जेल-यात्री लोकनिक एक-एक कऽ माल्यार्पण पूर्वक परिचय देल जाय लागल। जखन तुलसी मंडलक परिचय देल गेल तँ सभा और उत्साहित छल। कारण, एक एहन वर्गक युवक जकरा ने मैथिल कहल जाइ छैक, ने ओहि समाजमे राजनीतिक चेतना जागृत भेल छैक, से यदि आन्दोलनमे कूदि पड़ल, तखन बुझि ली जे आब मिथिलाक भावना जड़ि पकड़लक।

जाहि समय हिनक परिचय देल जाइत छल, वाम भागमे बैसलि महिला वर्गक एक कोनमे किछु बेसी हलचल देखल गेल। दू गोट महिला कने मंचे दिस बढ़ि अयली।

सभा-समाप्तिक घोषणाक बाद जखन आन-आन आन्दोलनीक संग तुलसी मंचसँ उतरि मोटर पर चढ़ि गेल छला, देखलनि दू-गोट

महिला हिनका उत्सुकतासँ निहारि रहलि छथि। जखन और निकट अयला तखन देखलनि जे जाहि मूर्त्तिक ध्यान करैत ओ कलकत्ताक यात्रा कयलनि ओ सहसा हुनका अनायास भेटि गेलथिन। साबी समक्ष ठाढ़ि भेल हाथ जोड़ि प्रणाम कयल। आ' संगमे जे प्रौढ़ महिला छली, जनिका देखितहि ई अन्दाज लगा लेल जे ई बंगाली डाक्टर बाबूक विधवा कन्या होयती।

एहि आकस्मिक मिलनक उल्लास जते शब्दसँ नहि शान्त भेल, तते आँखिमे झलकि गेल, मुखमुद्रामे चमकि गेल !

जल्दिए एतवा कहिते जे—'हम एहि सबसँ निबटि कऽ आबि रहल छी। अहीं सभक भेंट हेतु आयल छी, ई तं बीचहि मे फँसि गेलहुँ' तावत मोटर स्टार्ट भऽ गेल। तुलसी हुनके दिस टकटकी लगौने रहला, ओहो दूहूगोटे हिनके देखैत रहली।

उनैस

कलकत्ताक ई यात्रा तुलसीक जीवनमे एक मोड़ आनि देलक। चलल छल ओ भाउजिक आग्रहपर ककरो हालचाल बुझबा लय, अपनो उत्कंठासँ ककरो देखबा-सुनबा लय, आ' से रस्ते-रस्ता कतऽ पहुँचि गेल ! जतऽ ओ सोचने नहि छल, कल्पनो ने करैत छल, जेल हिरासतिक हवा खा' आयल ओ तँ अज्ञात अजनबी रूपें कलकत्ता महानगरीक कोनो कोनमे अपन सम्बन्धीकें ताकय हालचाल बुझय आयल छल से स्वयं कोना चिन्हरगर भेल, नेता-रूपमे सार्वजनिक रूपें आमन्त्रित भेल ! कोना लोक ओकरेसँ भेंट लेल पहुँचैत रहल-से सभ सोचि-सोचि ओ स्वयं चकित अछि। सबसँ विस्मय तँ ओकरा ई जे हम जकरा हेतु गली-गली घुमितहुँ, पता लगबैत रहितहुँ से कोना अपनहि हमरा ताकि लेलक। ई संयोग थिक अथवा भाग्यक चमत्कार, के कहओ !

दु-तीन दिन धरि तँ तुलसी कलकत्तामे विभिन्न संस्था ओ ओकर सदस्य लोकनि दिससँ आमंत्रित भऽ घुमिते फिरैत रहल। ओकरा बुझा पड़लैक जे द्विजेतर रहने जे ओ कतहु अनादर भावेँ देखल जाइत छल से आइ ओही कारणेँ ओकरा विशेष आदर भेटि रहलैक अछि। एहि संग तँ कतेको झा-मिसर-पाठक छला, दास-मल्लिक ओ सिंह चौधरि छला, परंच हुनकापर लोक ततेक ध्यान नहि देलक जे धानुके-मंडल बुझि हमर पुछारि भऽ रहल अछि। कारणो स्पष्ट बुझयलैक जे स्थान विशेषमे कतहु अड़ेरो तँ गाछ कहबैछ।

जखन ओ राजनीतिक वातावरणसँ अवकाश पौलक तखन पुनि उक्त बंगाली डाक्टर बाबूक तलाश कयलक। ओतय एकटा कार्य-कर्त्ता ओकरा मकानक फाटक धरि पहुँचा गेलथिन। तखनहि हुनका प्रणाम करैत बिदा कय देल।

सप्ताह धरि लोकारण्यमे जे ओ अस्वाभाविक रूपेँ अपनाकेँ निर्वाहित करैत आयल से जेना एतय आबि निःश्वास लेबाक मौका भेटलैक। सामाजिक कोलाहलसँ पारिवारिक वातावरणमे जेना शान्तिक अनुभव भेलैक।

फाटकक भीतर एकटा छोटछीन दोतल्ला मकान, नेम प्लेट लागल–डा० एस० के० दास। ओकर उपरका भागक मकानमे मालिक डाक्टर रहैत छथि। निचला भागमे गैरेज। ओकरे बगलमे ड्राइवरक डेरा भेटल छैक। बाहर कनेटा ओसारा। भीतर गेला पर बेस असार-पसार। तीन कोठरी सुतबा-बैसबा लेल। किचेन बाथरूम। कनेटा ओसारा ओ अङनइ। सभ साफ बहारल सोहा-रल, सजल-सजायल। बुझि पड़लैक जेना ओकर प्रतीक्षा पहिनहिसँ होइत छलैक। ओछौन-बिछौन लागल, कुर्सी-मेज राखल।

तुलसीकेँ अबैत देखि, साबी ओकर छोट भाय तथा माय सब दौड़ि आयल। ड्राइवर तँ हिनकहि तलासमे मिथिलासंघक कार्यालय गेल छल, से ता धरि फिरल नहि छल।

Scanned by CamScanner

साबी लोटा भरि पानि स्टूल पर राखि गेलि। तुलसी कहलथिन, 'कथी लेल, एकर कोन काज? ई की गाम-गमइ थिकै जे धुरियैले पैरे लोक चलैछ, कादो-माटि धोयबाले पानि चाही? थाकल ठेहि-येल, गर्मायलकें ठंढ़यबा लेल ने आचमन हेतु ठंढा जल चाही? दिसंवरक साँझ, सबारीपर आयल, थरथरायल लोक लेल तँ गर्मे पानि चाही, भफाइत चाहे चाही जे कंठ गरमा ली।

'हँ-हँ, यँह अयलहुँ' कहैत साबी झट दऽ घर गेलि। एक तश्तरीमे नेने ओकर माय बिस्कुट-निमकी आ किछु मधुर दऽ गेलि छलि। चोटहिँ ओहो चाहक प्याला राखि देल।

'हँ, हम एक कप चाह नहि पिवैछी, दोसरो कप चाही। तुलसीक कहब भेल कि ओ दोसरो कप लगले नेने आयलि।

तुलसी तश्तरी दिस हाथ बढ़बैत कहल—'एते जल-जलपान! हम तँ दिन भरि एही सब फेरीमे छलहुँ।' तश्तरीसँ एकटा संदेश उठाय बच्चाक दिस बढ़बैत कहल—'अहाँ लिअ। भौजी जे सब सनेसबारी पठौने छली से सब तँ हम सब मिलि-जुलि जेलेमे साफ कऽ देल। खालिए, हाथ डोलबैत अयलहुँ अछि।

'परंच हुनक कुशल-सनेस मौखिक सुनि लिअ, की कते-कहने सुनने छथि तते हमरो मोनो नहि अछि।'

—'से हमरा सबकें बुझले अछि। अहाँक मोन पहिनहिसँ तते ने भरल रहैछ जे ओहिमे किछु दोसर अँटिए ने सकैछ। अजबारल कें यावत् फेर ने अजबारल जाय तावत ओहिमे किछु समा' कोना सकैछ?

तुलसी किछु जवाब नहि दऽ कऽ मप्पमे मोड़ देलक—'चाह एक-सर नहि पिउल जाइछै। एकर स्वाद बढ़ैछ तखन जखन संग-संग पिउल जाय। लिअ, ई दोसर प्याला अहीं लेल थिक।'

विवश भऽ लगक स्टूलपर साबी बैसि गेलि, तुलसीक हाथसँ प्याला लए चाह पीवए लागलि। बीच-बीचमे—बहिन्वे-बहिनिक,

कनटिरबा-कनटिरबीक सम्बन्धमे खोधि-खाधि कऽ पुछैत रहलि। ओकर माय मुसकियाइत भानसघरमे पैसलि। छोटका भाय सनेस सुनबामे रुचि नहि लय सन्देश खयबामे रुचि लेलक।

बीस

बुझि पड़ैक जेना तुलसीक अयने शिशिर-शीर्ण कानन मे वासन्ती मलयानिक झोंका आबि गेल होइक। जेठ-अषाढ़क उमसमे अदरा बादरि बरसि पावसी फोहार पटा गेल होइक। साबीक उत्साहक कोनो तुलना नहि। ओकर सखी-मालिकिनि अपर्णा देवीकें साबीक उत्साह बढ़ैबामे कनेको कमी नहि। भौजी-माय दिन भरि छनन-मनन कीचनमे करैत, खयबा-पीबाक आग्रहसँ तुलसीक पेटक संग मनो भरि रहलि छथि।

बृद्ध डाक्टर बाबू मंडल संग जखन-तखन गप्प करैत कहैत रहै छथि—'हम तँ पन्द्रह सालसँ उपरेसँ अहींक देशमे—घर-गाममे तेना रमल छलहुँ जे लोक हमरा मैथिल डाक्टर बुझैत छल। मधेपुरक बाबूसाहेब लोकनिसँ हमरा बड़ अपेक्षा रहल। मधुवनी-दरभंगामे हमर अनेक मित्र छथि। पंडौलमे मुखर्जी-परिवारमे हम जाइत-अबैत छलहुँ। राजक मैनेजरो सब हमरासँ देखबैत-सुनबैत छला। झंझारपुर-रहिका सगरो गेल-आयल छी।'

मंडल हूँ-हूँ करैत बेसी सुनिते रहथि। बीच-बीचमे साबी दूहू कें चाह पहुँचा जाइन। पान लगा कऽ पनबट्टी बढ़ा जाइन, जर्दाक डिबिया राखि जाइन।

गप्पक बीचमे अपर्णादेवी आबि पड़थि, बंगलामे कहथिन— 'बापू! एतो अतिथि, दुइ चारि दिनेर जन्य कलकत्ता आसिते छेन। भालो करि देखिबा-सुनिबार व्यवस्था आमाकें करिते हबे।'

'भालो कथा, इनि लेते जाबेन' निजेर गाड़ी आछेइ। ड्राइवरकेँ बलून सिधिर लेते जाबेन।'

ओ आबि कऽ साबीकेँ ओ ड्राइवरकेँ बाबूक इच्छा जना देल। साबी अपर्णा मालिकिनिकेँ सेहो संग देबय कहल जे--हमरा नीक जकाँ बुझल-सुझल नहि अछि। कनी अहूँ संग चली जे नीक जकाँ कलकत्ताकक दृश्य सब देखि लेथि।

अपर्णा सहर्ष संग देबा लेल प्रस्तुत भेली। दादासँ जाय कहलनि— आपियो जाच्छी' कालीबाड़ी दर्शन करबार आमाकेओ प्रयोजन आछे।'

'भालो कथा, बेस तुमिओ जाओ, भालो करि अतिथिके देखबा-सुनबार व्यवस्था करिबेन।'

... ...

तुलसी पहिले बेर महानगरी आयल छला। कलकत्ताक विवरण पुस्तकेमे पढ़ने छला। उत्सुकताक संग सुविधा ओ मार्गप्रदर्शन पाबि तीन दिन धरि खूब घुमला-फिरला।

सबसँ पहिने कालीबाड़ी जाय देबी-दर्शन कयलनि। फूल-प्रसाद चढौलनि। भीड़-भाड़मे भक्तजन कोना दबाइत-पिचाइत घंटानादक बीच स्तोत्र-स्तवन सुनाय श्रद्धा-निवेदन करैत छथि से सुनि-स्तुतिक श्लोक अपना नहि अबैत छलैनि से अभ्यासबाक मनेमन संकल्प लेलनि। अपर्णादेबीक पारिवारिक परिचित पुजारी हिनका लोकनिकेँ मंत्र पढ़ाय किछु दानधर्म करौलंनि।

संगहि पंडा लोकनि जे दान-दक्षिणाक हेतु रेड़म-बहेड़म करैत छल, से देखिकने मनमे वितृष्णा जगलैक, परंच देवस्थान मे कोनो विकृति नहि हो तेँ मनकेँ संयमित कयल।

पुनः किछु ऐतिहासिक स्थानकेँ देखलनि। फोर्ट विलियमक किला, जाहि ठाम अंग्रेज व्यापारी कंपनीक प्रथम अधिष्ठान छल। राइटर्स ब्युल्डिग, जाहिमे अंग्रेजी सल्तनत स्थापितभेला पर सेक्रेटरियेट स्थापित कयने छल ओ वर्तमानो सचिवालय एतहि संचालित अछि। ब्लैक हौल (काली कोठरी) कहि कऽ अंग्रेज इतिहासकार लोकनि जकरा इतिहासमे स्थापित कयने छथि, तकरो देखल। फेर विक्टोरिया मेमोरियलक धवलक महल, विस्तृत पार्क, धर्मतल्ला-चौरंगीमे चुट्टीकधारी जकाँ लागल मोटरक पाँती निरखैत बंगालक नेता लोकनिक विभिन्न चौक पर स्थापित प्रतिमा सबकेँ देखैत तुलसीकेँ अपन दरभंगा-मधुबनी सन शहरक ध्यान अयलैक, ओतहु जँ एहि प्रकारक अपन महान् व्यक्तिक प्रतिमा प्रतिष्ठापित होइत! अपर्णादेवी ड्राइवरकेँ जखन कालेज स्ट्रीट लऽ जाय कहलथिन आ ई दरभंगा हाउस ओ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक प्रतिमा देखलनि मन उल्लसित भऽ उठलनि। साबीकेँ तुलसी बुझबय लगला जे महाराज होइतहुँ, तत्कालीन बृटिश सरकारक दबदवा रहितहुँ, राष्ट्रीय आन्दोलनमे ई कोना सहयोग देने छला ओ कलकत्ताक विश्वविद्यालयकेँ कोना आर्थिक सहायता दय ई कोन तरहेँ शिक्षा-प्रेमक परिचय देने छथि। साबी से सब ध्यानसँ सुनैत छलि।

दोसर दिन अजायबघरक अजीव बस्तु देखय जाइत गेला। पाथरसँ लय रत्नमणि धरि, प्राचीन कालक हर्बा-हथियारसँ वस्त्र-आभूषण धरि तथा शिल्प-कौशलक सामग्री सब देखि मनमे कुतुहल होइत रहल। कतोक जीवाश्म देखल, छोट-छोट जीव-जन्तुसँ शार्दूलक विशाल पंजर देखि मनमे आयल जे नगरवासी तँ सहजहिँ अपन किताबी ज्ञानकेँ प्रत्यक्ष कऽ लैत अछि, परंच गामक लोककेँ ई सब देखवाक सुविधा कहिया कोना भेटि सकतैक!

पुनः अपर्णा देवी चिड़ियाखाना देखबा लय अगुतौलथिन तँ ओतहि सब गोटे बिदा भेला। टिकट लय जीव-जन्तु देखवाक उपक्रम चलल! फाटकक लगे चमरी गाय छल तकरा देखैत-देखबैत

तुलसी साबीके कहलथिन—एकर नाङरिपर झबड़ल केश देखैत छिऐ, विद्यापति कहने छथि जे सुन्दरीक केशसँ हारिदारि कऽ ई अपमानित भऽ जंगल बास लेलक ।

साबी हँसि पड़लि, कहलकनि—'आ' ककरो मुखमंडल देखि कऽ चान आकाश पड़ा गेला, सेहो तँ वैह कहने छथि ।'

'पदावली पढ़लहुँ तँ पुरुषपरीक्षो पढ़ने होयब ?'

'अरे ! विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा अहाँ सब पढ़ू । पौरुषक कीर्ति-लता अहीं लोकनि लगाउ, कीर्तिपताका फहराउ । परंच हुनक गीत-नाद हमहीं सब स्त्रीगण कंठमे जोगा कऽ पुस्त-पुस्त रखने अयलि-ऐन । तखन ने अहाँ सब आइ साहित्य रचैछी ।'

तुलसी मुस्कियाइत रहि गेला । मनमे कहलनि, स्वाइत भौजी अपन बहिनिक प्रतिभाक गुणगान करैत रहथि ।

तेसर दिन सवेरे जोड़ासाँकू जाय कवीन्द्र-रवीन्द्रक पुस्तैनी आवास देखल । सावित्री कहलक, एही ठाम ने बालक रवीन्द्रनाथकें वर्षामे टिपुर-टिपुर पहिल काव्य फुरलनि । फेर बेरमे दक्षिणेश्वर ओ रामकृष्ण मिशनक आश्रम पहुँचैत गेला । बेलूरमठमे रामकृष्ण परमहंसक साधना स्थल, मंदिर घाट देखल, किछु हुनक साहित्य कीनल । मिशनक आश्रममे सेवाकाज कोना संन्यासी लोकनि निष्कामभावें करैत छथि से सब देखि-सुनि तुलसी मनहि मन प्रेरणा ग्रहण कयलनि । साबी शारदामणि देवीक साधना-मन्दिर जाय हुनके विष्यमे अपर्णा देवीसँ किछु-किछु पुछैत रहलि ।

'अहाँ ई सब कतऽ पढ़लिऐ ?' साबी अपर्णा देवी दिस इसारा करैत कहल—'हमर ई गुरुआनि छथि, बंगला सिखौलनि । हमरा रवीन्द्रबाबू ओ शरदबाबूक रचना सब पढ़बामे खुब मन लागल । काबली बालाक मीनी ओ डाक बाबूक रतन नहि बिसरल अछि । शरदबाबूक अन्नपूर्णा, ओ बड़दीदीक चित्र-चरित्र मनमे बसल अछि । पुरुषपात्रमे सव्यसाचीकें नहि बिसरल छी ।' सुनि-सुनि तुलसीक मुग्ध छल ।

रामकृष्ण आश्रममे पुरुष संन्यासी द्वारा सेवा कार्य करबाक विवरण सुनि सावित्री अपर्णा देवीसँ पूछल—'सेवाकार्य पुरुषसँ जे होइछ, स्त्रीक जन्म तँ सेवे लेल भेल छैक। माय-बापक सेवा, पतिसेबा ओ नेनाक पालन-सेवा, तखन समाजक सेवाक शिक्षण किएक ने एकरा सबकेँ देल जाइ छैक ? ओ तँ सेवाक काज और नीक जकाँ कऽ सकैछ ?'

'हँ हँ, करतै किएक ने ? करितो छैक। चलू, एहि ठाम महिला-आश्रम छैक। ततय देखब जे ताहि सभकव्यावहारिक शिक्षा कोना कोना चलैत छैक।'

सभ गोटे 'निवेदिता महिला आश्रम' देखय जाइत गेला। आश्रमक व्यवस्थापिका हिनका लोकनिकेँ अनाथ विभाग लऽ गेलथिन, ओतय अंध-वधिर लोकनिकेँ शिक्षण-प्रशिशण देल जाइत छल। बाल-शिबिरमे बच्चा सभ खेलैत, गीत गबैत, किछु गोटे वाद्य सिखैत—शिक्षिका हुनका किछु निर्देश करैत छली। एकटा आरोग्य-शाला विभाग छल जाहिमे रोगी लोकनिक सेवा-सुश्रूषा चलैत छल। स्वास्थसेविका स्त्री छली, प्रधान तकर लेडी डाक्टरे रहथि। सावित्री सबतरि घूमि-घूमि व्यवस्थापिकासँ कोना को योग-क्षेम चलैछ से सब बड़े मनोयोगसँ देखैत-सुनैत रहलि।

फाटकसँ सब बहरायले छल, तुलसी देखल जे एक व्यक्ति हमरा दिस बड़े ध्यानसँ ताकि रहल अछि। ओ कने आगू बढ़ि देखल तँ सामने पड़ोसी गामक जिगरी दोस्त जगदीश ठाढ़ अछि। दूहू लपकि कऽ एक दोसरासँ लपटि गेल। गाम-घरक हालचाल पुछलाक बाद कलकत्ता कोम्हर अयलहुँ, कतऽ टिकल छी से सब गप्प भेलैक। कलकत्तामे की सब देखल तकर चर्चा चललैक।

जगदीश बाजि उठल—'अरे ! अहाँ तँ कलकत्ताक इजोरिया पच्छ देखल अछि, कने अन्हरियो पक्ख देखि लियौ तखन चित्र स्पष्ट होयत।'

'बेस। परंच आइ कने बिलंव भऽ गेल अछि, इहो सब संग छथि। काल्हि संग चलब।'

'तँ हम डेरहि पर चल आयब, तखन दूहू गोटे संगे चलब।'

एकैस

दोसर दिन जगदीशक संग तुलसी टहलिते हुनक महल्ला गेल। स्यालदहक एक किनारक गली। झुग्गड़-झोपड़ी पाँतिक पाँति। छप्परक स्थानमे कोनोपर तख्तौ, कोनोपर टिन, कतहु पोलीथिन चढ़ल, कतहु खढ़-खरही ओ तारक झाड़पातसँ छाड़ल। गलीक रास्ता सिकस्त। बगलमे लंबमान खत्ता। किनारमे मल-मूत्र गंध करैत। पैखाना फिरबाक यैह स्थान। एम्हर-ओम्हर सगरो कूड़ा-कर्कटक ढेर। नेना-भुटका ओहि पर कुदत-रेङैत।

बीचमे दु-एकटा पानिक कल। बालटी-टीन-ढेङरियैल, लोक पानि भरबा लेल आपसमे लड़ैत झगड़ैत।

नाक मुनि कऽ तुलसी ओहि टोलीमे प्रवेश कयलक। गाम दिसक अनेको लोक ओहि ठाम भेटलैक। केओ रिक्सा चलबैछ, केओ कुली कबाड़ीक काज करैछ, केओ मूढ़ी-कचरो बेचि गुजर करैछ। जगदीशक झोपड़ी एक कातमे छलैक, कने हवा प्रवेशक गुंजाइश छलै, गंधो किछु कम छलैक।

तुलसी बाहरमे राखल एक चौकी पर संगहि बैसि गेल। जगदीश लगक एक दोकानसँ दू गिलास चाह नेने अयलैक, दुहू पिबैत-पिबैत गप्प करय लागल।

जगदीश कहैत छल—'एहिना मुहल्ला सभक कात-करोटमे झुग्गी-झोपड़ीक कतार जमा भेटत। बेकारीक मारल गाम-घरक

लोक सब कलकत्ता अबैत अछि किछु काजक खोजमे। काज जँ भेटियो जाइत छैक तँ रहत कतय ? किछु दिन प्लेटफार्मपर, सड़कक पटरी पर राति कटैत एही सबभे आबि चिन्हा-परिचयबाला लोकक सङ रहैत अछि। फेर कतहु अगल-बगल जगह देखि झोफड़ी लगा लैत अछि। एहि तरहें लाख-लाख लोक कलकत्तामे बसि रहल अछि। एकरा सभक लेल ने कोनो इंतिजाम सरकार करैछ ने कारपोरेशन, ने कोनो संस्था-सोसाइटी। पुस्त-पुस्त एहिना जीवन बीति रहल छैक। दोसर दिस अट्टालिकापर अट्टालिका। महल एहन-सब जाहिमे महल्ला बसि जाइछ—डॉगर व्युल्डिग, बिड़ला व्युल्डिग सन शहरी मकान मे डेरा छै बजार छै होटल छै बैंक छं, डाक घर ओ अस्पताल छै। एकटा शहरे जेना समेटि नेने हो। सड़क-परिवहनक सटले व्यवस्था छैक। टाका-पूजीवाला, दमगर नोकरी वाला सब ओहीमे आबि रहैत अछि।

'परंच गामसँ आयल, शरीरसँ कर्मनिहार लोक सब तँ दिनमे खटैत रहत, रातिमे स्टेशनक मुसाफिर खानामे, पाछां किछु जुड़लैक फुट पाथ पर सड़कक पटरीपर पड़ि रहल पाछाँ झुग्गी झोपड़ीमे शरण लेलक ?'

तुलसी जिज्ञासा कयलक—'अहाँ कोना गाम छोड़ि कलकता पहुँचलहुँ ?'

'हम तँ दोसर महायुद्ध शुरू होयबाक बादे कलकत्ता आबि गेलहु। कोन-कोन बेलना ने बेलल। किछु दिन रिक्सा चलौलहुँ, फेर फेरी लगौलहुँ, एखन एकटा चाह-बिस्कुटक दोकान एतहि खोलि नेने छी। एहिसँ खोंटि खाँटि एतहु खाइ-पिबैत छी, किछु गामो पठबैछी।'

'तखन ४१क बंगालक अकालमे तँ एतहि होयब ?'

'हँ हँ, एतहि छलहुँ। लाखक लाख लोक अन्न बेत्रेक एतय मरि गेल। जखनकि गोदाममे, बजारमे, बड़का-बड़का गल्ला-स्टोरमे अन्नक ढेर लागल छलै। मुदा गरीबक टेर के सुनैए!'

'सुनैछी जे ३० लाख लोक एतय मरिगेल छल। सभ वर्गक लोक होयत। पाइओवालाकेँ अन्न नहि भेटैत छलै, पाइसँ तँ पेट नहि भरैछै। ओहो सब तँ अन्न बेत्रोक···'

'से के कहैछ? पाइवालाकेँ कतहु अन्न नहि भेटै? ओ तँ अपचे खयबे करय, कीनि कऽ घरमे जमो राखि देने छल। ताही सबस अन्नक एते कमी भेलै। दोकानक आगाँ तख्ती लटकल छल जे अनाज नहि, आ' गोदाममे अन्न सड़ै छल।'

'तखन! सरकार की करैत छलै?'

'विदेशी सरकारकेँ देशी लोकक जानक की मोल! कोन चिन्ता! ओकरा चिन्ता छलै युद्धक। ओकरा चाहै छलै युद्धमे लड़बा लेल भारतीय जवान। युद्धक रसद पहुँचयबा लेल टनक टन अनाज। तखन तँ जे हयबाक छलै से भेलै।'

'सुनैछी जे बंगालक लोक बेसी मुइल।'

'सेहो भेलैक। गाममे अकाल पड़ने जन-मजूरा, छोटका किसान चुट्टी-पिपरी जकाँ धारी लागल घर छोड़ि कलकता दौड़ल। एतय तते अन्न कतयसँ आबओ? होटल माड़ पियबैत छल, रिलीफमे सड़ल आँटा खुअबैत छल। तखन जे होयबाक से भेलै।'

'अपना दिसक लोको तँ कलकत्तामे बहुंत रहैछ, तकर की हाल छलै?'

'किछु लोक तँ आखिर पड़ा-पड़ा कऽ गाम-घर चलि गेल। परंच एतहिसँ गुजर कयनिहार हजारक हजार लोक जे एही ठाम रहिगेल से अधिकांश भूखे टटा कऽ मरि गेल। सड़क-गली सगरो मुर्दासँ पटि गेलै। बंगला बासी गरीब भिखमंगा तँ सहजहि परंच बाहरी लोकमे सबसँ अधिक तिरहुतिए लोक मुइल!'

'तखन एहि ठामक मिथिलाक रहनिहार बुद्धिजीवी जनसेवी लोकनि की किछु कयलनि?'

'अरे ! ओहि समय बुद्धिजीवी कहौनिहार कते छलाह ? अधिक तँ भनसिया, किछु लोक ट्राममे, किछु पूजा-पाठमे लगनिहार। पढ़ल लिखल किछु छलाह तँ हुनक कोनो संगठन नहि छल। संघ ई सब तँ बादमे बनल अछि।'

'हँ, एक बेर युद्धक अंतिम समयमे जखन जापानी बमबाजी आक्रमणक बिभोषिकामे लोक एहि ठाम सँ पड़ायल छल, तखनहुँ अहाँ एतहि छलहुँ ? तुलसी पुछि बैसल।

'हँ हँ, ओहू बेर ताल मचल छल। आनो लोकमे भगदड़ मचल छलै अवश्य, परंच सबसँ बेसी पड़ैनिहारमे अपने दिसक लोक। मन पड़ैछ भोड़ एते छलै जे गाड़ीमे जगह नहि, स्टेशन-स्टेशनमे कैम्प खुजि गेल छल। कते ओहूमे पिचयला-पछड़ला। कलकत्ता जे रहि गेल तकरा तँ से-सब किछु नहि भेलैक।'

'फेर जिन्नाक पाकिस्तानी नाराम बहकि कऽ जे सब डायरेक्टर एक्शनमे लूटपाट, अगिलगी, छूरेबाजी मचौलक ताहूमे जे मछुआबाजार अलीपुर मे रहनिहार तुरहुतिया लोकक बर्बादी कम नहि भेल छल। कते मुइल, कते नोकरी व्यवसाय छोड़ि गाम पड़ायल-सेहो सब अपन आँखिएँ देखनेछी। फेर स्वाधीनताक झंडा फहरैवामे हम सब पछुएल नहि छी। आब ने बंगला बंगालीक, महाराष्ट्र मराठीक, पंजाब पंजावीक सुनै छिऐ ? मुदा हमरा सभक मिथिला कत रहल जे हमसब मैथिल मिथिला करब ? अहींसब झंडा उठौलउ अछि। देखबाक अछि, हमसब कहाँ धरि उठैछी कि सुतलेसुतल विआह रचवैछी।'

गप-सप करैत दिन कतिआयल देखि तुलसी चलय चाहल तँ जगदीश कहल—'अरे नगरक स्थिति देखैत चल्। कने सांस्कृतिक स्थितिकेँ सेहो अंदाज लगयबाक दृश्य तँ देखि लिअ।'

दूहू गोटे चलला तँ रस्तामे देखैत छथि, एक होटलक कातमे कूड़ाक ढ़ेरपर जे पात-पतौड़ा फेकल अछि तकरा उठा-उठा कऽ किछु नंग-धरंग छौड़ा सब चाटि रहल अछि। अपनामे कखनहु

धक्कम-धुक्का कऽ रहल अछि। एही बीच पूड़ी-कचौड़ीक बचल-खचल एकटा पतौड़ा केओ फेकलक तँ ओहिमे एक दिस कुकुर ओकरा मुँहसँ घयलक, दोसर दिस एकटा छौंड़ा, जे पाछाँ कुकुरक भुकने डेरा कऽ पतौड़ा छोड़ि देलक आ' धब्ब दऽ खसल।

तुलसीकेँ नहि रहल गेलै, ओ दौड़ि कऽ छौंड़ाकेँ उठौलक, आ' ओकरा दोकान पर लऽ जाय पूरी कीनि कऽ दऽ देलकैक।

'अहाँ कतेककेँ एना उठयबैक आ' खोअयबैक ?'

'हँ, से तँ सैह।'

दूहू गोटे चुप सन आगाँ बढ़ैत गेला। साँझक अन्हार बढ़ि रहल छलै परंच आब जाहि स्ट्रीटमे ओ सब चलि रहल छला, ओतय गैस बिजली बत्तीक प्रकाश जगमगा रहल छलैक। दूहू बगलक कोठा परक दृश्य देखि कने ठकमकयला।

गुच्छक गुच्छ वारवनिता सब बनि-ठनि कऽ साज-शृंगार कऽ क्यो कोठा पर, क्यो मुड़ेरा पर, क्यौ नीचाक द्वारि पर कतार लगौने अछि। रंग-विरंगक साड़ी-ब्लाउज पहिरने, गहना अंग-अंगमे गुथने, केओ मनटीका टेकने, केओ फूल-माला खोपामे खोंसने, क्यो मुक्त-केशी, केओ जुटी गुहने, केओ लट-लटकौने, केओ रंग निखारवा लेल पाउडर लेपने बनलि-ठनलि जेना ककरहु प्रतीक्षामे हो। कोनहु कोनसँ सारंगी-तबलाक सुर-ताल गुंजित अछि, कतहु पैजनीक छमछम शब्द सुना रहल अछि।

ओहि रूपांगनामे मुग्धा मध्या प्रगल्भा सब छथि। जे वयसाहु छथि—से ककरहु किछु बुझा रहल छथि, कोनो नोकरकेँ पान-मसाला अनबाक हुकुम चढ़ा रहल छथि। केओ ककरहुँसँ लड़ि-झगड़ि रहल छथि।

तुलसीकेँ बुझबामे बाँकी नहि रहलनि जे हम कतऽ आबि गेल छी, ककरा सभक बीच घूमि रहल छी। एहि नायिका-मंडलीमे केओ स्वीया नहि, परकीयो नहि। सब सामान्या अछि, परंच रूप-रंग साज-धाजमे असामान्या बनलि अछि।

'एतय लऽ अनबाक प्रयोजन की ?

'महानगरीक सांस्कृतिक ओ सामाजिक स्थितिक पता एही सबसँ लागत।'

'ई कोन महल्ला थिकै ?'

'सोनागाछी होइत बउ बाजार पहुँचलहुँ अछि। सोनागाछीमे सोना नहि सब टलहे अछि से देखिए लेल। बउ बाजार, जकर मूल रूप वधू बाजार छैक, से केहन लज्जाशीला संकोचशीला बधू लोकनि छथि, सेहो देखि लिअ।'

'बहुत देखल आब चलू। मन भिन्नाइत अछि। एतय जे रौनक देखैत छी तकर पाछाँ कते अंधकार छैक—से बुझबामे कसरि नहि रहल।'

यैह सब गप करैत दूहू गोटे अपन बासा गेला।

देरीसँ आयल देखि साबी बाजलि—'संगीक संग कलकत्ता देखवासँ पाहुनकेँ मन नहि अघाइत छनि। हमरा सभक संग जाइ छथि तँ तखन दिन अछैते अकछा जाइत छथि।'

'अरे ! ई किएक ने बुझैत छिऐ जे स्त्री सभकेँ संग लऽ बाहर राति नहि करी। शहर थिकै, लूटि-पाटि चलै छै।'

'सोना-चानी लेबऽ ले लूटि होइछ, काँस-पीतर चोरयबा लेल के वटमारि करैछ ? एकरा तँ धानो-चाउरक मोल पर लोक टरकवैत रहैछ।'

तुलसी चुप लगा गेला जेना कोनो घटनाक संकेत पकड़ा गेल होइन।

अनुपान छलै जे कलकत्तासँ दू-चारि दिनमे फिरि आयब, से सप्ताहक सप्ताह लागि गेलैन। गाम अयला पर तुलसी देखलनि जे संगठनक काज ठप पड़ल अछि। एहि बीच दूटा रवि बीति गेल छल, ने एकटा नव सदस्य बनल छथि, ने कोनो कार्यक्रम लेल गेल अछि। जकरा सबसँ भेट भेलैक से एक-दोसरापर दोष मढ़ैत छल।

समितिक बैसक बजौलक तँ ३१ मेसँ कुल दस गोटे उपस्थित भेला। सेहो यैह कहैत जे—ककरो एहि लेल पलखति नहि छनि। कहै जाइ छथि जे हम सब बोनि-बट्टा कऽ घर-परिवारक पेट चलायब कि गामेगाम बौआइत फिरब। जकरा पेट भरबाक भगवान उपाय देने छथिन से सब ने सभा-सोसाइटी कयल करथि। एको दिन कतहु बाझि जाइत छी तँ घरमे चूल्हि ठंढा जाइछ। जकरा ओहि ठाम टहल-टिकोरा कऽ कऽ गुजर करै छी, से एको दिन छोड़निहार नहि। रोज बोनिबट्टा करू, तखन पेट चलाउ। तोहरा लोकनिकें भगवान देने छथुन, तों सब करैत जाह।

तुलसी स्थिरतासँ सब सुनैत रहल, बाजल—हुनको लोकनिक कहब स्वाभाविक छनि। समाजक स्थिति तेहने छैक। युग-युगक बीझ कोना लगले छुटि जयतैक? समय लगतैक। जनिका एकर आँच अछि तनिका अपन तन-मन झोकय पड़त। तखने चेतना जगौल जा सकैछ। जतबे गोटें छी समाजसेवामे जुटि जाइत जाउ।

तावत् दू गोटें सेहो पछाति कऽ पहुँचला। ओ-लोकनि कहलनि—हमरा सब दोसरे फेरमे पड़ल छलहुँ। घर भरि दुखित, सबकें जड़ैया दाबने, तकरे देख-रेखमे लागल छलहुँ। गाम भरिमे महामारी मलेरिया रोग पसरि गेल अछि। के ककरा देखओ? घर-घर एके हाल! आनो गाममे जाड़-बोखार पसाही जकाँ पसरि रहल छैक।

तुलसी कहलनि —'पहिने मलेरिया पुरैनिआ-किसनगंजमे सुनैत छलिऐ, रंगपुर-दिनापुर गेनिहारकेँ देखैत छलिऐ। एतऽ कोसीक कटाव जहियासँ बढ़ल अछि, बाढ़िक पानि जे इर्द-गिर्द जमा भऽ गेल छै, तहियासँ एम्हरो भऽ रहल छै। पहिने मच्छड़क उपद्रव जे पटना-मुजफ्फरपुर शहरमे सुनै छलिऐ से आब देहातो सबमे बढ़ि गेलैए । शहरमे तँ डी-डी-टीक छिड़काव होइ छै, अस्पताल छै, दवाइ-दारूक इंतिजाम रहै छै, एहि ठाम तँ से सब किछु ने। एम्हर महामारी भऽ जाउक मुदा तकर कोनो खबरि अखबारोमे नहि। सब शहरे धरि। जेना ई देश शहरेमे बसैत होइक। गामक लोक की लोक थिक, चुट्टी-पिपरी जकाँ जहिना जनमैत अछि तहिना अकाल-महामारीमे मरैत अछि !

'हमरा सबकेँ पहिने आब एही सभक खोज-बीन करऽ पड़त । रोगीकेँ दवाइ-पथ्य जुटैवाक, डाक्टरी सेवा प्राप्त करयबाक ओ एकर रोक-थामक लेल सरकारमे जनतामे आबाज उठाबऽ पड़त । जे गोटे छी से काज ओ क्षेत्र बाँटि लिअ। दू दिनपर सब फेर एकट्ठा भऽ जाइ आ आगाँक की काज ताहि पर विचार करैत जाइ।'

योजना बनि गेल, बारहो गोटेक तीन टुकड़ी बनल, सब अपन-अपन क्षेत्रमे गाम-घर घुमय लगला ।

तुलसी मधेपुर अंचल गेला, एकगोटेकेँ झंझारपुर पठौलनि। अधिकारी लोकनिकेँ इलाकामे एपीडमिक रूपमे मलेरिया पसरबाक सूचना देलनि।

अखवारवाला संवाददाताकेँ सेहो भेंट कैलनि, ओ लगले पहिल डिस्पैच अपन पत्रकेँ पठौलनि। पुनः संगहि जा कऽ स्थितिक परिचय सेहो प्रत्यक्ष करा देल, तखन दोसर दिन बेस विस्तारसँ डिस्पैच भेल।

अगिले दिन पटनाक अंग्रेजी-हिन्दी दैनिकमे मोट-मोट शीर्षकमे मलेरिया महामारीक रूपमे पसरबाक खबरि छपल।

पाछाँ सरकार दिससँ डाक्टर ओ दवाइ पठैवाक सूचना सेहो प्रकाशित भेल ।

एहि बीच तुलसी एकटा पत्र कलकत्तामे अपर्णादेवीक नामसँ पठौलनि जे, एहि ठाम गाम-गाममे मलेरियाक कारण नरसंहार मचल अछि। एहि अवसरपर सेवा-संस्था सभ किछु करथि जे पीड़ित मानवताक रक्षाकार्यक हेतु बड़ आवश्यक छैक ।

एखन धरि कोनो कतहुसँ सहायता नहि पहुँचि सकलैक अछि । मिनिस्ट्री दिससँ मधुबनी एस० डी० ओ केँ अवश्य आदेश भेल छनि, स्थितिक रपट करथि। ओहो स्थानीय मुखिया लोकनिक मीटिंग बजौने छथि, कतऽ कतऽ कोन रूपमे कते संख्या मलेरियासँ पीड़ित अछि तकर लेखा-जोखा चलि रहल अछि। तावत् मधेपुरमे डाक्टरी सहायताक कैम्प खुजबाक सूचना देल गेल छैक ।

मलेरिया देखैत-देखैत महामारीक रूप पकड़ि लेलक । इलाकाक पचासो गाम कमला-बलानसँ भूतहीवलान टपि कोसिकंधाक गाम-गमइ सबतरि जड़ैयाबोखार घर-घर पसरि गेल अछि। टुटपुंजिया वैद-हकीम ओ अताइ डाक्टर रोगीकेँ कोनो कोनो दबाइ-मिक्चर दऽ रहल छथि। दोकानमे वैद्यनाथ-प्राणदाक तते माङ भेलै जे ओहो ड्यौढ़ा-दूना दाम देनहु नहि भेटि रहल अछि। पथ्य-पानि लेल साबूदानाक सेहो स्थानीय दोकानमे कमी छैक। सबसँ कठिनता तँ एहि लऽकऽ छै जे घरमे जखन सब जरे-बोखारमे पड़ल अछि तँ के ककरा दवाइ-पथ देतै ?

पटापट लोक मरि रहल अछि। स्मशान-घाट ओ मसानगाछी दिन-राति जरि रहल अछि, कबरगाहोमे बराबरि खोध-बीध चलि रहल छैक ।

तुलसी अपन संगठनी लोकक संग व्यस्त अछि। ककरहु दवाइ पहुँचा रहल छै, ककरो साबूदाना पिया रहल छै, ककरो ले कंबल जुटा रहल छै। जकरा किछु भऽ जाइछै तकरो अंतिम क्रिया लेल ईंधन-कफन जुटा रहल छै। जे पहिने जाति-भाइक संगठन ले चलल छल से आइ मानवताक सेवामे खटि रहल अछि। जे अछिजले पिअत छल से जकरा-तकरा हाथक बनल पथ्य घोंटि रहल अछि। जकरा

केओ छुइते नहि छलै, तकरा बैसा-उठा कऽ परिचर्या कऽ रहल अछि। एहि सेवाक काजमे देखादेखी सभ वर्गक लोक सेहो जुटि रहल छथि।

कलकत्तासँ अपर्णादेवीक प्रयत्नेँ दवाइ, दूधक डब्बा, किछु कपड़ा किछु नगद लऽ कऽ रामकृष्णमिशन ओ निवेदिता महिला आश्रमसँ सहायता पहुँचि गेल अछि। अपर्णा सावित्रीक संग सेहो पहुँचलि छथि। तुलसीक उत्साह द्विगुण भऽ अयलनि, ओ सहायताकाजमे औरो जुटि गेला। अपर्णा-सावित्री स्त्रीगणक बीच सहायतामे हाथ बँटा रहली

तुलसीकेँ खबरि भेलैक गामक डीहो टोलमे बीमारी पसरि गेल छैक। निरसू बाबूक परिवार पटोटनि देने छनि। दौड़ल मोहन पंडितक ओतय आयल। ओ अपनहु संग बिदा भेला। हबेली जाय देखलनि, निरसूबाबू अपने पड़ल छथि! ओ देखिते इसारा कयलथिन जे पहिने नन्दकिशोरक मायकेँ देखिऔन, ओ तँ अबतबमे छथि, छोट-वहिनि दुखितो भऽकऽ हुनक परिचर्यामे लागल छथिन।

नन्दकिशोरक पुछारी कैलापर हुनकहिसँ पता चलल जे ओ तँ कहिया ने हिनका भिन्न कऽ देलकनि। अपने कतहु दरभंगामे डेरा लऽ कऽ रहि रहल छथि, नेतागिरी करै छथि, परिवारो संगहि रहैत छनि। कथी लेल हमरा सभक खोज-पुछारी रखता? पहिने कहियो अबितो रहथि, जहियासँ परिवार लऽ गेला एम्हर टपितो ने छथि। मास तिनियेक पहिने एकबेर आयल छला, किछु जमीन जयदाद बंटैबा लेल।

तुलसी हुनका भरोस-प्रबोध देल। भाउजि रघियाकेँ बजाय हिनक परिचर्यामे लगा देल। दवाइ पहुँचा देल, पथ्य-पानि की देल जाय से बुझा-सुझा देल। औरो परिवार सभक खोज-खबरि लैत, आनोआन टोलक रोगशय्या-श्रितकेँ देखय-सुनय बिदा भेल।

•

मेलेरियाक प्रकोप कतोक परिवारकेँ घरहंज कऽ कतोककेँ अंग-भंग कऽ, किछुकेँ एकाध अलंग साफ कऽ कने आक्रमणमे ढील देलक

अछि । तुलसीक सेवक-गिरोहके कने काज हलुकयलैक । जाइत-अबैत सबके पुछारि करैत एखनहुँ चंक्रमण चलि रहल छैक मुदा वेग कने कमलैक अछि ।

तावत् सहायताक लेल सरकारी गैरसरकारी अनेक कैम्प खोलल गेल । डाक्टर सभ चक्कर लगा रहल छथि, दवाइ बँटा रहल अछि । समाजसेवी लोकनि खाद्य-सामग्री बाँटि रहल छथि । किछु कपड़ा-लत्ता सेहो जहाँ-तहाँसँ पहुँचल अछि, तकरो बिलहा-बाँट भऽ रहल अछि । नगदिओ सहायता भेटि रहल छैक ।

डी.डी.टी.क छिड़कायब जारी छैक । मेलेरिया निर्मूलन विभाग सेहो खुजि गेल अछि । टीका लगौल जाइछ, टोल-महल्लाक गढ़ा-गढ़ीक सफाइ भऽ रहल अछि ।

मिनिस्टर साहेब सेहो निरीक्षणमे पहुँचल छथि । हाकिम-हुक्काम हकमैत हुनका सहायता-कैम्पक-क्रिया-कलाप देखा रहल छथि । कतेक दवाइ बँटल, कते खाद्य सामग्री ओ कंबल-कपड़ा वितरित भेल तकर आँकड़ाक टाइप्ड कापी सुनझा रहल छथि । पत्रकार-लोकनिके से सब विवरण मिनिस्टर साहेब दऽ रहल छथि ।

खबरि पाबि तुलसी सेहो अपन सहयोगीक संग पहुँचला । एस. डी. ओ. साहेब हुनक परिचय दैत कहलथिन—ईलोकनि एहि अवसरपर बड़ मदति पहुँचौलनि । ई लोकनि एहि सम्बन्धमे किछु निवेदनो करऽ चाहैत छथि ।

'धन्यवाद ।' फेर मिनिस्टरसाहेब घड़ी देखैत कहलथिन—हँ हँ, एहि सम्बन्धमे की कहबाक अछि, कहि चलू ।

तुलसी कहलनि—हमरा बेसी किछु कहबाक नहि अछि । अपनेके एहि ठामक—स्थितिपर जानकारी सब भेटिए चुकल हैत । हमर निवेदन एतबे जे मेलेरिया तँ एहि ठाम सहजहिँ होइते रहैछ, परंच महामारीक रूपमे एतऽ जे नर-संहार आरंभ भेलैक तकर एक मासपर सहायता पहुँचलैक अछि । जखन सरकारी तंत्र सब ठाम

छैक, स्वास्थ्य विभाग छैक, तखन अखबारमे छपलाक बादे एम्हर किछु ध्यान देल जा सकलैक अछि ! तकरो तीन सप्ताह बितले पर ! कलकत्तासँ समाज-सेवी संस्था पहिने पहुँचि गेल सेवा कर्म चालू कयलक आ पटना-दरभंगा-मधुवनीसँ सरकारी सहायता पहुँचवामे एना देरी लगैक, ताहिमे तँ कोनो तुक नहि छैक ? जेना शरीरक कोनो अंगमे पीडा होइछै आ' ओकर अनुभव मस्तिष्क तंतु तुरंत करैछ, तहिना राज्यक देहात-जिला ओ राजधानीमे सूत्र चाही। हमरा लोकनिक निवेदन जे आगि लगिते ओकरा मिझायल जाय । कतोक व्यक्ति मेलेरियामे झोंका गेल तखन दवाइ-दारू पहुँचौल गेलै। खैर, ततबहुसँ लोक आश्वस्त अछि, अपनेकेँ धन्यवाद दैत अछि।

मिनिस्टर साहेब धन्यवादकेँ स्वीकार तँ कयलनि परंच मन कने तिताह छलनि। कहलथिन —'सरकारी तंत्रमे के सब रहैछथि ? समाजेक लोक ने। यावत् समाजक सहयोग नहि रहतैक तावत् सरकारे कहाँ धरि की कऽ सकैछ ! एहू ठामक जनताकेँ तँ चाहैत छलै जे दरभंगा-पटना पहुँचि खबरि करैत। अरे ! नेनोकेँ मायक दूध भेटै छैक कनलेपर। बात से थिकैक ने ?' पीठ थपथपबैत कहल कोनो तरहक विघटन होइक खवरि चाही। अहाँ पटना अवैत रहैछी किने ? जखन आबी तँ भेंट करी। समाजसेवीकेँ हमरा लोकनि तकिते रहैछी। मिनिस्टर साहेब बिदा भेला। कारक घररोहि हुनका पाछाँ चलल।

तइस

तमुरियामे कलकत्ताक महिलाश्रम द्वारा जे कैम्प खुजल छल, ताहिमे अनेक महिला रोगिणीक शुश्रूष चलि रहल अछि। अपर्णा देवी ओकर देखरेख कऽ रहलि छथि, सावित्री सेहो ओही काजमे जुटलि छथि। दवाइ ओ पथ्य-पानिक लेल खास व्यवस्था अछि।

जनिका कपड़ाक अभाव ओढ़ना-ओछौनक कमी देखल गेलनि, सबकें तकर वितरण कयल गेल अछि।

क्रमहि रोगीक संख्या पतरायल अछि। जे नीकें भेल जाइ छथि तनिका किछु नगदी सहायता सेहो देल गेल छनि जे ओ किछु दिन धरि काज-धंधा विनु कयनहुँ निर्वाह कऽ सकथि। अधिकांशमे श्रमिके महिला ओहिमे भर्ती भेल।

बीच-बीचमे तुलसी आयल-गेल करै छथि। अपर्णा देवीक सेवा-श्रद्धा ओ सावित्रीक तत्परता देखि ओ मुग्ध छथि।

सप्ताहक बाद जखन तुलसी घूमैत-फिरैत आयल तँ देखल जे कैम्पमे ४ गोट मात्र स्त्रीगण रहि गेली अछि। ओहूमे दू सासु-पुतोहु जनिक घरक मुखिया मेलेरियामे चलि बसल रहथि ओ जवान बेटा बाहर काज करैछल से आइ जा रहलि छथि, बेटा लेबय आबि गेल छनि। दोसर एकटा प्रौढा छथि, जनिक घरबाला एही महामारीमे चलि बैसलथिन, तनिक नैहरवलाकें खबरि दऽ कऽ बजानेने छथि। ओहो हिनका लऽ जाय रहल छथि। परंच एकटा नवयुवती अछि जकर माम-मामि दूहू नहि रहल से कतऽ जायत, तकर समस्या अछि।

जखन पूछल गेलै जे अहाँकें के कत छथि, तखन मधुरी बाजलि—'हमरा कहाँ केओ अछि जत हम जायब ? काका-काकी छलथि, से बैलाइए देलथि, मामा-मामि छली से रहिए ने गेलथि, तखन हमर के रहत ? अहीं लोकनि जतऽ राखि देब, हम रहि जायब।'

की कयल जाय ? तकर समस्या अछि। तुलसीकें सेहो किछु नहि फुरि रहल छनि। जँ पुरुष-पात रहैत तँ कतहु काज लगा देल जेतंक। ई युवती, जकर बिआहो नहि भेल छ तकरा की कयल जाय, कतऽ राखल जाय ?

सावित्री किछु सोचि कऽ बाजलि—पाहुन, हम बहिनिकें कहै छिऐ, एकरा अपना लग तावत् राखि लेअय। फेर विआह-दान भऽ जेतैक, अपन घर बसत।

अपर्णा निःश्वास लैत कहलनि—'हँ हँ, सैह नीक। हुनकारो ध्यान रहत, कोनो जुगुतगर लोक जखन भेटि जाय, हमरो लिखि देब। जहन प्राण रक्षा भऽ गेलैक तँ एकरा भविष्यो सुरक्षित रहैक से देखहि पड़त।' तुलसी गंभीर भऽ कऽ सुनैत छला।

सैह भेलैक। कैम्प उठा देल गेल ओ मधुरीकें नेने सब गोटे एतय आबि रधियाकें सौंपि गेला। छीतन सुनलनि, गंभीर छला। परंच सारिक कथा टारि देता, से हुनको नहि भेलनि। अपर्णादेवी सन महतमाइनि जखन अपनो आबि गेलि छथि, ओतहुसँ खोज-पुछारि करैत रहबाक बात कहै छथि, तँ किछु दिन सैह रहओ। हँ, कने जल्दिए घर-वर पता लगैबाक भार हमरा सबकें उठब पड़त। बेस देखल जयतै।

अपर्णादेवी महिला सेवासंघक कार्यकर्ता लोकनिक संग कलकत्ता बिदा भेली। सावित्री किछु दिन एतहि रहि एहि सभक व्यवस्था करबाक इच्छा जनौलथिन आ स्वीकृति पाबि रहि गेली। बहुतो कार्यकर्ताक संग तुलसी हुनका लोकनिकें बिदा करबाक हेतु स्टेशन धरि अरियातल; अपर्णादेवी ओ महिलासंघक जयकार करैत, अपन आदर अर्पित करैत सब फिरैत गेला।

मधुरी जे पीअरि भेलि कैम्पसँ आयलि छलि किछुए दिनमे लला गेलि। एतबे दिनमे देहपर मासुओ चढ़ि गेल छैक। बड़ी-बड़ी टा आँखि ओकर मुख-श्रीकें जेना कत गुन बढ़ा देने हो। बुझिए ने पड़ैछ जे कैम्पक बिलटलि छौड़ी, जकरा दिस देखबामे करुणा छोड़ि आर कोनो भाव ककरो मनमे नहि अबैक तकरा देखि कऽ 'अमिय हलाल मदभरे' दोहा पढ़बाक मन कोनो युवककें भऽ अबैछ।

परंच मधुरीकें तकर किछु भान नहि, ओ घरक काजधंधामे लागलि मगन रहै अछि। रधियाकें वर्तनभाजन नहि माजय दैछ। भानस-भात करबा लेल जखन ओ चूल्हि लग जाइछ तँ ई हुलसि कऽ बैसि जाइछनि। कहैछ—हम तँ मामीकें भानस नहि करऽ दैत छलिऐन,

मामा हमर हाथक तीमन-तरकारी परसन लऽ कऽ खाथि। कने हमरे बनबऽ देथु ने बड़की बहिनि ? नहि नीक लगतनि तँ जे करिहथि।'

ओहि दिनसँ भानस जे धयलक से धयने अछि। परसन लेवाक हिसक सबकेँ लगा देलक।

साबीकेँ छोटकी बहिनि कहि कऽ सोर करैछ। ओकर साड़ी-ब्लाउज खीचि दैछ, ओछौन लगा दैछ। साबी जखन स्वीटर बुनऽ लगैछ, रुमाल काढ़ऽ लगैछ, लगमे बैसि तानी-भरनी कों कोना से सिखय् लगैछ। किताब जखन ओ पढ़ऽ लगैछ तखन इहो टोटा कऽ पढ़ि लैछ। आग्रह करैछ जे कने हमरा लिखब-पढ़ब सिखा दिअ। सिलेट मङा कऽ किछु काल गुरुआइ करबामे एकरो मन लगैछ। जखन ओ कोनो पाँती पढ़ि कऽ घर-घर कऽ सुना दैछ तँ साबी कहैछ—गे दइओ, तँ थोड़बे दिनमे हमरो पढ़बऽ लगबें।

छीतनक, जनिका इहो साबी जकाँ पाहुन कहऽ लागल छनि, कपड़ा-लत्ता सेहो झाड़ि झुड़ि कऽ रखैछ। खुर्पी-खन्ती जखन बाड़ी कोड़बा लेल चाहिअनि, पहुँचा दै छनि आ' फेर ओरियाकऽ जगह पर राखि दै छनि।

मधुरीकेँ सबसँ बेसी ताक रहैछ जखन तुलसी कतहुसँ घुमैत-फिरैत घरपर अबैछ। लगले ओ छाता-कुर्ता ओरिया कऽ राखि देतै, पानि आनि कऽ राखि देतै। यावत् ओ हाथ-पैर धोअय तावत् चाह बना कऽ कप राखि जेतै। तुलसीसँ सामना-सामनी बजितो ने अछि, वैह जखन टोकथिन तँ मुड़ी झुकौने दु-एक शब्दमे जवाब दऽकऽ फेर साबी लग चलि जाइछ। हुनके कहैछ—'मास्टर साहेबकेँ पुछिऔन जे थारी लगा दिऐन। कखन ने घरसँ बहरैल रहथि, भूख लागल हेतनि।' साबी मुसकियाइत कहैछ, तों अपने एतबा पुछि लितहुन, तँ की होइतह ? एहिले हमरासँ पुछैवाक कोन काज ? फेर कहथिन, भूखल जँ बुझै छहुन तँ थारी परसि कऽ किए ने दऽ अबै छहुन ?

मधुरी थारी परसि दऽ अबैछ। जाहि दिन ओ परसन नहि मङै-छथि ताहि दिन एतबा साहस कऽ पुछि दै छनि—'की भानस नहि नीक भेल छनि ?'

'नहि नहि, बड़ स्वादिष्ट, कने दालि दऽ जाउ। अरिकोंचक एकटा चक्का सेहो दऽ जाउ।'

पहिने जे सबकेँ भार जकाँ मधुरीक घरमे राखव लगलनि से मनेमन कहै छथि जे ई तँ सभक भार उतारबे लेल आयलि अछि।

हँ, एतबा भार सबकेँ बढ़ि रहल छनि जे एकर भार कोना उतारल जाय? एहि अनाथिनीकेँ सनाथ करबा ले की कयल जाय?

चौबीस

ग्राम-पंचाइतक चुनावक नोटिस बहार भेलैक। एहि गाममे पहिले बेर एना चुनाव भऽ रहल छैक। मुखियाक हेतु डीहटोलक नन्दकिशोर ठाढ़ भेल छथि। एम्हर लोक तुलसीकेँ घेरलक, अहाँ अवश्य ठाढ़ होउ। किछु ननुनच कयलाक बाद लोक सभक दवाब देखि, तथा गाम सुधारक किछु रास्ता बहार कयल जा सकैछ सेहो सोचि, तुलसी अपन उमेदवारी घोषित कयलनि। तुलसीक चर्चा जोर पकड़ि रहल छल से देखि नन्दकिशोर सोचि रहल अछि जे एकटा पिछड़ावर्गसँ केओ ठाढ़ कऽ देल जाय जे वोट बँटि जाय। सबकेँ विचार छलै जे एहि लेल तुलसी ठीक छथि वैह रहथि। तँ ओ बड़े जोर दऽ कऽ चुनावमे जे खर्चवर्च करऽ पड़ैत छै से अहाँकेँ भेटि जायत से सब कते कहि-सुनिकऽ अपने गिरोहक संगी रघुनन्दन यादवकेँ नन्दकिशोर कहुना तेसर उमेदवार बना कऽ ठाढ़ कऽ देल।

चुनावक क्षेत्र जते छोट रहैछै तते कनवासिंगमे जोर लगबऽ पड़ैछै। परंच तुलसी दिससँ तकर ततेक प्रयोजन नहि पड़लैक। तुलसीक सेवावृत्तिक परिचय सबकेँ नीक जकाँ लागल छलै, सबकेँ प्रत्यक्षे छलै, तेँ प्रत्यक्षमे ककरो प्रमाण तकबाक काज नहि रहैक।

परंच नन्दकिशोरक नेतागिरीक ई पहिल सीढ़ी छल—पंच, तखन पंचप्रमुख, फेर विधायक—लोक तँ एहिना बढ़ैछ। …मुदा तुलसीआ बीचमे बाधा बनि गेल अछि।

गुलछर्रा उड़ल—कलकत्तासँ जे देवीलोकनि आयल छलि से कैम्प एहि ठाम स्थायी रहि जाइत। मुदा तुलसीक तेहन आचरण भेलै जे ओ सब लगले पड़ायलि। माल-असबाब जते भेलै से तँ परिए लगलै, कैम्पमे पड़कि गेल, इज्जतिपर जखन पड़य लगलै तखन देवीजी सब परायलि। एकटा देवीकेँ सारि बना कऽ राखिओ लेलक। दोसर एकटा सयानि छौड़ीकेँ सेहो पोसि रहल अछि।

दोसर दिस किछु गोटे टिपलक जे—मिनिस्टर साहेब एहि ठाँ एकटा रेफरल अस्पताल खोलबाक विचार कयने छला। एकटा कल-कारखानाक सेहो योजना छलनि, परंच जखन लोक हुनक अभिनन्दनमे छल तखन ई तेहन ने बात चिबाचिबा कऽ उलहन उपराग दिअ लागल जे ओ चोट्टहिँ बिदा भऽ भेला। सब विकासकाज ठप्पे पड़ि गेल।

तेसर दिस चटकार भेल—अरे! तुलसिआ तँ सब दिनक टेंटिआह अछि। मधेपुरक महासभामे नहि देखलहक जे जखन महराज भाषण देब ठाढ़ भेला, बीचमे ई तेना गेङ रोपलक जे मिथिलेश दोसर दिन सभा नहि कैलनि। लोक आशा रखने छल जे जाइत काल एहि इलाका लेल किछु कऽकऽ, किछु दऽकऽ जैताह से एही टेंटिआहा द्वारे नहि भऽ सकल।

'यैह बनता मुखिया पंच! एहन मुह-कानबाला जँ गामक मुखिया हो तँ हाकिम-हुक्कामसँ काज की करौत, लड़िते-झगड़िते रहत।

'अरे! बाभनक गाममे राड़ पजियार' कतहु सुनलहक अछि?'

उत्तरो कतहु भेटिए जाइक-'हौ बाभन भेने की हेतै? रावणो ब्राह्मणे छल, मुदा राक्षस तँ वैह कहौलक। गुरुद्रोण आचार्य छला मुदा ककर पच्छ लेलनि, जे पांडवके लाचछादाह कऽ चुकल छल, द्रौपदीकेँ नाङटि करबापर तुलल छल। आ' विदुर छला शूद्रीक उदरसँ जनमल, मुदा हुनक उपदेश आइओ गीता बनल अछि।

'ई तँ मतदान थिकै मतदान। दान पात्रकेँ देल जाइछै। पात्र के? जे मायोबापकेँ दुख-पीडामे छोड़ि दिऐ से आ कि' जे अनको माय-बापकेँ बेर-विपत्तिमे मदति करय से? लोककेँ सब

बात बुझले-सुझले छै। ई गाम-घर थिकै, पचैंवाजी अखबार-बाजीसँ एहि ठाम ने केओ उठि सकैए ने खसि सकैए। के कते पानिमे अछि से बुझले छै।'

एक पक्ख धरि घोल मचल रहल। दुहू पक्षसँ क्षेपको जोड़ल जाइत रहल। उतरा-चौरी कतहु मारि-पीटि पर उतरि आयल, घर-आङन अगर-डगर सगरो भोट-भाटक चर्चासँ गुंजित-रंजित होइत रहल।

अन्तमे वोट खसल, गनती भेल। तुलसी मंडल मुखिया चुनल गेला। दोसर नंबर पर छला यादव, तेसर भेला नन्दकुमार। सरपंच चुनयला मोहन मिसर। पंच सबमे अधिकाँश सेवासंगठनी लोक अयला। वोटक ज्वारि उतरि गेल।

एहिमे बेसी स्त्रीगणक वोट पड़ल छल। साबी आङन-आङनसँ हकारि कऽ हुनका सबकें पाँतीमे ठाढ़ कयलनि, वोट खसबौलनि। स्वयं नन्दकिशोरक माय-मौसी कोम्हर मोहर लगौलनि सेहो लोकके सन्देह छलै।

माधुरी वोट-वाटमे तँ नहि रस लेलक, परंच तुलसीक व्यस्ततामे, हुनक खैब-पीब चाह-जलपानक ओरियौन तँ करिते छलि, धोती-कुर्ता मैल नहि रहनि, छाता-चट्टी ताकऽ नहि पड़नि, तकरो ताक एकरे छलै।

पचीस

ग्राम पंचायतक संगठनक समारोह बड़ उत्साहसँ मनाओल गेल। ग्रामवासीक आग्रहें इलाकाक एम०पी० ओ एम०एल०ए० उपस्थित भेला। दरभंगाक कलक्टरकें, मधुवनीक एस० डी० ओ०कें सेहो हकारि अनलनि। पोखरिक भीड़पर समारोह भेल।

सभा तँ तेसर पहरमे आयोजित छैक। परंच पूजा-पाठ भोरेसँ जारी अछि। पछबारि टोलक देवीस्थानमे अँचरा चढ़ौल गेल। डीहटोलक ठाकुरबाड़ीमे कीर्तन-भजन आरंभ भेल। दछिनबारि महालमे महाबीरजीक धुजा बदलल गेल। उतरबारि टोलमे काली, नरसिंह, साहेबखबास पूजल गेला। आ' गामक गच्छ-गच्छमे तेना उत्साह छल जे सब जाति-वर्ग अपन-अपन लोकदेवताकेँ चढ़ौआ चढ़ौलनि। अपन-अपन ढंगक ढोल-ढाक पिपही-तुरंही-सिंगा बजैत रहल। डीहवारकेँ घोड़ चढ़ल। बिसहरा थानमे भाव-भगत भेल आ दूध-लावा चढ़ल। दू-चारि घर मलाह छला से पाठी चढ़ाय कमलाक टाहि लगौलनि। डोम चमार भतमसैया देवताकेँ चढ़ौलनि, मनुसदेवाक सेहो पूजा चढ़ल। डोमकछ नाच नचैत गेला। मनसाराम-खोखा-धर्मराज भाँति-भाँतिक लोकदेवता जगौल गेला। भगता लोकनि भाव खेलाइत गेला। बुझि पड़ै छल छतीस वर्ग छप्पन देवता-तनिको सभक जेना सभा बजौल गेल हो। सत्यनारायण पूजाक सामूहिक आयोजन रातिमे रहत। चौपहरावाला अपन झालि-मृदंगकेँ सजा-मजा रहल छथि।

सभा आरंभ भेल। एम० पी० साहेब उद्घाटक, एम० एल० ए० साहेब अध्यक्ष ओ कलक्टर साहेब मुख्य अतिथि भेला। नवानी विद्यालयसँ जे वैदिकजी बजौल गेल छला ओ वेदध्वनि करय लगला तँ रुद्राध्यायक संपूर्ण स्वस्तिवाचन सुना गेला। बालक-बालिका मिलि कऽ स्वागत-गान कयलनि। पंडित मोहन मिसर स्वागत-भाषणमे अतिथिलोकनिक स्वागत करैत ग्रामवासी लोकनिकेँ धन्यवाद करैत एकटा विचार-सूत्र देलनि जे समाजसेवी लोकनिकेँ चुनि कऽ ओ ग्रामसंगठनक एकटा रास्ता देखौलनि अछि। हमर विचारमे तँ नीचासँ ऊपर धरि राजनीतिक सेवा ककरहु भेटैक तँ पहिने ओ गौआँ-घरुआसँ चुना जाथु तखने ओ कोनो क्षेत्रसँ ठाढ़ भऽ सकै छथि। कारण, हुनक चारित्रिकता ओ कर्मठताक कसौटी तँ यैह लोकनि भऽ सकै छथि।

हुनक एहि वक्तव्यसँ मंचपर कनी गंभीरता ओ रुक्षता आबि गेल।

तकरा फेर धोइत-पोछैत हलुकबैत ओ कहलनि—'हँ, गौआँ-घरुआ सेहो कखनो गल्ती कऽ जाइ छथि। एतहि देखू ने, हमरा सन बूढ़-अकार्यक केवल बात चिबौनिहार लोकके सरपंच बना देल।' सभा हँसि पड़ल।

एकाएकी सभ टोल, सभ समाजक एक-एक व्यक्तिके दू-दू मिनटक समय भेटल। गामक उन्नतिमे अपना-अपनी सेवा-सहयोग देवाक कथा कहैत गेला।

तखन शपथ ग्रहणक कार्यक्रम चलल। पुनः मुखिया तुलसी मंडल अतिथिलोकनिक प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करैत पंचायतक विकास योजनामे गामक कृषि-व्यवसाय, रोजगार, शिक्षा-स्वास्थ्यक हेतु की सब प्रयोजनीय अछि तकर विवरण देलनि तथा जनप्रतिनिधि ओ पदाधिकारीक सहयोग-याचना कयलनि।

सांसद ओ विधायकक विस्तृत भाषणक बाद कलक्टर साहेब संक्षेपमे गाम-संगठनक एहि भावनाके प्रोत्साहित करैत डी० डी० ओ०सँ कोना की सहयोग भेटि सकत, से बुझयवाक संकेत कयलनि। ओहो संक्षेपहि प्रोत्साहित कयलनि।

धन्यवाद ज्ञापन हेतु जखन सावित्री कुमारीक नाम कहल गेल तँ लोक साकांक्ष भेल जे गाम-गमइमे के ओ ग्रामीण महिला एहनि अछि जे ओ सामने उठिकऽ एहेन महान अतिथिक बीच मुह खोलि सकय!

परंच सावित्री गामक रहितहुँ नागरिका, सेहो महानगरीक समाजसेविकामे रेहलि-खेहलि भऽ चुकलि छथि। बड़-बड़ नेता-वक्ताक भाषण सुनि चुकलि छथि। आइ मुखियाक सहयोगमे बजबाक अवसर पाबि बड़ उत्साहसँ कहय लगली। जहिना अतिथि-अभ्यागतक प्रति सुन्दर संबोधन ओ कृतज्ञता उदोधन कयलनि तहिना गाम-प्रधान देशक विकासमे ग्राम-संगठनक की आवश्यकता छैक, कोना एकर विकास भऽ सकतैक, तकर संक्षेपहि चित्रण कयल। तथा भारतक आन प्रदेश बंगाल-पंजाब महाराष्ट्र-केरल कर्नाटकक

विकासमे की अंतर छैक तकर तुलना करैत, जापान-रूस ओ अमेरिकाक नागरिकक स्थितिबोधसँ सबकेँ चकित-विस्मित कऽ देलनि। थपड़ीपर थपड़ी पड़य लागल। जखन हिनक परिचयमे मोहन मिस्र कहलथिन जे ई मुखिया तुलसीमंडलक भाउजिक छोटि बहिनि छथि, मेलेरिया महामारीमे महिला कैम्प द्वारा ई बड़ पैघ समाजसेवा कयने छथि, सब हुनका दिस साकांक्ष छल।

सभामे बैसल श्रोता लोकनि खन सावित्रीकेँ, खन तुलसीकेँ देखय लगला। किछु-किछु गुड़गुड़यबो करैत छला। नन्दकिशोर तँ सभामे नहि आयल रहथि। हुनक सङोरक किछु संगी-साथी छल-थिन से अपनामे गुनगुनाइत रहथि जे—एही छौंड़ीकेँ लऽ कऽ नन्द-किशोर एते कुदैत-उछलैत अछि। भोटोमे ई जा-जा कऽ सब पर नजरिक जादू चलौलक! दोसर टिपलकैक—अरे! एकरा छौड़ी कहैत छह, ई तँ कलकत्ताक खेललि-खेहलि माउगि अछि, कतेक नेता सबकेँ मुट्ठीमे रखने अछि, अफसरोकेँ मोहि लैत अछि। मुखिया एकरा घरमे पोसैत छथि आ राजनीति खेलाइ छथि। लगेमे बैसल केओ सुनलक तकरा रहल नहि गेलैक बाजि उठल—जाकी रही भावना जैसी। प्रभुमूर्ति देखी तिन तैसी—खिसिऐल बिलाड़ि धुर-खुर नोचिते अछि।

समदाउनि द्वारा सभा विसर्जित भेल। अतिथि लोकनिकेँ बिदा कय तुलसी आरंभिक सफलतासँ प्रोत्साहित छथि।

... .

एकरा बाद किछु दिन धरि तुलसी मधुबनी-दरभंगा-पटना कैलनि। अपन पंचायतक विकास लेल योजना बनौलनि। क्रमशः ओ कार्यंगत होअऽ लागल। समय अवश्य लगैत छलैक, दौड़-धूप सेहो बेसी करऽ पड़ैक मुदा क्रमशः सफलता औरो होइते गेलैक।

पहिने रास्ताकेँ ठीक कयलनि। नाप-जोख कऽ दाबल-चापल जमीनके चौरस कऽ ओकरा फैल ओ बैलगाड़ी चलबा योग बनौलनि। फेर गामसँ प्रखंड धरि सड़क पक्की करौल, जाहिसँ आवागमनमे

सबकें पहिल सुविधा भेटलैक। बिजलीक खंभा गड़ा गेल । यद्यपि बिजली नहि भेटि सकल छल।

तखन एकटा स्वास्थ्य केन्द्र खोलबौल। पाछाँ एकटा डाक्टरो देल गेलनि जे ओहि ठाम रोगीक चिकित्सा सुविधा देथि। पहिने तँ ओ गाममे अयवामे ढील देथि, परंच जखन देखल जे मुखिया-सरपंच सब चुस्त छथि तखन हुनको दुरुस्त होमऽ पड़लनि। जाहि दिन नहि आबथि तहिया आब सूचना दऽ जाथि, जाहिसँ रोगीकेँ फिरि जयबाक मौका नहि होइक।

शिक्षा-विभागक ओतय दौड़-धूप कय एकटा मिडिल स्कूल सेहो खोलबौलनि। एतबा लेल नेना-भुटकाकेँ आब दोसर गाम नहि जाय पड़ैत छैक। हाइस्कूल खोलबाक सेहो सूर-सार चलैछ। मोहन मिसरक विचार छनि, एकटा संस्कृत विद्यालय सेहो खोलल जाय।

सबसँ प्रश्न जटिल छल, बेकारी दूर करबाक। गामक छौंड़ा सब एम्हर-ओम्हर घुमैत, तास फेरैत जे अबारागर्दी करैत छल तकरा लेल किछु जोगाड़ो चाही। खेलो तेहन होइ जाहिसँ चुस्ती-दुरुस्ती होइक। ताहि लेल एकटा व्यायामशाला चाही। पुस्तकालय-वाचनालय सेहो चाही ओ कला सिखबाक साधन चाही।

ताहि लेल सरपंच मोहन मिसरक पुस्तक संग्रह भेटि गेल। हुनक चौसार सेहो स्थान लेल सुलभ छल। रेडियो सेट सेहो भेटि गेल। हारमोनियम-तबला गिटार-सितार हेतु किछु चन्दो उगाहल गेल।

ओही बीच प्रसिद्ध चित्रकार उपेन्द्रमहारथी पटनासँ मिथिलाक चित्रकला एवं सीकी शिल्पक पुनर्जागरण हेतु घुमैत छला। संयोगसँ लहेरियासराय पुलकभंडारमे मोहनमिसरकेँ अच्युतानन्ददत्तजीसँ जे ओम्हरके छला, परिचय छलनि, ओहि सोतेँ महारथी जी आबि गेला ओ सीकी व्यवसाय ओ मिथिला पेंटिगसँ किछु स्त्रीगणकेँ ओम्हर लगौल जा सकल।

से-सब तँ भेल। आब पंचायतकेँ चाहिऐक एतय व्यावसायिक जीविका। खेती छोड़ि कऽ गाममे छैक की? खेहो कते गोटेकेँ?

वर्षान्नो जुटबा योग नहि। जे खेतिहर-मजदूर अछि ओकरा खेते नहि। किछु तँ खबासीसँ, किछु चरवाहीसँ, किछु बोनिवट्टासँ पेट पालेत अछि, तकरा हेतु की कयल जाय? हिनका लोकनि देश-स्वतंत्र भेनहु परतंत्रे बनल छथि। नोकरीमे एकाध गोटे रेल इंजिनमे कोइला झोंकैत छला, किछु गोटे कोइला खानमे खटैत छला। अथापि नौकरीवाला जे परतंत्रो मानल जाइछ तँ एहन स्वतंत्र जीवनसँ हजार बड़ नीक छल। हिनके लोकनिक लक्ष्य कऽ कहल गेल अछि—'यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः।'

ताहि लेल मोहनमिसरक विचार भेल जे सहयोगसमितिक माध्यमें किछु उद्योग-धंधा ठाढ़ कयल जाय, जाहिमे लोकके लगाओल जा सकय। चरखा-करघा जे हुकुर-हुकुर करै छल तकरा गृह-धंधा बनाओल जाय। जे कने अँखिगर-पनिगर लोक होथि तनिका ट्रेनिंग देवा लय बाहर पठौल जाय। बुनाइक काजमे जे सुइ-काँटापर दिनकें दिन लगबै छथि तनिका हैन्डलूमपर लगौल जाय। परंच ताहि लेल बिजली चाही, ताहि दिस जोर लगबैत जाह। गाय-महीसि तँ पोसलें जाइछ। आब तँ बैंको ऋण-कर्ज देवऽ लगलैक, तकर जोगार कय पशुपालनमे गायकें बेसी महत्त्व देल जाय। ओहिसँ बाछा सेहो होयतैक, तकरा लऽ कऽ खेतीपर जोर देल जाय।

एक गोटे प्रश्न उठौलनि जे, एहि ठाम जे खेतिहर-मजदूर अछि तकरा खेते नइ। तखन जोत-कोड़ ककर हैत? जे बाबू-बबुआन कहबै छथि तनिको तँ सखा-पातमे चास-बास बँटैत-खुटैत वर्षान्नो पर चोट छनि। भूमि एहन नहि जे रबड़ जकाँ तीरल जाय।

दोसर व्यक्तिक सुझाव छलनि जे तकरो किछु उपाय अछि। गामसँ उत्तर-पूब जे राजक खरहोरि छैक से तँ राज द्वारा विनोबा जीकें भूदानमे देल गेलनि से ओहिना पड़ले छैक। एहि गामक किनारमे अछि, ओकरा हेतु भूमि-अधिकारीकें कहल जाय। सरकार भूमिहीनकें बासगीत देबाक घोषणा कयने छैक—से की कागजेमे रहतै? अथवा कोनो सेठ-महाजन लऽ कऽ ओहिमे ईंट-भट्ठा लगा कऽ खेत नष्ट कऽ दैक, सैह सब होयतैक?

लगले मुखियाजीके कहल गेल जे हुनका तँ चिन्हा-परिचय हाकिम-हुक्कामसँ भऽ गेल छनि । जन-प्रतिनिधि छथिए । ओहो सब एहि ठामक विकास काज लेल वचनो दऽ गेल छथि । से किएक ने तकरा खेहार कयल जाय ?

उत्साह तेहन बनल छल जे दोसरे-तेसरे दिनसँ किछु गोटेके संग ल' तुलसी जिला अधिकारीकेँ धयलनि । ओहो लोकनि किछु ग्राम-सुधारक काज देखबऽ चाहै छला । एक दिन हाकिम लोकनिकेँ ग्राम-सभा दिससँ विशेष अनुरोध कैल गेल । जन प्रतिनिधि एम० एल० ए०केँ सेहो पकड़लनि । बैंकक अधिकारी सेहो आमंत्रित भेला ।

फलतः भूदानबाला खरहोरि एवं परता पड़ल जमीन एही ग्राम-वासीके—जनिका खेत-पथार नहि छल सबके पुर्जा भेटि गेल । जेहन जकर परिवार-सपाङ छल, एकसँ अढ़ाइ एकड़ धरिक पर्चा भेटि गेलैक । अधिकांश भूमिहीन मजदूर भूमिधारी किसान बनि गेला । जकर सपनो ने देखने छला से आइ सहजहिँ सफल भेल ।

ग्रामवासी तेहन उत्साहमे छला जे ओहि दिन सबके उचिती-मिनती कऽ रोकि देलनि । राति भरि लोकगीत, लोकनृत्य गाम-देहातमे जें प्रचलित छल तकर प्रदर्शन भेल ।

प्रदर्शनक विशेषता ई छल जे ग्राम-पंचायतेक लोक सब अपन कला प्रदर्शन करैत गेला । विद्यापतिक नारदी धुनिमे नचारी, महेस-वानी,अपन लय-भासमें बरहमासा-चौमासा गबैत गेला । फेर लोरिक-दुलरादयाल आदिक लोकगाथा तथा कानपर हाथ राखि महराइ ठोकल गेल । केओ चन्दाझा-लालदासक रामायणसँ चौपाइ गाबि सुनौलनि । कीर्तनिया नाटकक क्रममे हाथी-घोड़ाक शकलमे 'ऐरा-बत चढ़ि' दृश्य देखाय लोकरुचि जगौल गेल । फेर जट-जटिन, मनचुम्भी-डोमकछ-चरख आदि नाच भेल । ढोलकपर कमला गीतक टाहि पड़ल । केओ चुटकुला सुनौलनि । केओ फुलडाली-पचमेरक गीत गौलनि । राति भरि कीर्तन चौपहरा आदिक धमगज्जर मचल रहल । साँझसँ भोर धरि उत्सवमे ग्रामवासी जुटल रहला ।

छब्बीस

वर्ष बितेत-बितैत गामक रूपे बदलि गेल। आब केओ बेकारीमे झखैत नहि अछि। केओ खेत-खरिहान करैछ, केओ बाड़ी-झाड़ीमे तर-तरकारी लगबैछ, आ' केओ गाय-महिसिक बथान धेने अछि। किछु कपड़ा बुनैत, सूत कटैत, रस्सी बँटैत, किछु गाछी कलममे लागल अछि।

नेना भुटका जँ स्कूलमे तँ युवक लोकनि पुस्तकालय-वाचनालय ओ किछु मैदानी खेलमे रस लैछ। प्रौढ़ लोकनिक दैनन्दिन जीवन काज-धंधामे लागल रहैछ। स्त्रीगण भानस-भातसँ छुट्टी पबै छथि तँ सिविया-बुनियामे मन दैछ।

ककरो जँ कतहु झगड़ादन होइछ, आड़ि-बान्ह लऽ कऽ विवाद चलैछ वा खेतचरीक शिकाइत रहैछ तँ लगले सरपंच मोहन मिसर दूध-पानि फरिछा दै छथि। बहुतो रगड़-झगड़मे सुलह-सलूकति भऽ जाइछ। मारामारी सहजहिँ, गारा-गारी सेहो कम्मे सुनल जाइछ। बुझि पड़ैछ, गामक नक्शे बदलि गेल हो। आब डीहटोल ऊँचगर नहि, उत्तरबारि खबसटोली धसल नहि। दछिनवारि गच्छ सेहो दच्छ अछि तँ पुबारि-पछबारिमे दिशाभेद जे हो दशाभेद तेहन नहि। बुझि पड़ैछ गाँधीजीक ग्राम-स्वराजक कल्पना जेना मधुपुरमे पुरि रहल हो।

... ...

गामक मनोरथ जे जते पूरल हो परंच रधियाक मनोरथ नहि पुरि रहल छैक।

तुलसी मंजरो जते पूजल जाय, पूजा पर चढ़ौल जाय, परंच ओकर वृन्तमे फूल-कोढी नहि देखल गेलैक ।

साबी साबिके जकाँ घर-बाहरक काजमे हाबी अछि, परंच ककरोपर दावी नहि जमा सकलि ।

छीतन मुखियाक भाइ बनि सम्मान पाबि रहल छथि । बेटा-बेटीसँ बाबू संबोधनें संबोधित जे होथु, काका-दादा कहैवाक सौख पुरबाक आशा लटकले छनि ।

एही बीचमे अपर्णाक एक चिट्ठी साबीक नामें आयल जे—'दादा बड़ दुःखित छथि, अहूँक पुछारी करैत रहै छथि । हमर मन एक-सरे घबराइत अछि । अहाँक माय-बाबू हुनके सेवामे लागल रहैत छथि । तें ककरो संग लऽ कऽ जल्दो चलि आउ ।'

चिट्ठी पढ़ि सावित्री कलकत्ताक यात्रा कयलनि । बहिनिक जेठ नेनाकें, जे आब बेस जैठनगर भऽ गेल छल, संग लऽ लेलनि । रधिया गद्गरित कंठें सावित्रीकें बिदा कयल । डाक्टरकें नीकें भेला पर एक बेर बाबू-मायक संग जल्दीए अयबाक अनुरोध कयलकै ।

मधुरी जयबा काल गोड़ लगैत एतबे पुछलकैक—बहिनि, कहिया धरि फिरबै ?

'जल्दिए-जल्दिए' कहि सावित्री स्टेशन बिदा भेलि ।

सावित्री पहुँचिते जे चिट्ठो पठौलनि ताहिमे लिखलनि जे डाक्टर साहेब बेहोसीमे पड़ल छथि । अस्पतालक इन्टेन्सिव केअरमे हुनक चिकित्सा चलि रहल छनि । अपर्णादेवीक संग हमरो लोकनि देखरेखमे व्यस्त छी । चिकित्सक लोकनि आशा भरोस दैत रहै छथि ।

पुनः दू सप्ताहक बादक पत्रमे छल हुनक दुःखद मृत्युक समाचार। अपर्णादेवीक माथक छाया उठि गेने ओ असहाय जकाँ भेलि छथि, श्राद्धकर्ममे जे केओ दूरक दयादबाद आयल छलथिन ओ लोकनि

घर-द्वारि बेचि बाँकुड़ा जिलाक अपन गाम चलबाक लेल आग्रह कयलथिन। परंच ई सोचैत रहै छथि, मदर टेरेसाजीसँ विचार लऽ रहलि छथि जे एही ठाम अपन घर-द्वारि सब लगा कऽ एकटा 'बाल-भारती' संस्था खोली, अपन धन-जीवन सब ओहिमे अर्पित कऽ दी। एखन एही सब गुनि-धुनिमे लागलि छथि। ओकील लोकनिसँ सेहो सलाह लऽ रहलि छथि।

तुलसी जखन पत्र पढ़लनि तखन अपर्णादेवीक प्रति हिनक श्रद्धा औरो उमड़ि पड़लनि। लिखलथिन, एहेन विचार हुनकहिसँ हो। ओ वास्तवमे मानुषी नहि देवी छथि, तेँ ने सेवाक दिव्य विचार हुनका भेल छनि। 'सेवा हि परमो धर्मः।' ठीके छैक।

परंच रधिया देवी नहि, ओ तँ मानुषी छथि। मनुष्ये जकाँ सोचैत छथि जे साबी सेहो हुनका संग रहि तेहने भेलि जाइछ। ओ लगले बाबू-मायकेँ पत्र पठौलनि—'आब तँ डाक्टरसाहेब रहला नहि, अहाँ लोकनि एतहि चलि आउ। हमरा सबकेँ सावीक चिन्ता अछि। उमेरो बीतल जाइ छै। शुद्ध बीति रहल छै, चतमे बिआह-दान नहि होइछै, तेँ एही बीच चलि अबैत जाउ। हमरा लोकनि एहि ठाम प्रतीक्षामे छी।'

उत्तर आयल—'हम सब फागुनक भीतरे आबि रहल छी। अपर्णादेवी सेहो सावित्रीक संग औती। ओ पलो भरि एकरा छोड़ऽ नहि चाहै छथि। इहो हुनक पाछु धेने रहैछ। तेँ हम सब संगहि आयब। सावीक विआहक चिन्ता हुनको छनि? तुलसीक सेवा-भाव ओ स्वभावक प्रशंसा करैत रहै छथि। ओहो एहिसँ सहमत रहती।'

तुलसी सेहो पत्र पढ़लक। ओ किछु सोचैत रहैछ। सावीक प्रति ओकर प्रेम कोनो छपित नहि छै। ताहिमे महामारो कंम्पमे जेना ओ कयलक तकर प्रशंसा ओकरा मुँहेँ फुटि-फुटि कऽ बहराइत रहैछ। चुनावमे जे ओकर चुस्ती-फुर्ती देखल गेलैक ताहिसँ, ओ सभामे जेना चमत्कारिणी सिद्ध भेल से सभ ओकर चित्त-चरित्रकेँ

औरो रंगीन बना गेलैक। परंच तुलसी से सब सोचैत कने कखनो अस्थिर भऽ उठैछ जखन ओकरा सामने सरल, स्नेहबोझिल ओ मूक तपस्विनी• बनलि एक असहाय बालिका पर ध्यान चलि जाइछ।

ओ बालिका अछि असहाय, निर्भर मधुरी। जे एहि सभ समस्याकेँ लऽ कऽ किछु सोचैत तँ नहि अछि, परंच एकटा आस्था, सेवाक एक आधार जे ओकरा किछु दिनसँ भेटल छैक तकरे पर ध्यान केन्द्रित कयने दिन-राति अपन काज लऽ कऽ व्यस्त रहैछ।

जखन तुलसी घर पर अबै छथि ओकर व्यस्तता और बढ़ि जाइछ। कखन की चाहिऐन, कखन खयता-पिउता, कखन आराम करता, कखन कपड़ा पहिरि चलि देता, ताहिमे कोनो बित्तय नहि होइन, छन नहि लगैन—ताहि पर समस्त ध्यान लागल रहै छैक।

सत्ताइस

ई सब गप चलिते रहैत छल। एक दिन रातिमे छीतन तमाँकू चुनबैत बैसल रहथि। पत्नी रधिया लगमे बैसलि नहू-नहू गप्प कऽ रहल छथि। गप्प वियाहेक चलि रहल छैक।

—'साबो आबि रहल अछि। माय-बाबू सेहो एही शुद्धमे ओकरा बिआहि देबा लेल उताहुल छथि, हमरा लोकनि तँ वर्ष-वर्षसँ एकर प्रतीक्षेमे छी। पंच लोकनिक बाधा जँ सरियाएल तँ एकटा बाधा लगले रहल। छौंड़ी मधुरी एही बीच कतऽसँ आबि टपकलि, तुलसी बौआ बड़ दया-माया वाला लोक छथि। किछु बजै नइ छथि।'

—'हँ, से हमरो बुझवामे नहि अबैछ। बौआ किछु बजै नहि छथि।'

मधुरी पानि भरि कऽ हुनका कोठलीमे लोटा राखय अबैत छलि, दुहूक गप्प सुनि कऽ कने थखा गेलि। अपन नाम जखन कानमे षड़लैक तखन कने साकांक्ष भेलि अकानैत रहलि। ओना एकरा कखनो ककरो गप-एकांती सुनवामे कोनो रस नहि छल। आइ अपन नाम सुनि कान जेना ठाढ़ भऽ अयलैक। साफ सुनवामे अबैत छल।

रधिया—एकरा कतहु बिआहि देल जैतैक, तखन कोनो तरहक बाधा नहि छल।

छीतन—हम तँ कत्ते चाहल जे पित्ती-पितियाइनि एकरा लऽ जइतै, तँ अपन विचारसँ जे किछु करितै।

रधिया—अहाँ तँ ओम्हर गेलो छलहुँ, की गप्प भेल ?

छीतन—ओकरा सभक कहब छलै जे जखन हमरा छोड़िकऽ मात्रिक मामक ओतय चलि गेलि, हमरा सबकेँ अजस दिआ देलक, तखन हमरा ओकरासँ की मतलब रहल ? अहीं कहू तँ।

रधिया—अहाँ बुझा दितिऐ जे मात्रिकमे जखन केओ नहि रहलै तखन तँ भार अहीं सबपर ने अछि।

छीतन—हम कतेक ने बुझौलिऐ जे नेनमति भेलै, मुदा आब तँ अहीं सब छिऐ।

रधिया—ताहि पर कनेको मन नहि डोललै ?

छीतन—मन की डोलतै, तेहन कथा ने बाजल जे हम चोट्टहि धुरि ऐलहुँ।

रधिया—'से की ?'

छीतन—'कहलक जे जखन मुखियाजी अपना घरमे राखिए लेलथिन, दस गोटे संग-समाजक लोक कहऽ लागल जे की करैत जयत्रह, अपन जातिए-भाइ अंग लगा नेने छथिन तँ वैह निर्वाह करथिन। एते दिन ओकरा राखि लेलनि, आब कलकतिया छौंड़ो भेटि गेलनि तँ निकालि रहल छथिन। से हैत तँ हमरा सब जाति-पंचायतमे जायब। अपने भने नेता कहबथु, परंच जातिभाइसँ ऊपर नहि छथि।

रधिया—की ई बात तुलसी बौआकेँ कानोमे पड़लनि ?

छीतन—पड़ले हयतनि, गाम-गमइ घुमैत रहैछथि। सबसँ गप होइत रहैछनि। कोना ने बुझल होयतनि !

रधिया—तेँ तँ बौआ गुमसुम रहैछथि, बेसी बजै-भुकै नहि छथि। हँसिते गप करैत छला, से आब जेना घरसँ उखी-बिखी लागल रहैन।

तकर बाद नहू-नहू गप होइत रहल से मधुरी नहि सुनि सकलि। जतबे सुनलक ततबेसँ ओकर मन सुन्न भऽ गेलैक। ओ ओछौन पर पड़लि कते काल की सोचि रहलि, तकर पता अन्तर्यामिएकेँ हेतैन।

... ...

दोसर दिन देखल गेलै जे मधुरी ओछौन पर बेहोस पड़लि अछि, मुहसँ गाउज-नेर चलि रहल छै। आँखि बंद, किछु बाजऽ चाहैछ, कंठ नहि खुजैछ; किछु इसारा करऽ चाहैछ, हाथ नहि उठैछ। श्वासटा जोरसँ चलि रहल छै।

रधिया दौड़लि, छीतन दौड़ला। तुलसीकेँ खबरि भेलनि, ओहो हँफिते अयला। क्यो कहैछ, जहर खा लेलक। केओ बजैछ, ककरो करनामा एकरापर चलल छै। क्यौ-किछु, क्यौ किछु अनुमान-तर्क लगबैछ। कते टीका-टिप्पनी करैछ।

तुलसी लगले अस्पताल उठा कऽ लऽ गेलथिन, होस नहि आबि रहल छैक। इंजेक्शन-पड़लै, वस्ति करौल गेलै। कने कंठ खुजलै, परंच बात किछु स्पष्ट नहि होइछ। डाक्टर कहलथिन—हालतिमे सुधार अछि, चौबीस घंटा और हिनका देखऽ पड़त, तखन किछु कहल जा सकैछ। कोनो जहरेक असरि थिक।

....

ओकर तेसरे दिन कलकत्तासँ रधियाक माय-बाप ओ साबी पहुँचलि छथि। अपर्णा देवी सेहो संगहि आयलि छथि। घर पर भेंट होइते रधियाकेँ संग नेने सब अस्पताल पहुचल छथि। मधुरी होसमे आबि गेलि अछि। डाक्टर मना कयने छथिन जे बेसी खोदबीध नहि रोगीसँ कयल जाय, नहि तँ मानसिकतापर असरि पड़ि सकैछ।

सब चुप-चुप रहि गेल। अपर्णा ओ साबी दूहू गोटे रोगिणीक माथ हँसोथि रहलि छथि, ओ हिनका दिस टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि।

अट्ठाइस

रुग्णाकेँ अस्पतालसँ फिरना दिन-तिनिएक भेलैक अछि। अपर्णा ओ सावित्रीक संग ओ बैसलि अछि। सावित्री पुछि रहल छै—'दाइ! की भेलह जे एना जहरकनैल, की-कीदन पीसि कऽ पीबि गेलह? एना सबकेँ किएक घवरा देलहक?'

'हमर माइओ एहिना मुइलि छलि, ओनाही हमहु जहर-जड़ी संगे रखैत एलिऐ। ककरो हितमे बाधा बनिऐक ताहिसँ बरु हम उठिए जाइ सैह नीक।'

'नहि हे दाइ! जे आनक हितमे बाधा नहि पहुँचाबऽ चाहैछ, ओकर हितमे सेहो बाधा नहि पहुँचैछ, किन्नहु कोनहु बाधा नहि अबैछ।'

अपर्णा सेहो एहि कथाकेँ समर्थन कयलनि।

... ...

ओकर दोसरे दिन प० मोहन मिश्रकेँ बजा कऽ सावित्री सुपारी-पानक संग किछु द्रव्य-दक्षिणा दैत कहलकनि – 'मिसरजी, एकटा विआहक दिन ताकि दिऔक, जाहि दिन मुखियाजी सिन्दुरदान करथि, घर बसबथि।'

'घर तँ हिनक बसलै छन्हि'—साबीक मुह दिस कने जिज्ञासु रूपेँ, मिसरजी मुसकियाइत तकलनि।

'कनेञा हमर जोगाओल अछि। कते दिनसँ घरमे कनिआँ-पुतरा जकाँ ओकरा सजा-धजा कऽ रखने छिऐन।'

'से की कहल?'

'ई मधुरी दाइ, मुखिया भाइक घर-द्वार बसयवाले' गृहिणीक सब गुनसँ भरलि छथि। रूपोमे दीपक टेम जकाँ दपदप। सवतरहेँ जुगुतगरि छथि।'

ओ बकर-वकर मुह तकिते रहला । फेर सावित्री कहैत गेलि—'अहाँ पुरहित, हम बिधिकरी, कन्यादान करथिन अपर्णा देवी, जे एहि सुन्दरि सुधड़ि कन्याकेँ कैम्पमे राखि जिऔलनि । हमर बहिनि परिछनि करती । आइ जँ नीक मुहूर्त होइ तँ 'शुभस्य शीघ्रम् ।'

मोहन मिसर आश्चर्यसँ अवाक् रहि गेला । कतहु लगेमे ठाढ़ भेल गप अकानैत तुलसी धम्मसँ बैसि गेला । छीतन आ' रधिया की बाजथि, से हुनका मुह नहि खुजनि ।

अपर्णा मधुरीकुमारीकेँ पकड़ि आनलि, मोहन मिसरकेँ प्रणाम कऽ कऽ रधिया ओ छीतनक पैर पर माथ रखवाक इसारा कयलनि । ओहो कोनो कठपुतरी जकाँ तहिना करैत गेलि ।

चट दऽ साबी दू-गोट माला लऽ कऽ एकटा तुलसीकेँ आ' दोसर मधुरीकेँ पहिरा देल ।

मधुरी साबीक दूहू पैर पर माथ राखि हिचुकि रहलिअछि ।

मोहन मिसर गद्‌गद स्वरेँ बाजि उठला—आब उगनाक दयाद-बादमे बिद्यापति-शिवसिंहे नहि, विद्या ओ लखिमा सेहो अवतरित भऽ रहलि छथि ।

....

विवाहदानक बाद सावित्रीक संगहि अपर्णा कहलनि जे—'हम सब कलकत्ता जा रहलि छी । 'शिशुभारती' संस्थाकेँ हम दूहू गोटे जीवन अर्पित कयने छी ।'

सावित्री अपन बहिनिसँ कहलनि—'बहिनि हे ! मन राखिहऽ, कहने जाइत छिअह । मुखियाजीसँ सेहो अनुरोध करैत छिऐन, मधुरी भौजी सेहो सुनथु—हमर हार्दिक अनुरोध जे जखन भगवान हिनक कोखि भरथिन तखन ननकिरबा-ननकिरबीकेँ शिक्षा-दीक्षा लेल ओतहि भर्ती करबिहथि—हमर ई जीवनक इच्छा पुरबिहथि ।'



सुमन-साहित्य : मैथिली-खण्ड

मुक्तक काव्य—

अर्चना । प्रतिपदा । साओन-भादव । पयस्विनी । अङ्कावली ।

दोहा-काव्य—

कविनवतिका । अन्योक्तिका । मुक्तावली । प्रकृतिशतक । प्रकीर्ण-शतक । शृङ्गारहार । नीतिका । शृंगार तिलक ।

धर्म-संस्कृत-राष्ट्र चिन्तन—

ऋचालोक । पुत्रोऽहं पृथिव्याः । जतरा चारुधाम । बुद्ध-बोध । भारत-वन्दना । चण्डीचर्या । अन्तर्नाद ।

स्तुति-स्तवक—

शक्ति-स्तवक । शिवमहिमा । हरिस्मरणिका । आनन्दलहरी । सौन्दर्यलहरी । हनुमानबाहुक ।

प्रबन्ध-काव्य : मौलिक एवं मैथिली-रूपान्तर—

दत्तवती । कृष्णावतरण । उत्तरा । कच-देवयानी ।
कुमारसम्भव । किरातार्जुनीय । मेघदूत । ऋतुशृंगार ।

नीति-कथा—

हितोपदेशिका । कथायूथिका ।

गीति-नाट्य—

रवींद्रनाटकावली-विसर्जन-चित्रांगदा-चिरकुमारसभा । अनुगीतांजलि

कथा-उपन्यास : गद्य-बन्ध—

उगनाक दयादबाद (उपन्यास) । कथा-सुमन । नव निबन्ध ।
मैथिलीसाहित्यपर संस्कृतक प्रभाव । मै०सा० भूमिका : विविधा ।

प्रकीर्ण—

अलंकार-मालिका । गाम-धरती । ललना लहरी । सनेस (बालोपयोगी) । बड़की दाइ (शरत्साहित्य) । मन पड़ैत अछि । गीतिका ।

अनुवादित-सम्पादित—

पुरुषपरीक्षा । कीर्तिलता । निबन्धकाव्य : चन्दारामायण, लालदास-रामायण । गोविन्दगीतावली । आनन्दविजय । पारिजातहरण । कृष्णजन्म । कथामुखी (कथा साहित्य) एवं टीका-टिप्पणी आदि ।